



प्रज्ञा

वार्षिक पत्रिका

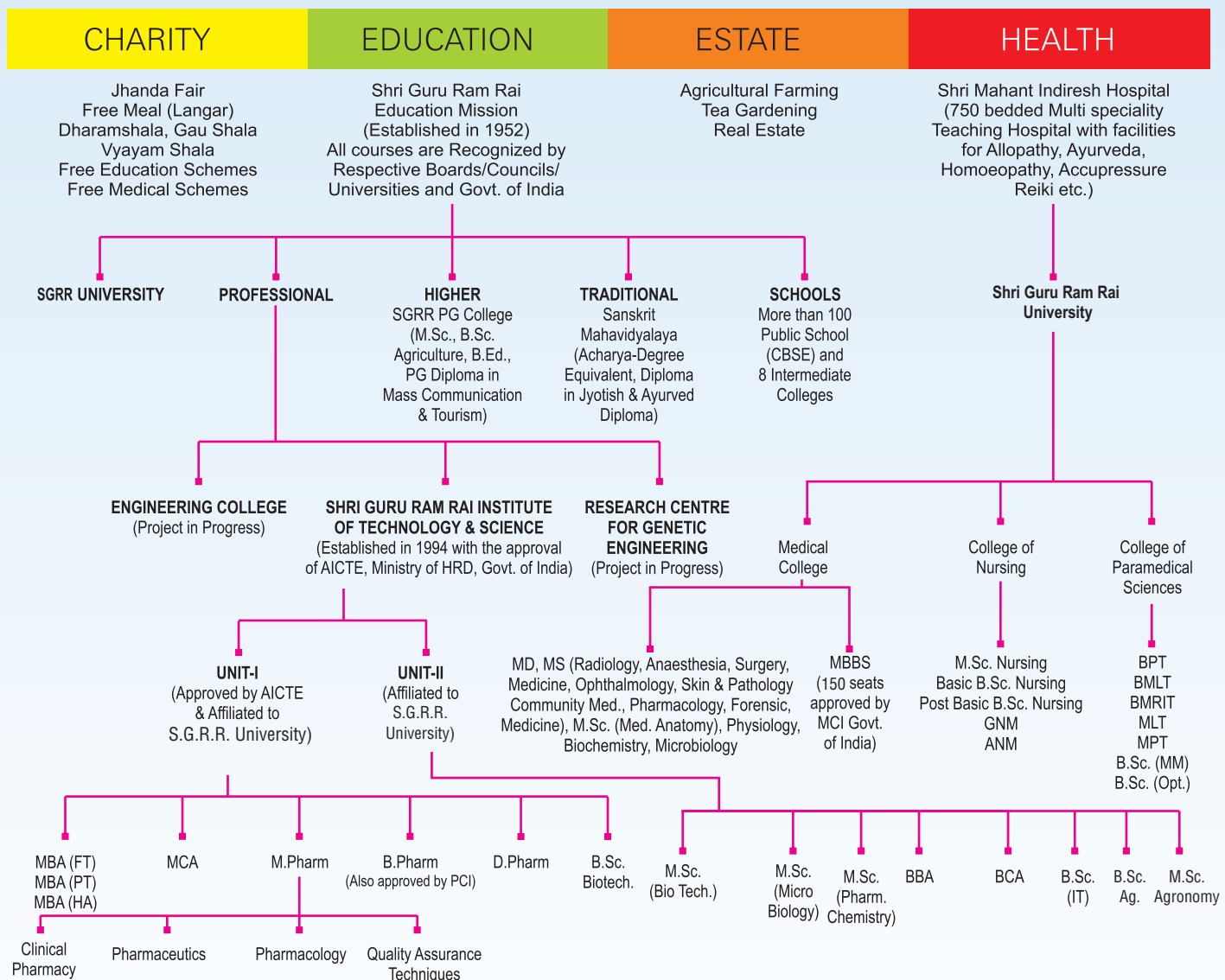
(2015-16 & 2016-17)

श्री गुरु राम राय (पी.जी.) कॉलेज
देहरादून (उत्तराखण्ड)

Darbar Shri Guru Ram Rai Ji Maharaj

341 years old Religious/Philanthropic Organization

ACHIEVEMENTS OF DARBAR SAHIB



प्रज्ञा

वार्षिक पत्रिका

2015-16 एवं 2016-17



सम्पादक
डॉ० सुमंगल सिंह
विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग

श्री गुरु राम राय (पी.जी.) कॉलेज
देहरादून (उत्तराखण्ड)

संरक्षक

प्रो० विनय आनन्द बौड़ाई
प्राचार्य

सम्पादक

डॉ० सुमंगल सिंह
हिन्दी विभाग

सह-सम्पादिका

डॉ० अनुपम सैनी
अंग्रेजी विभाग

सम्पादक-मंडल

डॉ० हर्षवर्धन पन्त
डॉ० संजय कुमार पडालिया
डॉ० मनोज कुमार पुरोहित
डॉ० आनन्द सिंह राणा
डॉ० आशीष कुलश्रेष्ठ

छात्र-सम्पादक

शुभम चमोला
प्रियंका तड़ियाल

आवरण एवं पृष्ठ संयोजन

डॉ० हर्षवर्धन पन्त
डॉ० आनन्द सिंह राणा

प्रकाशक

प्राचार्य

श्री गुरु राम राय (पी.जी.) कालेज,
पथरीबाग, देहरादून (उत्तराखण्ड)

मुद्रक

सरस्वती प्रेस,
2 ग्रीन पार्क, देहरादून
दूरभाष : 9358865676

महाविद्यालय के संरक्षक



पूज्य श्री महन्त देवेन्द्रदास जी महाराज
सज्जदा नशीन

पीठासीन श्री महन्त,
दरबार श्री गुरु राम राय, देहरादून

श्री महन्त देवेन्द्र दास

सज्जदा नशीं

सचिव

श्री गुरु राम राय (पी.जी.) कॉलेज



दूरभाष: 0135-2624881



श्री गुरु राम राय की कर्मभूमि एवं आचार्य द्रोण की तपोभूमि देहरादून का उच्चतम शिक्षण संस्थान श्री गुरु राम राय स्नातकोत्तर महाविद्यालय जिसको गत वर्ष उच्च शिक्षण संस्थानों को ग्रेड देने वाली भारत सरकार की संस्था 'नैक' द्वारा ग्रेड 'ए' प्रदान किया गया तथा यूजीसी द्वारा द्वितीय चरण में भी कॉलेज ऑफ पोटेन्शियल फॉर एक्सीलेंस (CPE) स्तर (स्टेट्स) प्रदान किया गया। अपने विशिष्ट अध्ययन-अध्यापन, अनुशासन-प्रशासन के लिए संकल्पबद्ध है। मेरी आकांक्षा है कि हमारे विद्यार्थी अपनी रचनात्मकता से महाविद्यालय को नई ऊर्जा प्रदान करेंगे।

गुरु आश्रित ज्ञान ही छात्र को नम्र और समाज सापेक्ष बनाता है, महाविद्यालय किसी भवन का नहीं अपितु भवन में व्यापक प्रेम-सौहार्द और सामंजस्य को कहते हैं, जो विद्यार्थी और शिक्षक से होता है, प्रेम और सामंजस्य के इस रूप का नाम ही महाविद्यालय है।

मुझे प्रसन्नता है कि हमारे विद्यार्थी पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त शिक्षणेत्तर क्रिया-कलापों में भी भागीदारी निभा रहे हैं, उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को निखारने के लिए महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका सफल रही है। मुझे विश्वास है 'प्रज्ञा' का यह अंक छात्र-छात्राओं को रचनात्मकता की ओर प्रेरित करेगा।

अंत में, मैं सम्पादक मण्डल एवं महाविद्यालय परिवार को 'प्रज्ञा' के इस अंक के लिए शुभकामनाएं देता हूँ।

देवेन्द्र दास

(श्री महन्त देवेन्द्र दास)

गबर सिंह राणा

राष्ट्रीय पुरस्कृत सेवा निवृत्त प्रधानाचार्य/
अधिकृत हस्ताक्षरी
एसजीआरआर (पी.जी.) कॉलेज
श्री गुरु राम राय एजुकेशन मिशन
देहरादून




मुझे हर्ष है श्री गुरु राम राय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अपनी वार्षिक पत्रिका का संयुक्तांक प्रकाशित कर रहा है, साथ ही मुझे इस बात की भी प्रसन्नता है कि महाविद्यालय को गत वर्ष 'नैक' द्वारा ग्रेड 'ए' प्रदान किया।

यह तथ्य निर्विवाद है कि साहित्य चाहे जिस भी भाषा देश एवं समाज में लिखा जा रहा है, उस देश एवं समाज की पहचान होती है, मानो साहित्य वह नब्ज है जिससे शरीर रूपी समाज का ताप मापा जा सकता है, रचनाओं द्वारा जहां मानसिक तृप्ति होती है वहीं मनन चिन्तन को भी एक दिशा मिलती है, मैं चाहता हूँ हमारा समाज मनन एवं चिन्तनशील बनकर प्रदेश एवं देश को आगे बढ़ाने में अपनी भूमिका का निर्वाह करे।

देश की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित युवा पीढ़ी का लेखक यही अभिव्यक्त करता है कि नई पीढ़ी भारतीय संस्कृति सभ्यता व साहित्य के प्रति अभिरुचि रखती है। मुझे आशा व विश्वास है कि पत्रिका 'प्रज्ञा' अपने नाम के अनुरूप विद्यार्थियों को एक दिशा देने का कार्य करेगी। महाविद्यालय की उत्तरोत्तर उन्नति में सहयोग प्रदान करने के लिए मैं संस्था के प्राचार्य, प्राध्यापकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों व छात्र-छात्राओं को हार्दिक बधाई देता हूँ।

अंत में पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सम्पादक मण्डल एवं समस्त महाविद्यालय परिवार के प्रति शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।


(गबर सिंह राणा)

त्रिवेन्द्र सिंह रावत



उत्तराखण्ड सचिवालय
देहरादून-248001

फोन : (0135) 2755177
: (0135) 2650433 (का.)
फैक्स : (0136) 2712827



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि श्री गुरु राम राय (पी.जी.) कॉलेज, देहरादून द्वारा पत्रिका 'प्रज्ञा' के संयुक्तांक का प्रकाशन किया जा रहा है।

मुझे आशा है कि पत्रिका में प्रकाशित लेख पाठकों के लिए उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक सिद्ध होंगे।

मेरी ओर से 'प्रज्ञा' पत्रिका के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई एवं शुभकानाएं।

(त्रिवेन्द्र सिंह रावत)

धन सिंह रावत

राज्यमंत्री (स्वतन्त्र प्रभार)
उच्च शिक्षा, सहकारिता, प्रोटोकॉल,
दुग्ध विकास



विधान सभा भवन

देहरादून

कक्ष सं: 115

फोन : (0135) 2666410

फैक्स : (0136) 2666411 (का.)



शुभकामना संदेश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि श्री गुरु राम राय (पी.जी.) कॉलेज देहरादून अपनी वार्षिक पत्रिका 'प्रज्ञा' का संयुक्तांक प्रकाशन करने जा रहा है, इस हेतु समस्त सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई।

इससे जहाँ एक ओर नवाचर सृजनशीलता को प्रोत्साहन मिलता है वहीं दूसरी ओर शिक्षण संस्था द्वारा सृजित और संकलित ज्ञान और सूचनाओं को महाविद्यालय तथा उसकी सीमाओं के बाहर भी विस्तारित करने में मदद मिलती है, साथ ही पत्रिका के माध्यम से विद्यार्थियों को भी अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन का सुअवसर प्राप्त होगा।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका 'प्रज्ञा' में ऐसी महत्वपूर्ण एवं रोचक पाठ्य सामग्री का प्रकाशन किया जायेगा जिससे छात्रवर्ग के जीवन दर्शन, कार्य, संस्कृति और अध्ययन में रूचि होगी। मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(डॉ धन सिंह रावत)

डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक'
DR. RAMESH POKHRIYAL 'NISHANK'

संसद सदस्य (लोक सभा)

Member of Parliament (Lok Sabha)

सभापति, सरकारी आश्वासनों संबंधी समिति

Chairman, Committee of Government Assurances



पूर्व मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड, हिमालय
Former Chief Minister, Uttarakhand, Himalaya

कार्यालय : 133, संसदीय सौध, नई दिल्ली-110 001

Office : 133, Parliament House Annexe,
New Delhi - 110 001

Phone : 011-23034278, Telefax: 011-23019945



संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि श्री गुरु राम राय (पी.जी.) कॉलेज, देहरादून द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका 'प्रज्ञा' के संयुक्तांक 2015-16 एवं 2016-17 का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालयी पत्रिकाएं छात्र-छात्राओं की प्रतिभा को मंच प्रदान करने का काम करती हैं साथ ही उनकी सृजनात्मक प्रतिभा को नए आयाम भी मिलते हैं। मैं विश्वास करता हूँ कि महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं को जीवन में आगे बढ़ने हेतु प्रेरित करने की दिशा में सहायक सिद्ध होगी।

मैं महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'प्रज्ञा' के सफल प्राकशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(डॉ रमेश पोखरियाल 'निशंक')

विनोद चमोली
विधायक
धर्मपुर विधान सभा क्षेत्र



निवास : 130/6, ओल्ड नेहरू
कॉलोनी, देहरादून
दूरभाष (का.) : 0135-2655620
दूरभाष (आ.) : 0135-2651060
फैक्स : 0135-2651060
मोबाइल : 9410148510



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी श्री गुरु राम राय (पी.जी.) कॉलेज देहरादून द्वारा वार्षिक पत्रिका 'प्रज्ञा' का संयुक्तांक प्रकाशित किया जा रहा है। इस पत्रिका के माध्यम से छात्र-छात्राओं को लेखों द्वारा अपनी सृजनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का अवसर प्राप्त होगा।

महाविद्यालयों एवं अकादमिक संस्थाओं के लिए यह वांछनीय ही नहीं अपितु आवश्यक भी है कि छात्र-छात्राओं की लेखन क्षमता और उनके सम्पूर्ण आकादमिक विकास को प्रोत्साहन देने के लिए इस प्रकार की वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन हो, इस दृष्टि से महाविद्यालय का यह सराहनीय प्रयास है।

मैं इस वार्षिक पत्रिका के प्रकाशन और आगामी वर्षों में इसके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए शुभकामनाएं संप्रेषित करता हूँ।

(विनोद चमोली)

महापौर/विधायक

From the Principal's Desk



The present system of higher education dates back to Mountstuart Elphinstone's Minutes of 1823, which stressed on the need for establishing schools for teaching English and the European natural sciences. Later, Lord Macaulay, in his Minutes of 1835, advocated "efforts to make natives of the country thoroughly good English scholars". Sir Charles Wood's Dispatch of 1854, known as the 'Magna Carta of English Education in India', recommended creating a proper articulated scheme of education from the primary school to the University. It sought to encourage indigenous education and planned the formulation of a coherent policy of education. Subsequently, the Universities of Calcutta, Bombay (now Mumbai) and Madras were set up in 1857, followed by the University of Allahabad in 1887.

Soon after Independence, the University Education Commission was set up in 1948 under the Chairmanship of Dr. S.

Radhakrishnan "to report on Indian university education and to suggest improvements and extensions that might be desirable to suit the present and future needs and aspirations of the country". The Commission recommended that the University Grants Committee would be reconstituted on the general model of the University Grants Commission of the United Kingdom with a full-time Chairman and other members would be appointed from amongst reputed educationists.

In 1952, the Union Government decided that all cases pertaining to the allocation of grants-in-aid from public funds to the Central and other Universities, Institutions of higher learning might be referred to the University Grants Commission. Consequently, the University Grants Commission (UGC) was formally inaugurated on 28 December 1953 by late Shri Maulana Abul Kalam Azad, the then Minister of Education, Natural Resources and Scientific Research.

We are fortunate enough that we are teaching, serving and getting education in one of the few best colleges of India which have been awarded unique status by the Central Government's regulating body of higher education i.e. the UGC. Our college has been awarded special status of "College with the Potential for Excellence" by the University Grants Commission in the second cycle of CPE for the academic sessions 2017-22. During the interface Committee meeting, the UGC declared seven departments as 'Star Departments' of our college namely: Chemistry, Mathematics, Physics, Botany, Geology, English and Economics. Only 34 colleges of India were selected for this coveted status by UGC on 20th May, 2016. Our college is the only one in the state of Uttarakhand which has this prestigious status.

To achieve this special status in the country, our Honorable Secretary His Holiness, Shri Mahant Devendera Dass Ji Maharaj and the managing committee have always given their valuable inputs right from the beginning. The principal and the members of IQAC have been regularly advised for the enrichment of the academics as well as quality academic infrastructure development for teaching in the college. During the first cycle of Accrediation in 2010, the NAAC peer team recommended eleven improvements in the college. The Honorable Secretary took it seriously and asked the college authorities to make improvement with immediate effect.

SGRR(PG) College obtained 'A' grade and 3.04 CGPA after NAAC inspection held in March 2016. The Internal Quality Assurance Cell (IQAC) organizes quarterly meetings regarding continuous sustainable development of the college and adopts holistic approach for students' personality development. In the meetings of IQAC, all members give their suggestions for the betterment of the institution and the goals are set to achieve within the

duration of three months. The IQAC works in a participatory manner where every member has an equal say. The composition of IQAC has various stakeholders as per NAAC norms but I personally thought that the Students' Union Representatives must be a part of the IQAC. Thus, our college IQAC has Students Union President and Secretary as a part of the IQAC. (This concept of inclusion of Student Union was suggested by Dr. S. Farooq, a renowned industrialist and philanthropist of Uttarakhand). The contribution of these office bearers of students' union is remarkable. Once they know the development plan, they put their positive support for the development of the college. The IQAC of our college submitted its AQAR for the year 2015-16 online on 6/02/2017.

The faculty members of the college put their best efforts not only for the academics i.e. regular class teaching, but also for various other co-curricular activities which are regularly organized by them. A systematic record of feedback is used for further improvement. Many students of our college from different departments participate in other co-curricular activities in other Universities/Institutions of the country. The peer team report specifically noted that our college is co-educational institution run by trust 'dedicated to the social upliftment of the society'. The report explains that the college has dedicated faculty members with efficient governance by the college administration. The college runs enriching courses such as English Speaking Certificate Course run by the Department of English and Tissue Culture Certificate Course run by the Department of Biotechnology. The department of Master of Social Work responds to social needs and requirements. Some departments of our college have Industry college collaborations and in future more linkages/collaborations will take place. The college has also UGC funded Women Studies Center (WSC). The Director of the WSC and her associates are working for the

translation of Garhwali and Kumauni literature into English for the wider publicity of the regional culture and literature.

On 14th March, 2016, when the NAAC team started evaluation of the college, the total number of students in the college was 3968. The peer team report on Institutional Accreditation submitted to the Principal was an excellent and historical achievement of the college. The peer team explicitly stated that the college has students' centric academic ambience, e-learning resources in teaching and encouragement of students for practical field experiences. Higher pass percentage and good number of University Merit Positions from the college. Six departments of the college are recognized as Research Centers of the HNB Garhwal University. In the Department of Chemistry, Mathematics, Botany, Economics, English and History, a good number of scholars

have been awarded PhD degrees. The students' tours are also organized to give exposure to the students from various departments of the college such as 'Jaipur Literary Festival' was attended by good number of students of our college. The Biotechnology department has very good quality tissue culture lab where students of various institutions of the country are coming for training in tissue culture. Cultural activities are undertaken to hone the hidden talents and managerial skills of students. In its report, the peer team reiterates that the college has been trying its level best to have emphasis on holistic development of students and working hard to create good citizens for the nation.

Prof. V. A. Baurai

सम्पादकीय



श्री गुरु राम राय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, देहरादून द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'प्रज्ञा' विगत वर्षों से महाविद्यालय की सांस्कृतिक, शैक्षणिक, सामाजिक गतिविधियों की प्रतिबिम्ब रही है, यह छात्र-छात्राओं के मनोविचारों, अभिरूचियों एवं आकांक्षाओं को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम है।

श्री गुरु राम राय महाविद्यालय, गुरु राम राय मिशन का ही नहीं अपितु सम्पूर्ण उत्तराखण्ड के लिए गौरव का प्रतीक है। जिस प्रकार महाविद्यालय ने नित नये स्वरूप को प्राप्त किया है उसी प्रकार 'प्रज्ञा' भी प्रतिवर्ष नित नई लहरों के साथ नये विचारों की गंगा प्रस्फुटित करती रही है।

यह हर्ष का विषय है कि प्रज्ञा लेखन हेतु छात्र-छात्राओं की प्रतिभागिता में वृद्धि हुई है, साथ ही लेखों में अधिक सृजनात्मक और मौलिकता देखने को मिली है। छात्र-छात्राओं द्वारा सम-सामयिक विषय पर लिखे गये लेख उनकी महाविद्यालय समाज एवं राष्ट्र के प्रति जागरूकता को प्रदर्शित करती है। कन्या भ्रूण हत्या, पर्यावरण, गाँवों से पलायन, राजनीतिक भ्रष्टाचार, नशाखोरी इत्यादि विषयों पर लिखे गये लेख इस बात के परिचायक हैं।

विभिन्न विषयों पर लिखे गये लेख इस बात को भी इंगित करते हैं कि छात्र-छात्राओं को मात्र अपनी अभिव्यक्तियों

को पहचानने एवं उन्हें व्यक्त करने हेतु प्रेरणा एवं मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है प्राध्यापकों द्वारा दिया गया सकारात्मक स्पर्श उन्हें इस प्रकार की भावाभिव्यक्ति के लिए प्रोत्साहित करता है। महाविद्यालय में शिक्षकों का विशेष सहयोग सराहनीय है जिसमें भाँति-भाँति के विषयों पर छात्र-छात्राओं ने अपने लेखों से प्रज्ञा को समृद्ध किया है।

पठन-पाठन के अतिरिक्त विद्यार्थियों में इस प्रकार की अभिरूचियों का विकास तथा सांस्कृतिक एवं कलात्मक गतिविधियों की सहभागिता को प्रेरित करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है तभी शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य प्राप्त होगा शिक्षा का अर्थ एवं उद्देश्य पुस्तकीय ज्ञान तक ही सीमित नहीं होना चाहिए। महाविद्यालय का उद्देश्य छात्रों को मात्र नौकरी के लिए ही तैयार करना नहीं अपितु उन्हें जागरूक सक्षम नागरिक बनाने का भी है, जो अपने समाज, राज्य व राष्ट्र के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह कर सके।

'प्रज्ञा' के इस अंक में छात्र/छात्राओं ने हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही विषयों में अपनी अभिव्यक्ति दी है इन लेखों एवं कविताओं में विशेष प्रगति दृष्टिगोचर होती है, अनेक प्रकार के अनुभवों से प्रेरित लेख और कविताएं पाठकों को ज्ञानवर्धक एवं मनोहारी प्रतीत होगी ऐसी मेरी आशा है। रचनात्मक कृतियों के अतिरिक्त पत्रिका में महाविद्यालय की वर्षभर की गतिविधियों से सम्बन्धित विवरण भी

समाहित है, जो छात्र-छात्राओं की उपलब्धियों का ही लेखा जोखा है।

आज हमारे सामने अनेक चुनौतियां हैं। परमाणु सम्पन्न राष्ट्रों की श्रेणी में खड़े होने के बावजूद भी आतंकवाद साम्प्रदायिकता, बेरोजगारी, नारी-सुरक्षा, भ्रष्टाचार आदि ने जीवन के आगे कई प्रश्नचिह्न खड़े कर दिये हैं, हमारे लिए यह सुखद संयोग है कि हमारे नव-लेखकों ने अपनी रचनाओं में बड़ी निष्ठा और लगन से इन समस्याओं को उजागर किया है।

‘प्रज्ञा’ प्रकाशन का प्रयोजन अधिकाधिक नव लेखकों को स्थापित करना है। फिर भी कुछ रचनाएं प्रकाशित होने को रह जाती हैं क्योंकि चादर के बराबर ही पैर समेटने की हमारी विवशता हैं, पत्रिका के कलेवर को निखारने और उसकी आत्मा की जीवत्ता को प्रदान करने के भाव से नवोदित लेखकों की रचनाओं में कतिपय परिवर्तन भी किये गये हैं।

‘प्रज्ञा’ के प्रकाशन में प्राचार्य महोदय ने विभिन्न शासकीय दायित्वों का निर्वाह करते हुए हमें अनुग्रहित किया है हम उनके आभारी हैं हम समस्त विभागाध्यक्षों के भी आभारी हैं जिन्होंने गुरु महिमा का निर्वाह करते हुए समय-समय पर विभागीय-आख्या उपलब्ध कराकर सहयोग प्रदान किया।

‘प्रज्ञा’ के प्रकाशन के लिए मैं विशेष रूप से पूज्य महाराज जी श्री देवेन्द्र दास जी का आभारी हूँ जिनके कुशल निर्देशन

में श्री गुरु राम राय एजुकेशन मिशन नित नये प्रगति के आयाम खड़ा कर रहा है। परम पूज्य महाराज के आशीर्वाद स्वरूप ही पत्रिका का यह संयुक्तांक आपके सम्मुख है।

अन्त में मैं अपने सम्पादक मण्डल के सदस्यों के सफल मार्गदर्शन का आभारी हूँ जिन्होंने पत्रिका के सम्पादन में अपना बहुमूल्य समय दिया, उनके प्रति आभार व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द भी नहीं हैं।

यद्यपि पत्रिका के प्रकाशन, सम्पादन तथा मुद्रण में पर्याप्त सावधानी बरती गई है फिर भी अगर कुछ त्रुटियां रह गई होंगी तो सुधी पाठकों से अपेक्षा करता हूँ कि वे इन त्रुटियों की ओर ध्यान आकर्षित करायें ताकि अगले अंक को और बेहतर रूप प्रदान कर सकें। अन्त में आशा और विश्वास की इन पंक्तियों के साथ.....

*सघन वन और अंधेरी मूक नियंत्रण छलना है
अरे अभी विश्राम कहाँ बहुत दूर तक चलना है।।*

डॉ० सुमंगल सिंह
सम्पादक

कोई धन में बड़ा होता है,
कोई पद में और कोई आयु में।
लेकिन हकीकत में वही बड़ा माना
जाता है जो ज्ञान में बड़ा है।



राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद
प्रज्ञा विद्यया
NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL
The Assessment Institution of the University Grants Commission

Certificate of Accreditation

*The Executive Committee of the
National Assessment and Accreditation Council
on the recommendation of the duly appointed
Peer Team is pleased to declare the
Shri Guru Ram Rai (P. G.) College
Pathri Bagh, Dehradun,
affiliated to Hemwati Nandan Bahuguna Garhwal University, Uttarakhand as
Accredited
with CGPA of 3.04 on four point scale
at A grade
valid up to March 28, 2021*

Date : March 29, 2016



DP Singh
Director

Visit of NAAC Team



Visit of NAAC Team



National Seminars & Workshops



National Seminars & Workshops



Cultural Activities



अनुक्रमणिका

1. SGRR (PG) College: Achieving One More Milestone...	Dr. Sanjay K Padalia	02	37. Women's Rights	Shikha Bhandari	27	74. दून मेरा शहर...	डॉ. अरुण जोशी	47
2. Grand Children....	Dr. Anupam Sanny	04	38. Population Growth	Neeraj Raturi	27	75. Diseases	Anil Kumar	48
3. Burans...	Kalpa Bhardwaj	05	39. Eco-Tourism for...	Dr. Raj Bahadur	28	76. Stop Child Labour	Shivani Kaushal	50
4. हरा पत्ता	Shaifali Singh	06	40. बिटिया का भाव	डॉ. हरीशचन्द्र जोशी	29	77. आज फिर पहाड़ दिखा	तनुज प्रसाद सिंह	51
5. विश्व शान्ति के मार्ग	डॉ. ज्योति पाण्डेय	06	41. Why India...	Dhiraj Kuniyal	29	78. बचपन याद आता है	अभिषेक गौड़	51
6. Field Medal & Abel...	आंचल पंवार	06	42. 25 Interesting Fact...	Shruti Dobhal	30	79. दास्ताएँ वक्त	नरेन्द्र सिंह राणा	51
7. ओढ़ के तिरंगा क्यों...	Dr. Sanjay Kumar	07	43. Nobel Laureates...	Shruti Dobhal	31	80. Dengue Fever...	Kunal Rawat	52
8. The Teacher	Himani Thakur	08	44. The Girl was...	Nikhil Godiyal	32	81. Earth has enough...	Jitender Singh	53
9. जीवन	Gauri Pal	09	45. Absolution	प्रेम शर्मा	33	82. Ache of Her Life	Megha Kothari	53
10. A Compact World...	डॉ. दीपाली सिंघल	09	46. भारतीय नारी तब और...	शशि प्रकाश	33	83. आंतक और वेदना	चाँदनी राठौर	54
11. जिंदगी	Dr. Arun Kumar	10	47. मैं समाज हूँ	Dr. Manisha Uniyal	34	84. Buddha's Teaching	Priyanka Sharma	55
12. मेरा पहाड़ मेरा गढ़वाल	दीपक कुमार	12	48. Science Writing...	कैलाश जोशी	35	85. Stress and Teenagers	Saba Rehman	56
13. An Overview of...	रचना	12	49. मातृ-भूमि के प्रति...	रचना	35	86. Women Empower...	Priyanka Chauhan	57
14. मानव-मन	Brijmohan P. Kanti	13	50. जिन्दगी की हलचल	रोहित कुमार	35	87. A Priceless...	Priyanka Tiwari	58
15. काफल: उत्तराखण्ड...	डॉ. हरीश चन्द्र जोशी	14	51. सफलता की राह	याचना पटेल	36	88. जिंदगी न मिलेगी...	याचना पटेल	58
16. Fact about Fish	डॉ. हर्षवर्धन पन्त	15	52. मरी नहीं जिन्दा...	रचना	36	89. ज्ञानपीठ पुरस्कार	अंजलि रतूड़ी	59
17. Climate Change...	Poonam Nautiyal	16	53. पैगाम	रिधिमा	36	90. Angel amongst us	Lovely	60
18. Dengue: A Dange...	Dr. Arun Joshi	16	54. क्या हो गया है इंसान...	Ayush Kumar	37	91. डेगू बुखार का प्रकोप	राजा अभिषेक	61
19. Biofertilizers	Suman Rangar	17	55. Should the students...	Barkha Paswan	37	92. Wetlands	Dr. Poonam Sharma	62
20. सोशल मीडिया...	Dr Manjusha Tyagi	18	56. Life of a science...	Prashant Verma	38	93. The Impact of...	Shubham Gharia	63
21. काश	एलिस ब्रेव	19	57. Terrorism	Shivangi Dabral	38	94. आधारित है बेटियो पर...	विशाखा पाचौल	64
22. संघर्ष	इरम प्रवीन	19	58. Fashion	आस्था सिंह	39	95. An Important...	Dr. Naveen Gaurav	65
23. Story of Exams	रीता उनियाल	19	59. बेटी का सफर	दिशा गोयल	39	96. सामुदायिक विकास...	मेजर प्रदीप सिंह	66
24. Teacher	Arushi Katiyar	20	60. सफलता	तनुज प्रताप	39	97. Do you know	Priyam Sharma	67
25. स्वामी विवेकानन्द...	Komal Rani	20	61. उम्मीद	Shreya Deorani	40	98. खुम्ब-एक परिचय	डॉ. दीपक सोम	68
26. The Last Message	लवली	20	62. Motivational and...	Mohini Rana	41	99. पदूषण का संहार करो	फरहीन प्रवीन	70
27. Are Women Really...	Afreen Ansari	21	63. Safety for girls	Mehjabeen	41	100. श्रीमान कहते हैं...	नरेन्द्र सिंह राणा	70
28. Tribute	Deeksha Raturi	21	64. True friends...	Prashant Dobriyal	42	101. फौज हिन्दुस्तान की	प्रियंका चौहान	71
29. अजन्मी अभिलाषा	Amandeep Kaur	22	65. Every Saint has a....	विशाखा पाचौल	43	102. गुरुवर	प्रवेश रावत	71
30. A Life	पुष्पा लिम्बु	22	66. आध्यात्मिक पहलियाँ	दिशा गोयल	43	103. अंकार	दीक्षा रतूड़ी	72
31. Global Warming	Ruby Panwar	22	67. क्या होती है नारी	निधि सैनी	44	104. जब पैसा बोलता...	Shubhangini Tomar	72
32. The Little Things...	Medha Joshi	23	68. बड़ी जरूरत है	मीता पैन्थूली	44	105. My True Friend	मेजर प्रदीप सिंह	73
33. Time for...	Mansi Thapliyal	24	69. कॉलेज के कुछ पल	निशिता चौहान	44	107. कैसा देश प्रेम	डॉ. अतुल कु. गुप्ता	73
34. समाज का एक...	Komal	24	70. हौसला	Aparajita	45	108. Reports		82
35. Touch	शुभम चमोला	25	71. Rio Olympics	Neelamber Thapa	46			
36. Pragmatic...	Ranjana Rawat	25	72. The Purpose of Life	दीक्षा रतूड़ी	47			
	Dr. M S Gusain	26						

S.G.R.R. (P.G.) College: Achieving One More Milestone in its Journey towards Excellence

A REPORT

S.G.R.R. (P.G.) College is one of those few colleges of Uttarakhand which are accredited with 'A' grade by NAAC. In the second cycle of Assessment and Accreditation (A&A) by NAAC, our college has secured 3.04 CGPA, the highest score in the state under the new pattern of NAAC. The college has been selected for the coveted CPE (college with the Potential for Excellence) second cycle by UGC. This achievement reflects the co-ordinated efforts of all the stakeholders of the college including Management, Principal, faculty members, non-teaching staff, students, alumni, parents, other distinguished persons and well wishers of the college. Preparations for the second cycle of NAAC assessment process were undertaken under the supervision and guidance of Prof. V. A. Bourai, Principal of the college and the SSR (Self Study Report) was prepared by Dr. Madhu D. Singh, Co-ordinator of college IQAC (Head of English Department) and other IQAC team members.

As scheduled, the NAAC Peer Team appointed by the National Assessment and Accreditation Council (NAAC) Bangalore, visited our college for the second cycle of Accreditation from 14th to 16th March, 2016. The Peer Team was headed by Prof. D. S. Rathore (Former Vice Chancellor, Savan Kumar Himachal Pradesh Krishi Vishvavidyalaya). Dr. (Mrs) Ajay Sareen, (Principal, R.R. Bawa D.A.V. Girls College Batala, Punjab) was the Member Coordinator whereas Prof. Harendra Kumar Singh (Former Vice Chancellor, MUIT, Faculty of Commerce, BHU, Varanasi) and Dr. M. Sen Gupta (Former Professor of Education, NCERT, Principal, KIIT college of Education Gurgaon, Haryana) were members of the Peer Team.

On 14 March, 2016 the NAAC Peer Team

began their assessment process and revalidation of academic and infrastructural facilities of the college. On the very first day of their visit, the Peer Team interacted with the Principal who apprised them about the development and progress of the college in the last five years through power point presentation. The Team had a long interaction with IQAC members and discussed all aspects and the seven criterias set by NAAC. As per the schedule, the Peer Team members had an engaging interaction with the Managing Committee of the college. In the evening, a scintillating cultural programme was organized by the students in the honour of NAAC Peer Team.

The second day visit included inspection of all the departments regarding their infrastructure, teaching methods and achievements of teachers and students. Through PPT and interaction with faculty members, the Peer Team came to know the progress of all departments by adopting innovative methods. The distinguished team members appreciated the efforts of SGRR Education Mission in the field of education and healthcare after visiting Shri Mahant Indresh Hospital and the SGRRIHMS (Medical College).

On the third and final day, after ensuring that all the requisites of the NAAC inspection were fulfilled, the Peer Team prepared its final report. In the exit meeting, the Peer Team handed over the report to the Principal in the presence of all the faculty members, non-teaching staff, students and associated members of the college. Dr. Seema Saxena, Head of Botany Department, delivered the vote of thanks.

"To Attain Excellence and Increase Accessibility of Higher Education" is the vision of our college which reflects the dream of the founder of our

college, Brahamleen Mahant Shri Indires Charan Das Ji Maharaj. Besides this, our college has also been continuously endeavoring to promote quality culture in its overall functioning in assonance with NAAC vision which is 'Creation, Sustenance and Enhancement of Quality in Higher education'. The college was able to achieve the glorious result in the second cycle of accreditation due to the continuous efforts of the college IQAC, headed by the Principal, Prof V A Bourai who ensured proper monitoring of the work done in all the seven criterias set by NAAC for the overall development of the college.

Criterion I comprises the 'Curricular Aspects' which delineated the introduction of new courses like B.Com, B.Sc. Horticulture and M.Ed. during 2010-15. The demand ratio in terms of number of seats and applications received has been steadily increasing since 2010. As far as criterion II 'Teaching Learning and Evaluation' is concerned, our faculty members have been using diverse teaching methodology including the use of ICT tools etc. Our college is a member of INFLIBNET and on 26 Feb., 2016, the number of users was 581 including teachers, students and research scholars.

Criterion III 'Research Consultancy and Extension' was fulfilled by 09 minor and 07 major projects undertaken by faculty members. Many departments like Economics, Geology and Social Work have done consultancy for ONGC and World Bank projects during 2010-15. Keeping in view the future requirements under Criterion IV 'Infrastructures and Learning Resources', the college has undertaken the project of constructing seven storey building with modern facilities. The college has consistently upgraded its infrastructure utilizing the grants received by different funding agencies such as UGC, DST, DBT and college management.

For criterion V 'Student Support and Progression' college has made them available

various scholarships such as INSPIRE, DST and others. In Criterion VI 'Governance, Leadership and Management', the IQAC of our college has nominated distinguished luminaries of society in its committee as external members. They are Dr. S. Farooq, (reputed Industrialist), Dr. Vimal Nautiyal (distinguished Surgeon), Prof Dr. Jagdish Kishwan (Ex-DG, ICFRI), Dr. I.D. Semwal (Ex-Scientist, FRI) and Prof. S.P. Thapliyal (Ex-Director, ITS). These distinguished personalities enlightened us through their valuable suggestions and made our journey successful.

Criterion VII 'Innovations and Best Practices' in which our college is justifiably proud of its exemplary record in protecting environment and promoting eco friendly practices. It regularly undertakes a green audit in which a comprehensive account is done of chemical waste management, bio - waste and bio - degradable waste.

Today, our country stands at the cusp of great opportunity with its vast majority of youngsters (more than 50% of our population is below 35 years of age). If we can provide our young men and women quality higher education in the latest emerging areas at affordable cost, we would be fulfilling our duty towards society and our nation. Our late President, Dr. APJ Abdul Kalam said "Always dream big dreams". This was also the dream of the founder of our college, Brahmaleen Shri Mahant Indires Charan Das Ji Maharaj which is being transformed into reality by his dynamic successor, Shri Mahant Devendra Das Ji Maharaj.

Our college reiterates its pledge to ceaselessly strive towards its vision of 'Attaining Excellence and Increasing Accessibility of Higher Education'.

Dr. Sanjay Kumar Padaliya
(Co - ordinator, IQAC)

Dr. Anupam Sanny
(Secretary, IQAC)

Grand Children - A Bundle of Joy for Grand Parents

Whether they are Grandma and Grandpa, Nani and Nana, there's no doubt that grand parents are the greatest. Throughout the centuries, countless proverbs and quotations have expressed the importance of grandparents in our lives and the need to cherish their wisdom. Nobody can match the immensely broad spectrum of experience and prudence grand parents hold in life. They are the Almighty's equivalent when it comes to unconditional love and self sacrifice. Young people need something stable to hang on to a culture connection, a sense of their own past, family lineage and a hope for their own future. What children need the most are the essentials that grandparents provide in abundance. Kindness, patience, humour, comfort, lessons in life all are readily available with grand parents.

Children these days are choking themselves with their mobiles, laptops, iPods, iPads etc. so much that they find little time for some real life experience and experiment to be shared with grand parents. Nuclear families, the never ending race of materialism and increasing inflation has forced parents to devote more time to work rather than to children. In such scenario, grandparents are the backbone of a family who can provide healthy environment for the development of a child. Children living in families where grandparents provide their supervision to develop the right social and emotional intelligence to face challenges, laying a sound foundation for their adult life.

The bond between grandparents and grand children is precious and unique. Grandparents are like shady trees with strongest roots, which provide shelter and protection to the fragile saplings. More than the parents, grandparents feel the emotional outbursts of the children. Not to undermine the fact that they look like the happiest individuals in this world, when they spend time with their grand children.

Today the task of raising the children has become a herculean task for the working parents. In some unfortunate cases, parents do not shy away from

abandoning their responsibilities. However, grandparents showcase their lion's heart and they take up the responsibility of raising the grandchildren, being completely aware of the fact - that this emerging responsibility can take a toll on their health.

Grandparents have a goldmine store of knowledge that can't be replaced by dozens of teachers. They have a wealth of real life experience and lessons, which is not taught in any of the school. They leave no stone unturned to see happiness in their grandchildren's lives. They serve as a great link between the past, present and the future. Children often look up to their grand parents for suggestions, since they know that grand parents have seen it all. Being the most experienced candidates in the family, they are also entrusted with the responsibility of keeping the family together.

Grandparents and children are best friends since it is often noticed that children reveal their secrets and problems to their grandparents and the latter offer them valuable advice on how to deal with the situation. It goes without saying that grandparents are very important in our lives, when it comes to imbibing great values in kids. Kids might not always obey their parents but they pay heed to what the old Grandma or Grandpa has to say. Grandparents, on the other hand relive their childhood through their grand children and it's the greatest joy on earth. Grandparents forgive us for almost everything, support us through all and provide a sense of security. They are full of pride and beaming with happiness on our success as well as provide the rainbow when it rains. Grandparents also serve as pacifiers between parents and children in case of conflicts. Grandparents are the steady pillars on whom the foundation of a strong, united family is laid. Although their hair is grey but they have a heart of gold.

Kalpa Bhardwaj
M.A. (English), IV Sem.

Burans :

Rhododendron Arboreum

The Burans or *Rhododendron Arboreum* tree is found in Himalayan hills ranging in India, Bhutan and Nepal. It has also flourished in Nilgiri hills of South India. It is the state tree of Uttarakhand and Himachal Pradesh and also the national flower of Nepal.

Generally, it is a small tree but can grow high up to 20 metres. The tree generally blooms in January to March and flowers are clustered making the entire tree appear bright red.

- Himalaya is home for various plants with medicinal uses and one such tree is *Rhododendron arboreum* commonly called Burans. Flowers and leaves of this tree have been used long for medicinal purposes.

Nutritional Value of Burans Flower

Burans flower offers mainly fibers but it is a good source of Vitamin C, Potassium, Calcium and Iron. Bright red colour of this flower is due to Vitamins like *flavanoid quercetin*. It offers good amount of phytochemicals of medicinal value including phenols, saponins, xanthoproteins, tannins, flavonoid and coumarins.

Fact

Interestingly the 3 biologically active compounds - Quercetin, Rutin, and Coumaric acid found in burans flower are also found in apple. These compounds are responsible for the health benefits.

Health Benefits of burans

Latest research has evaluated anti-diabetic, antioxidant, anti-inflammatory, antimicrobial, heart and liver protective property of burans flower.

• Burans as anti-inflammatory

Various Ayurvedic and Homeopathic medicines have used burans flowers and leaves for treating body inflammation and treat gout, rheumatism, bronchitis and arthritis. Two such chemicals with strong anti-inflammatory property- quercetin and

rutin are found in burans flower. Quercetin is known to relieve inflammation of prostate, kidney and urinary bladder. Rutin is helpful in treating painful ulcers in mouth and gastrointestinal tract and used for osteoarthritis.

• Burans with pain killing ability

Young leaves of burans have been traditionally used in treating headache. It's juice is helpful in relieving stomach ache. Leaves of burans tree are used as poultice in treating wounds and reducing skin inflammation.

• Burans as an antioxidant

Various phytochemicals have been isolated from burans leaves and flower which have high antioxidant properties. They exhibit beneficial property in getting rid of harmful free radicals in body. Burans flower juice is thus a great antioxidant drink for your heart, liver, kidney and skins.

• Burans good for diabetes

Latest studies have confirmed anti-diabetic potential of burans flower and suggested its uses in treating type - I and type - II diabetes. Methanol extract of burans flower have showed in-vitro anti-diabetic activity suggesting its potential in development of new medicines for diabetes. Animal studies with its extract reduced blood sugar and cholesterol levels in rats.

• Burans to treat diarrhea

Traditionally flowers and leaves of burans tree have been used as home remedy over diarrhea and dysentery. Lab studies with ethyl acetate extract of burans flowers showed potential antidiarrheal activity.

• Burnas flower juice good for heart

It helps in lowering blood pressure and bad cholesterol. Various phytochemicals in burans flower juice offer antioxidant property and protect heart from oxidative stress and reduce risk of stroke

and other heart disorders. Quercetin supplementation is prescribed in treating hypertension, atherosclerosis and other heart disorders, while rutin helps in preventing blood clots which poses risk of heart attacks. Drinking burans flower juice is therefore good for heart and circulatory system.

• Antimicrobial property of burans

Flowers and leaves of burans contain wide range

of phytochemicals, many of them have independently reported antimicrobial benefits. These include various bioactive steroids, saponins and flavonoids. Quercetin and p-coumaric acid are two such flavonoids present in burans flower with established antimicrobial property.

Shaifali Singh

B.Sc. (Hort.), VIII Semester

हरा पत्ता

सूखी धुंधली शाखाओं के बीच
एक छोटा सा हरा पत्ता
जीने की राह तलाशता
निराशा के थपेड़ों से जूझता

जगमगाता रहा था दीप बन
वो सूने अंधियारे में
जल की शीतल बूँद हो जैसे
रेतीले रेगिस्तानों में
हो जैसे माझी का कोई किनारा
शून्य व्योम में झिलमिलाता एक तारा

वो पत्ता मुझे एक नई राह दिखा गया
मन हारा तो सब कुछ हारा
वो ये मंत्र सिखा गया
यहाँ कोई न मीत तुम्हारा
तुम खुद का ही बनो सहारा

समय हमेशा एक सा न रहता
कभी सुख का तो कभी दुख का है फेरा
ऋतुएँ भी निरन्तर हैं बदलती
अगर आज है पतझड़ तो फिर
कल बसंत का भी होगा डेरा
कल बसंत का भी होगा डेरा ।।

डॉ० ज्योति पाण्डेय
प्राध्यापिका, अंग्रेजी विभाग

विश्व शांति के मार्ग

आज हिंसा रूपी बेल सम्पूर्ण विश्व में फैलती जा रही है। किसी भी प्रकार की हिंसा या शक्ति का प्रदर्शन अपने प्रभुत्व को सिद्ध करने के लिए किया जाए तो वास्तव में समस्याएँ उत्पन्न होती हैं किन्तु उच्च मानवीय मूल्यों की स्थापना और विश्वशांति के लिए शक्ति संपन्न बनना सदा ही अनिवार्यता रही है।

कोई राष्ट्र अपनी राक्षसी प्रवृत्ति से प्रेरित होकर उस पर आक्रमण कर देता है, ऐसे में तो उसका अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा।

सन् 1962 में जब हम भारतीय हिन्दी-चीनी भाई-भाई का नारा लगा रहे थे और चीन ने हम पर आक्रमण कर दिया तब यदि हम युद्ध का उत्तर युद्ध से न देते तो क्या अपने देश की अखण्डता को बचा पाते? क्या अब भी आप कहेंगे कि मात्र अहिंसा के बल पर विश्व शांति की स्थापना की जा सकती है?

यह तो आधुनिक युग है, अगर हम द्वापर या त्रेता युग की ओर ध्यान दें तो हम पाएँगे कि भगवान तो मानव शरीर धारण कर इस धरती पर अवतरित हुए तो उन्होंने भी अन्याय व अत्याचार के अंत के लिए बल प्रयोग किया। मर्यादा पुरुषोत्तम राम व श्रीकृष्ण इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

आज हमें अहिंसा व प्रेम के स्थान पर अर्जुन के धनुष एवं भीम की गदा की आवश्यकता है। युधिष्ठिर के शांत स्वरूप की बात सोचना तो दुर्लभ है, युग कोई भी हो मानव की प्रवृत्ति सदा एक सी ही रही है।

आंचल पंवार
बी०एससी०, तृतीय सेमेस्टर

Fields Medal and Abel Prize

Princeton University's Mathematician, Manjul Bhargava is one of the four winners of the 2014 'Fields Medal', widely considered the 'Nobel Prize' for Mathematics. He is the first person of Indian origin to win this award. Bhargava was awarded for his extraordinary work in algebraic number theory which has revolutionized the way in which number fields and elliptic curves are counted. "Fields Medals" are known by their official name as "International Medals for outstanding discoveries in Mathematics."

The Fields Medal of the International Mathematical Union (IMU) was given for the first time in 1936. It is extremely prestigious prize but only Mathematicians below the age of 40 are eligible for the 'Fields Medal' and it does not have any monetary prize except for a symbolic amount. The prize amount is approximately 1/100th compared to the Nobel prize. It is long dominated by Americans, Russians, French and Britishers (38 medals), the highest recognition in the world of mathematics.

A well known University 'Ecole Normale Supérieure' Paris, established in 1794, got 11 medals, the highest numbers of 'Fields Medals'. Among its alumni, there are 13 Nobel Prize Laureates including 8 in Physics (ENS has the highest ratio of Nobel laureates per alumni of any institution worldwide), 11 Fields Medalists more than half the recipients of the CNRS's Gold Medal (France's highest scientific prize), several hundred members of 'the Institut de France', several Prime Ministers and many ministers. The institute has achieved recognition particularly in the fields of Mathematics and Physics.

The Fields Medal is made of gold and it is designed by Canadian sculptor, R. Tait McKenzie. On the obverse is Archimedes (287-212 BC) and a quote attributed to him which reads in Latin: "Transire Suum Pectus Mundumque Potiri" (Rise above oneself and grasp the world). The date is

written in Roman numerals and contains an error ("MCNXXXIII" rather than "MCMXXXIII"). On the reverse is the inscription in Latin CONGREGATI EX TOTO ORBE MATHEMATICI OB SCRIPTA INSIGNIA TRIBUERE, (Mathematicians gathered from the entire world have awarded for outstanding writings). In the background, there is the representation of Archimedes' tomb, with the carving illustrating his theorem on the 'Sphere and the Cylinder' (This is the mathematical result of which Archimedes was reportedly most proud: Given a sphere and a circumscribed cylinder of the same height and diameter, the ratio between their volumes is equal to $2/3$).

Nobel prizes were created in the will of the Swedish chemist and inventor of dynamite, Alfred Nobel, but Alfred Nobel who was an inventor and industrialist, did not create a prize in Mathematics because he was not particularly interested in Mathematics or theoretical science. In fact, his will speaks of prizes for those "inventions or discoveries" of greatest practical benefit to mankind. While it is commonly stated that Alfred was against a Nobel prize in Mathematics because of anger over the romantic attentions of a famous mathematician (often claimed to be Gosta Mittag-Leffler) in his life though there is no historical evidence to support this story.

The Abel prize, on the other hand, has no such restriction and is comparable to Nobel prize, both in terms of value and the eligibility criterion. The Abel prize is an international prize established in 2001 and awarded for outstanding lifetime achievements in Mathematics to Niels Henrik Abel (1802-1829) who died at the young age of 26. The Abel prize was established as part of the events leading up to the celebrations of Abel's 200th birth anniversary.

Niels Henrik Abel is often compared with Indian genius mathematician, Srinivasa Ramanujan. He proved the general equation of degree greater

than four cannot be solved algebraically, or we can say that there is no formula for a Quadratic Equation. He has also given some fundamental results for the development of theory of algebraic functions. He died in poverty, just a few days before he would have received a letter announcing his appointment for Professorship in name of Abel.

The Abel prize is administered by Norwegian Academy of Science and the winning candidate is selected on the basis of recommendation of an International Committee chaired by a Norwegian. The committee consists of five outstanding mathematicians appointed by the Academy on

the recommendations by European Mathematical Society, the International Mathematical Union (IMU) and the Academy's Group for Pure and Applied Mathematics. The current value of the prize is Norwegian currency (NOK) 6 million (approximately \$ 734673 and INR 4,90,47,400.15).

Dr. Sanjay Kumar Padaliya

Assistant Professor

Department of Mathematics

ओढ़ के तिरंगा क्यों पापा आये हैं?

ओढ़ के तिरंगा क्यों पापा आये हैं?
माँ मेरा मन बात ये समझ ना पाया है,
ओढ़ के तिरंगा क्यों पापा आये हैं।
पहले पापा मुन्ना-मुन्ना कहते आते थे,
टॉफियाँ खिलौने साथ में भी लाते थे।
गोदी में उठाकर खूब खिलखिलाते थे।
हाथ फेर सर पे प्यार भी जताते थे।
पर ना जाने आज क्यों वो चुप हो गए
लगता है की खूब गहरी नींद सो गए
नींद से पापा उठो मुन्ना बुलाए है
ओढ़ के तिरंगा क्यों पापा आये हैं।
फौजी अंकलों की भीड़ घर क्यों आई है।
पापा का सामान साथ में क्यों लाई है।
साथ में क्यों लाई है, वो मेड़लों के हार
आँख में आँसू क्यों सबके आते बार-बार।
चाचा-मामा-दादा-दादी चीखते हैं क्यों
माँ मेरी बता वो सर पीटते हैं क्यों।
गाँव क्यों शहीद-पापा को बताएँ है?
ओढ़ के तिरंगा क्यों पापा आयें है
माँ तू क्यों है इतना रोती ये बता मुझे
होश क्यों है हर पल खोती ये बता मुझे
माथे का सिन्दूर क्यों है दादी पोंछती
लाल चूड़ी हाथ में बुआ क्यों है तोड़ती
काले मोतियों की माला क्यों उतारी है,

क्या तुझे माँ हो गया समझना भारी है।
माँ तेरा ये रूप ना सुहाये है,
ओढ़ के तिरंगा क्यों पापा आए हैं।

पापा कहाँ हैं जा रहे अब ये बताओ माँ,
चुपचाप से आँसू बहा के यूँ सताओ ना
क्यों उनको सब उठा रहे हाथों को बांधकर
जय हिन्द बोलते हैं क्यों कन्धों पर लादकर।
दादी खड़ी है क्यों भला आँचल को भींचकर,
आँसू क्यों बहे जा रहे हैं आँख मीचकर।
पापा की राह में क्यों फूल ये सजाए हैं।
ओढ़ के तिरंगा क्यों पापा आये हैं।
क्यों लकड़ियों के बीच में पापा लिटाए हैं।
सब कह रहे हैं लेने उनको राम आए हैं।
पापा ये दादा कह रहे तुमको-जलाऊँ मैं
बोलो भला इस आग को कैसे लगाऊँ मैं
इस आग में समा के साथ छोड़ जाओगे
आँखों में आँसू होंगे, बहुत याद आओगे।
अब आया समझ माँ ने क्यों आँसू बहाए थे
ओढ़ के तिरंगा क्यों पापा आये हैं।

राशि गुप्ता

बी.एससी., प्रथम सेमेस्टर

The Teacher

Remember, when we met
When I was just a kid
And you said to me
'He's okay, we're all friends here'
And treated me like a normal kid
Well even if you don't
Thank you, as you now mean the world to
me.

Remember, when I first cried in front of you
When times were tough for me
And you said to me
'It's okay, I'm here'
And it all seemed a little better
Well even if it's slipped from your mind
It made me who I am today.

Remember, when you fell apart
You couldn't cope without your dad
And I said to you
'It's okay, I'm here for you'
And you put back your mask?
Because it had slipped that day and I saw
The real you, scared and hiding.

Remember, when I left you
To move on to my next stage
And you said to me
I'll always be here 'for you'
And we hugged and talked for hours
You wanted me to chase my dreams
and helped me through my fear.

Remember, when I became you
And you took to sidelines
And I said to you
'I'm here to carry on'
And you watched like a proud parent
As I took my first step.

Now it's me remembering you
As you lie in the ground
I'll always remember your calming voice
And be grateful for what I found.

Gauri Pal
B.Com., Ist Semester

जीवन

पीड़ा के पर्वत पर चढ़ना,
आहों को सांसों में सहना,
स्नेह-सागर की लहरों को,
नयन-तट तक सीमित रखना,
बहुत कठिन होता है
इस जीवन को जीवन कहना।
चंचल मन के स्पंदन को,
रग-रग बहते आवेगों को,
व्यग्र, बेबस जज्बातों को,
हृदय-सीप में बाँध के रखना,

बहुत कठिन होता है
इस जीवन को जीवन कहना।
अपनी व्यथा खुदी से कहना,
खुद ही हँसना, खुद ही रोना,
व्यथित हृदय को आन्दोलित कर,
अधरों पर मुस्कान संजोना,
बहुत कठिन होता है
इस जीवन को जीवन कहना।
इस जीवन को जीवन कहना।।

डा० दीपाली सिंघल
प्राध्यापिका, रसायन विभाग

A Compact 'World Scenario' on Biotechnology

As per European Federation of Biotechnology, biotechnology is the integration of natural sciences and organisms, cells, parts thereof, and molecular analogues for products and services. For example, one application of biotechnology is the directed use of organisms for the manufacture of organic products (including beer and milk products). Another example is using naturally present bacteria by the mining industry in bioleaching. Biotechnology is also used to recycle, treat waste, clean up sites contaminated by industrial activities (bioremediation), and also to produce biological weapons. Glycotope is also a global leader in Glycobiology and is developing new and proprietary biopharmaceuticals with optimized and fully human glycosylation structures as well as highly specific antibodies against glyco-epitopes on cancer cells.

Biotechnology is the research and development in the laboratory using bioinformatics for exploration, extraction, exploitation and production from any living organisms and any source of biomass by means of biochemical engineering where high value-added products could be planned and gaining durable patents rights (for exclusives rights for sales, and prior to this to receive national and international approval from the results on animal experiment and human experiment, especially on the pharmaceutical branch of biotechnology to prevent any undetected side-effects or safety concerns by using the products).

Several branches of biotechnology have been identifying as follows:

- **Bioinformatics** is an interdisciplinary field which addresses biological problems using computational techniques, and makes the rapid organization as well as analysis of biological data possible. The field may also be referred as computational biology, and can be defined as, "conceptualizing biology in terms of molecules and then applying informatics techniques to understand and organize the information associated with these molecules on a large scale."
- **Blue Biotechnology** is a term that has been used to describe the marine and aquatic applications of biotechnology.
- **Green Biotechnology** is biotechnology applied to agricultural processes. An example would be the selection and domestication of plants via 'Micropropagation'. Another example is the designing of transgenic plants to grow under specific environments in the presence (or absence) of chemicals. One hope is that green biotechnology might produce more environment friendly solutions than traditional industrial agriculture. An example of this is the engineering of a plant to express a pesticide e.g. Bt Cotton.
- **Red Biotechnology** is applied to medical processes. Some examples are the designing of organisms to produce antibiotics, and the engineering of genetic cures through genetic manipulation.
- **White Biotechnology** known as industrial biotechnology, is applied to industrial processes. An example is the designing of an organism to produce a useful chemical.

Biotechnology has contributed to the discovery and manufacturing of traditional small molecule pharmaceutical drugs as well as drugs that are the product of biotechnology - biopharmaceuticals. Modern biotechnology can be used to manufacture existing medicines relatively easily and cheaply. The first genetically engineered products were medicines designed to treat human diseases. To cite an example, in 1978 Genentech developed synthetic humanized insulin by joining its gene with a plasmid vector inserted into the bacterium *Escherichia coli*. Insulin, widely used for the treatment of diabetes,

was previously extracted from the pancreas of abattoir animals (cattle / pigs). The resulting genetically engineered bacterium enabled the production of vast quantities of synthetic human insulin at relatively low cost. Biotechnology has also enabled emerging therapeutics like gene therapy. The application of biotechnology to basic science has also dramatically improved our understanding of biology and as our scientific knowledge of normal and disease biology has increased, our ability to develop new medicines to treat previously untreatable diseases has increased as well. There are very high opportunities for the biotechnology students to start their career with following biotechnology companies.

Independent biotechnology Companies World Wide.

S.N.	Rank	Company	Country
1	1	Johnson & Johnson	United States
2	2	Pfizer	United States
3	3	Roche	Switzerland
4	4	Novartis	Switzerland
5	5	Merck & Co.	United States
6	6	Amgen	United States
7	7	Sanofi	France
8	8	Abb Vie	United States
9	9	Bristol-Myers Squibb	United States
10	10	Gilead Sciences	United States
11	11	Celgene	United States
12	12	Glaxo Smith Kline	United States
13	13	Novo Nordisk	Denmark
14	14	Bayer	Germany
15	15	Eli Lilly & Co	United States
16	16	Allergan	Ireland
17	17	Astra Zeneca	United States
18	18	Biogen	United States
19	19	Abbott Laboratories	United States
20	20	Shire Pharmaceuticals	Ireland
21	21	Stryker Corporation	United States
22	22	Regeneron Pharmaceuticals	United States
23	23	Teva Pharmaceutical	Israel
24	24	Alexion Pharmaceutical	United States
25	25	Baxter International	United States

Dr. Arun Kumar
(Assistant Professor)
Department of Biotechnology

जिंदगी

जिंदगी नाम है चलने का, रुकने का नहीं,
खेल है ऐसा जहाँ साथी बदलते हैं
लेकिन जीतना है इसे हारना नहीं,

कहते हैं बहुत संघर्ष है जिंदगी में
लेकिन संघर्ष के आगे कभी झुकना नहीं
जिंदगी नाम है चलने का रुकने का नहीं

रुकते नहीं कदम बढ़ने हैं,
सच हो या ना हो
लेकिन हमें सपने बुनने हैं
टूट जाने से उनके कभी टूटना नहीं
क्योंकि जिंदगी नाम है चलने का रुकने का नहीं

सफर ऐसा है जहाँ
दुख के स्टेशन आते - जाते हैं
आने से उनके कभी रुठना नहीं
क्योंकि जिंदगी नाम है चलने का रुकने का नहीं

भले ही इंतजार करवाएगी
लेकिन किसी मोड़ पर सफलता
दरवाजा खट-खटाएगी
पाने से उसे कभी चूकना नहीं
क्योंकि जिंदगी नाम है चलने का, रुकने का नहीं।

दीपक कुमार
बी.एससी., प्रथम सेमेस्टर

मेरा पहाड़ मेरा गढ़वाल

जहाँ हो सौन्दर्य की बात
नाम पहाड़ का आये हर बार।
मेरा पहाड़, मेरा गढ़वाल
देवभूमि के नाम से जाने संसार।।

दोस्तों!, भगवान ने ना जाने कितनी सारी अनगिनत प्यारी, सौन्दर्यपूर्ण चीज़ें इस पृथ्वी को प्रदान की हैं। उन्ही में से एक प्यारा सा तोहफा गढ़वाल है। दोस्तों क्या आप जानते हैं हमारे उत्तराखण्ड के गढ़वाल को केदारखण्ड के नाम से भी जाना जाता था। यहाँ बहुत से गढ़ों के होने के कारण धीरे-धीरे इसे गढ़वाल के नाम से जाना जाने लगा। गढ़वाल में गढ़वाली भाषा कही जाती है। इस भाषा का लोकसाहित्य पर्याप्त रूप में मिलता है। पहले इस क्षेत्र के नाम केदारखण्ड, उत्तराखण्ड आदि थे। गढ़वाली की बहुत सी उप बोलियाँ विकसित हो गयी हैं, जिनमें 'श्रीनगरिया' गढ़वाली का परिनिष्ठित रूप है। गढ़वाल को देवभूमि के नाम से भी जाना जाता है। अनेकों देवी-देवताओं और उनकी जीवन गाथाओं के बारे में जब-जब कहा जाता है। दूर-दूर से लोग यहाँ चारो धाम की यात्राएँ करने आते हैं। बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री,

यमनोत्री आदि प्रसिद्ध धामों में लोग अपनी मन्तर्तें लेकर आते हैं। हर मन्दिर की एक अलग गाथा है। अनेकों त्यौहार और ढ़ेरो रंग हर त्यौहार में एक अलग ही विशेषता है। गढ़वाल में हर त्यौहार में कुछ मुख्य स्वादिष्ट पकवान बनाये जाते हैं। अरसे, रोटने, काली दाल की पकौड़ियाँ, पूरीयाँ, पीले लड्डू जैसे ढ़ेरो पकवान हर त्योहारों में खाने को मिलते हैं। गढ़वाली निवासियों की एक खासियत यह होती है कि वह हर अजनबी व्यक्ति से भी प्रेमभावना से प्रस्तुत होते हैं।

साल भर में एक बार होने वाला कार्यक्रम जिसे कौथिक के नाम से जाना जाता है। दूर-दूर से लोग यहाँ इस मेले को देखने आते हैं। हजारों की संख्या में लोग यहाँ उपस्थिति देते हैं। गढ़वाल को प्रदूषण मुक्त जगह के लिए भी जाना जाता है। ठंडी वादियों में अनेक रंग-रूप के फूल यहाँ देखने को मिलते हैं, जिसे लोग फूलों की घाटी के नाम से भी जानते हैं। संस्कृति का गढ़वाल यहाँ आना दोस्तों हर बार।

रचना
बी.ए., प्रथम सेमेस्टर

An Overview of Women's Health Status in India

United Nations Cairo Conference (1994) took the initiative that the rights of women and reproductive health were identified as a human rights all over the world and India being signatory to the conference agreed to bring about changes in the policies and programmes exclusively for the welfare of the women's health. India is one of the few countries in the world where women and men have nearly the same life expectancy at birth. In India there are many problems related with women's health. Indian women have high mortality rates, particularly during childhood and in their reproductive years. The health of Indian women is intrinsically linked to their status in society. Research on women's status has found that the contribution of Indian women to their families are often overlooked, and instead they are viewed as economic burdens. Further, Indian women have low levels of both education and formal labor force participation because of the wide variation in culture, religion, and levels of development among India's 28 states and 7 union territories. It is not surprising that women's health also varies greatly from state to state. Poor health has repercussions not only for women but also for their families. Women in poor health are more likely to give birth to low weight infants. They also are less likely to be able to provide food and adequate care for their children.

Fertility and Women's Health

Many of the health problems of Indian women are related to or exacerbated by high levels of fertility. Overall, fertility has been declining in India; by 1992-93 the total fertility rate was 3.4 (International Institute for Population Science (IIPS), 1995), now it is 2.45. However, there is wide difference in fertility level by state, education, religion, caste and place of residence. Uttar Pradesh, the most populous state in India, has a total fertility rate of over 5 children per

women. On the other hand, Kerala, which has relatively high levels of female education and autonomy has a total fertility rate under 2. Increasing use of contraceptives is one way to reduce fertility.

In India, only 36 percent of married women aged 13 to 49 currently use modern contraception (IIPS, 1995). Female sterilization is the main form of contraception; over two third of the married women using contraception have been sterilized. More than half of married women with a high school education or above use contraceptives, compared to only one-third of illiterate women. Not surprisingly, the total fertility rate for these two groups is significantly different: 4.0 children for illiterate women compared to 2.2 children for women with a high school education or above. Differentials among the religious groups also are pronounced: e.g., Muslims have the highest total fertility rate the lowest contraceptive use (IIPS, 1995).

Over 100,000 Indian Women Die Each Year from Pregnancy-Related Causes

India's Maternal Mortality Rate (MMR), the number of women who die from pregnancy related causes per 100,000 live births, stands at 167. As a result, India accounts for the maximum number of maternal deaths in the world-17 per cent of nearly 50,000 of the 2.89 lakh women who died as a result of complications due to pregnancy or childbearing in 2013.

Assam has the highest maternal deaths with a MMR above 300. Uttar Pradesh, Uttarakhand, Bihar, Jharkhand, Madhya Pradesh, Chhatisgarh, Orissa and Rajasthan also record MMRs above the national average. The leading causes of maternal death are hemorrhage, sepsis, abortion, hypertensive disorders, obstructed labour and other causes, which include anaemia. This differential maternal mortality is most likely related to differences in the socio-economic status of women and access to health care services among the states. This high MMR is because of not having proper care during pregnancy.

National Family Health Survey (NFHS) found that 37 percent of all pregnant women in India received no prenatal care during their pregnancies (IIPS, 1995). The proportion

receiving no care varied greatly by educational level and place of residence. Nearly half of illiterate women received no care compared to just 13 percent of literate women. Women in rural areas were much less likely to receive prenatal care than women in urban areas.

Mother's Education Strongly Related to Children's Malnutrition

Mother's education, according to the NFHS, is highly correlated with the level of malnutrition among children. Children of illiterate mothers are twice as likely to be undernourished or stunted as children whose mothers have completed at least high school. Children of illiterate mothers are three times as likely to be severely undernourished as children of mothers with at least a high school education. Nutritional status of children also differs state to state. Bihar and Uttar Pradesh have the highest proportion of undernourished children and Kerala has the

lowest, consistent with the different levels of socio-economic development in these states.

Conclusion

Women and girls are typically the last ones to have food in a family; thus, if there is not enough food they are the ones to suffer most. According to the NFHS, Indian children have among the highest proportions of malnourishment in the world. More than half (53 percent) of all girls and boys under 4 year of age were malnourished, and a similar proportion (52 percent) were stunted (i.e., too short for their age). Other studies show that many women never achieve full physical development (The World Bank, 1996). This incomplete physical development poses a considerable risk for women by increasing the danger of obstructed deliveries.

Brij Mohan P. Kanti

Research Scholar

Department of Economics

मानव-मन

चंचल लहरों सा लहराता,
मानव का यह मन।
पक्षी के जैसे उड़ जाता,
मानव का यह मन।
बासँती पवन सा बहता,
तितली सा उड़ता वन उपवन।
ना थकता ना रूकता,
मानव का यह मन।
रोके से कभी रूक न पाए,
एक डौर कहीं ठहर न पाए।
नदियाँ सा बल खाता जाए,
मानव का यह मन।
बच्चे की छोटी आशा सा,
नन्हें दीपक की लौ जैसा।
भटकों को नित राह दिखाता,
मानव का यह मन।
आशाओं की मधुर धुनों में,

संघर्षों की नयी तानों में।
जीवन-वीणा बजाता जाए,
मानव का यह मन।
फूलों सी कोमल छुअन लिए,
सूरज के जैसी तपन लिए।
सुख-दुःख के झूले में डोले,
मानव का यह मन।
नभ, सागर की थाह है लेता,
क्षितिज के पार कुल्लाँचे भरता।
हवा से हरदम बातें करता,
मानव का यह मन।
कुछ करने की जिज्ञासा में,
कुछ पाने की अभिलाषा में,
जीवन गागर में सागर भरता,
मानव का यह मन।।

डा० हरीश चन्द्र जोशी

प्राध्यापक, रसायन विज्ञान विभाग

काफल: उत्तराखंड की पहचान

देवभूमि उत्तराखंड में काफल पहाड़ी इलाकों में पाये जाने वाला एक लोकप्रिय फल है जो मार्च-अप्रैल में पक जाता है बल्कि कुछ स्थानों में बदलते हुए मौसम के कारण पहले ही पक जाता है जो कि अपने नैसर्गिक खूबसूरती एवं स्वाद की वजह से पर्यटकों व स्थानीय लोगों को बरबस अपनी ओर आकर्षित कर ही लेता है। उत्तराखंड का प्रसिद्ध लोकगीत काफल-पाकौ चैता तथा काफल पाकौ मिन नि चाखौ मार्मिक हृदय को छू लेने वाले गीत में भी इस बहुमूल्य फल का जिक्र मिलता है। उत्तराखंड के पहाड़ी सड़को के किनारे कई स्थानों पर स्कूली बच्चे व स्थानीय लोग इस बहुमूल्य फल को बेचते नजर आ जायेंगे जिसको पर्यटक, स्थानीय लोग, चारावाह व बच्चे बड़े चाव से खाते हैं। देहरादून के फुटकर बाजार में यह 200 रुपये किलो तक मिलता है।

काफल उत्तराखंड में मध्य हिमालयी क्षेत्र अन्तर्गत 1000 से 2000 मीटर की ऊँचाई पर पाया जाता है। यद्यपि इसका फल मौसमी तथा संतरे की तरह रसीला नहीं होता, फिर भी काफल देखते ही मुंह में पानी आ जाता है तथा पहाड़ी क्षेत्रों में सेंधा नमक मिलाकर काफल खाने का मजा ही कुछ और है। मेरी दृष्टि में काफल शायद बसंत की विदाई का आखिरी फल है जो तपती गर्मी के आने से ठीक पहले अपने स्वाद से लोगों का मन मोह लेता है।

विश्वभर में काफल की लगभग 50 प्रजातियां पायी जाती हैं तथा सामाजिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी अत्यन्त महत्वपूर्ण फल है। यहां Myricaceae परिवार से सम्बन्ध रखता है तथा सदाबहार पेड़ है। यह विश्वभर में मध्य हिमालय, खाशिया पर्वत, सिंगापुर का दक्षिणावृत्त क्षेत्र, मलायन द्वीप, चीन, जापान तथा नेपाल में भी पाया जाता है। यह Myrica Nagi के साथ-साथ Myrica Esculenta, Boxberry तथा काठ फल के नाम से भी जाना जाता है। सामान्यतः एक परिपक्व वृक्ष से 15 से 30 किलोग्राम तक फल प्राप्त किया जा सकता है।

पारम्परिक रूप से काफल कई बीमारियों के निवारण के लिये वैद्यों द्वारा प्रयोग किया जाता रहा है जैसे एनीमिया, अस्थमा, ब्रोकाइटिस, जुखाम, अतिसार, बुखार, मूत्राशय रोग एवं यकृत सम्बन्धी बीमारियों के लिये प्रयुक्त होता रहा है। आयुर्वेद में काफल को औषधीय गुणों से भरपूर बताया गया है। काफल का सम्पूर्ण पौधा औषधीय गुणों से युक्त होता है, जैसे पेड़ की छाल, फल तथा पत्तियां सभी में औषधीय गुण पाये जाते हैं। इसकी छाल में Anti-inflammatory, Anti-helminthic, Anti-microbial जबकि फल में बेहतर Anti-oxidant तथा Anti-microbial गुण पाये जाते हैं। काफल की पत्तियों को कई देशों में विभिन्न औषधिय निर्माण हेतु

निर्यात भी किया जाता है। आयुर्वेद में काफल के फल को भूख बढ़ाने हेतु सबसे बेहतर माना जाता है तथा साथ-साथ मधुमेह रोग के लिये भी लाभदायक होता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि काफल में मुख्य अवयव के रूप में Gallic acid, Myricanone, Myricanol एवं Myricitrin आदि पाये जाते हैं। यह कई बीमारियों के निवारण के साथ-साथ एक बेहतर एण्टी आक्सीडेंट गुण भी रखता है जिसकी वजह से यह Oxidative Stresses के निवारण में सहायक होता है।

आयुर्वेद में काफल को Detoxifier तथा दर्द निवारक का नाम भी दिया है। काफल का औषधीय महत्व इस बात से और भी बढ़ जाता है कि इसमें मौजूद Myricitrin जो LDL को रोककर हृदय रोग में सहायक होता है। वर्तमान में भी आयुर्वेद में विभिन्न उत्पादों जैसे-कासहर चूर्ण, च्यवनप्रास एवं ब्रामोरसायन के निर्माण में भी इसका प्रयोग होता है जिसकी विभिन्न औषधीय गुणों की वजह से यह औद्योगिक रूप से भी महत्वपूर्ण है।

जहां तक काफल की पौष्टिकता की बात की जाय तो इसमें प्रोटीन 1.3 प्रतिशत, फाइबर 3.40 प्रतिशत, वसा 0.02 प्रतिशत, जैविक पदार्थ 98.10 प्रतिशत, कार्बोहाइड्रेट 16.13 प्रतिशत, कैल्शियम 1.0 मि०ग्रा० प्रति 100 ग्राम, मैग्नीशियम 8.4 मि०ग्रा० प्रति 100 ग्राम, पोटेशियम 1.98 मि०ग्रा० प्रति 100 तक पाये जाते हैं। इसके फल में 75.4 प्रतिशत पल्प पाया जाता है जिसमें 40 प्रतिशत तक जूस पाया जाता है तथा 3.68 प्रतिशत अम्ल के साथ-साथ 12.65 प्रतिशत Reducing Sugar पाया जाता है।

यह औषधीय उद्योग के साथ-साथ न्यूट्रास्यूटिकल एवं प्राकृतिक खाद्य उद्योग में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसके छाल के तेल का सौन्दर्य प्रसाधन निर्माण में भी उपयोग किया जाता है। इसका औद्योगिक महत्व इसी बात से आंका जाता है कि विश्व स्तर पर काफल से निर्मित उत्पाद स्टोनिया, श्रीलंका, न्यूजीलैण्ड, मलेशिया, पाकिस्तान तथा यू०के० आदि में निर्यात किये जाते हैं।

मुख्य बात यह है कि इतने पौष्टिक एवं औषधीय गुणों से भरपूर होने के कारण इसको उत्तराखण्ड में औद्योगिक महत्व नहीं मिला है। जबकि हिमाचल प्रदेश में डा० वाई०एस० परमार विश्वविद्यालय द्वारा काफल का औद्योगिक उत्पादन हेतु इसके वेजिटेटिव प्रोडक्शन हेतु सफल परियोजना संचालित की है जिससे काफल को अन्य फलों की तरह बागान में औद्योगिक रूप से उगाया जा सके। यदि हमारे प्रदेश में भी इसकी औद्योगिक रूप से खेती की जाय तो निसंदेह यह स्थानीय लोगों की आर्थिकी का बड़ा जरिया बन सकता है तथा विदेशों में भी काफल के महत्व को समझाया जा सकेगा।

डा० हर्षवर्धन पन्त

प्राध्यापक, रसायन विज्ञान विभाग

Facts About Fish

- Most fish reproduce by laying eggs, though some fish, such as Sphyrna (Hammerhead Shark), give birth to live babies called Shark pups.
- A silvery substance called "pearl essence" present in fish scales is used in lipsticks, nail polishes and other cosmetic products due to its shimmer effect.
- Lungfish can live without water for three to five years by burrowing into mud during dry season.
- A fullgrown Electric eel can generate about 600 volts of electricity. Their bodies contain electric organs with about 6000 specialised cells called electrocytes that store power like tiny batteries.
- The most poisonous fish in the world is the Stone fish. They resemble to encrusted stones. They deliver their venom through a row of spines on their back.
- Some fish can apparently change sex such as Clown fish, Moray Eel etc.
- Fish can drown themselves. Oxygen diffuses into the fish through their gills so if there is not enough oxygen, they drown.

Poonam Nautiyal
M.Sc. (Geo), IIIrd Semester

Climate Change: An Alarming Call for Uttarakhand

Uttarakhand is the most sensitive zone to climate-mediate risk. Being a mountainous region it is vulnerable to climate change and has shown above an average warming in past few decades. The livelihood here is mainly based on natural resources which include water, forest, agriculture etc. Recent researches have revealed that species of 'Banj Oaks' namely *Quercus leucotrichophora* and *Q. floribunda* support more floral biodiversity. However, planting more chirpines which are commercially important namely *Pinus roxburghii* and *P. wallichiana* are highly inflammable. They are also causing loss of ecological niches and net loss of biodiversity. Some of the reported climate change includes receding of glaciers, erratic rainfall, irregular winter rains, advancing cropping seasons, reduction in snow during winter, increasing in floods, drying up perennial streams, drying of hills, shifting of the timber lines and repeated episodes of forest fires during summer. Although, the state has shown rapid growth in economy from 2.9% in the year 2000 to 7.87% at present but the environmental sustainability is degrading with an alarming rate. Latest report of CAG (Comptroller and Auditor General) has revealed that the flood episodes of Kedar-Ghati were caused due to the negligence of rise in the level of water in the Chorabari lake by the State Disaster Management Authority. Similarly, studies conducted by the Ministry of Environment and Forests (MoEF) have shown that in the year 2008, the number of air conditioners which were purchased, their thrice were purchased in the year 2013, in the single district, Dehradun. If the situation of one district is like this, we can easily assume that what is the situation of other districts and how much we are contributing towards the emission of green house gases. Climate change is a major global environmental problem and also an issue of great concern to all countries irrespective of their size or level of development. However, in the context of hilly areas, it is severally affecting agricultural crops by causing water stress, small grain size, high temperatures during pollination and fruit development which affect the productivity and agriculture as a whole.

Dr. Arun Joshi
DST-SERB,
Young Scientist
Botany Department

Dengue: A Dangerous Virus

Dengue is visible clinically after an incubation period of 3-14 days, as fever of sudden onset with headache, retrobulbar pain, conjunctival infection, pain in the back and limbs (break - bone fever), lymphadenopathy and maculopapular rash. The fever is typically biphasic (Saddle back) and lasts for 5-7 days. Dengue may also occur in more serious forms, with hemorrhagic manifestations (Dengue Hemorrhagic Fever) or with shock (Dengue Shock Syndrome).

Dengue virus is widely distributed throughout the tropics and subtropics. The term 'dengue' is derived from the 'Swahili kedenga pepo', meaning 'a sudden seizure by a demon'.

Four types of dengue virus exist: first from Hawaii in 1944, second from New Guinea in 1944 and third and fourth from the Philippines in 1956.

Dengue virus belongs to the family 'Flaviviridae' and genus 'Flavivirus'. They are somewhat smaller, being 40nm in diameter. There are over 60 arthropod - borne flaviviruses. Dengue virus is transmitted from person to person by 'Aedes aegypti' mosquitoes. The extrinsic incubation period is 8-10 days. No vertebrate hosts other than human have been identified.

History

Dengue fever is clinically similar to the illness caused by the 'Chikungunya' and 'Onyong-nyong' viruses. Dengue has been increasing worldwide over the last few decades and today ranks as the most fatal vectorborne disease, with about 2.5 billion people in 200 countries at risk.

Dengue was initially confined to the east coast of India and has caused epidemics, sometimes along with the chikungunya virus, as in 1963 when extensive outbreak affected Calcutta and Madras. Subsequently it has spread westward and in the 1990s Surat and Delhi had major epidemics due to DHF and DSS. All four types of dengue viruses are present in the country.

Vector Transmitting the Disease

Aedes aegypti is a mosquito that spreads dengue fever and other diseases. The mosquito can be recognized by white markings on its legs and a marking in the form of a lyre on the upper surface of its thorax. The mosquito originated in Africa, but is now found in tropical and sub-tropical regions throughout the world.

Only the female bites for blood, which she needs to mature her eggs. To find a host, these mosquitoes are attracted to chemical compounds emitted by mammals, including ammonia, carbon dioxide, lactic acid and octenol.

Although *Aedes aegypti* mosquitoes most commonly feed at dusk and dawn. It is found indoors, in shady areas and when the weather is cloudy. They can bite and spread infection all year long and at any time of day.

The mosquitoes prefer to breed in areas of stagnant water such as flower vases, uncovered barrels, buckets, and discarded tyres but the most dangerous areas are wet shower floors and toilet tanks, as they allow the mosquitoes to breed in the residence. Certain chemicals emanating from bacteria in water containers stimulate the female mosquitoes to lay their eggs.

Treatment

Demonstration of circulating IgM antibody provides early diagnosis, as it appears within two to five days of onset of illness and persists for one to three months. The *Igm Elisa* test offers reliable diagnosis.

There is no specific medication for treatment of a dengue infection. People who think they are suffering from dengue should use analgesics (pain relievers) with acetaminophen and avoid those containing ibuprofen, naproxen, aspirin drugs. They should also take rest, drink plenty of fluids to prevent dehydration, avoid mosquito bites while febrile and consult a physician.

As with dengue, there is no specific medication for DHF. If a clinical diagnosis is made early, a health care provider can effectively treat DHF using fluid replacement therapy.

The Centers for Disease Control and Prevention

(CDC) suggest using mosquito repellents that contain Deet (N,N-diethylmetatoluamide, 20% to 30% concentration, but not more).

Control of dengue is limited to vector control as no vaccine is currently available.

Suman Rangar
M.Sc. (Microbio.), IVth Semester

Biofertilizers - An Innovative Tool for Agriculture

With the introduction of green revolution technology, the modern agriculture is getting more and more dependent upon the steady supply of synthetic inputs. Intensive agriculture with the use of chemical fertilizer in large amount has resulted in manifold increase in the productivity of farm commodities, but the adverse effect of these chemicals are clearly visible on soil structure, microflora, quality of water, food and fodder. At this critical juncture, biofertilizers are useful supplement to chemical fertilizers.

What is biofertilizer?

A number of microorganisms (bacteria, fungi and algae) are considered beneficial for agriculture and used as biofertilizer. Biofertilizers are supposed to be a safe alternative to chemical fertilizer to minimize the ecological disturbance. Biofertilizers are cost effective, eco-friendly and when they are required in bulk can be generated at the farm itself.

Microbes used as Biofertilizer

Microbes are effective in inducing plant growth as they secrete plant growth promoters (auxins, abscisic acid, gibberellic acid, cytokinis, ethylene) and enhance seed germination and root growth. They also play a considerable role in the decomposition of organic material and enrichment of compost.

Some N₂ fixing bacteria were used as a biofertilizer production are:

Rhizobia, Azorhizobium, Bradyrhizobium, Cyanobacteria, Azolla - Anabaena, Phosphate Solubilizing bacteria, Mycorrhiza, plant growth promoting Rhizobacteria etc.

Advantages-

1. They help to get high yield of crops by making the soil rich with nutrients.
2. Biofertilizers have replaced the chemical fertilizer as chemical fertilizer are not beneficial for the plants. They decrease the

growth of the plants and make the environment polluted by releasing harmful chemicals.

3. Plant growth can be increased if biofertilizers are used because they contain natural components which do not harm the plants.
4. If the soil will be free of chemicals, it will retain its fertility which will be beneficial for the plants as well as environment because plants will be protected from getting any disease and environment will be free of pollutants.
5. Biofertilizers destroy those harmful components from the soil which cause disease in the plants. Plants can also be protected against drought and other strict conditions by using biofertilizer.
6. Biofertilizers are not costly and even poor farmers can make use of them.
7. They are environment friendly and protect the environment against pollutants.

Disadvantages-

Biofertilizers require special care for long term storage because they are alive. They must be used before their expiration date. If other microorganism contaminate the carrier medium or if growers use the wrong strain, they are not much effective. Biofertilizers lose their effectiveness if the soil is too hot or dry.

The government should encourage the private firms and research institutes to cooperate and promote training extension activities of farmers at farm level.

Biofertilizers are very useful to us. They provide biological nitrogen directly to plants and they are eco friendly and pollution free.

Dr. Manjusha Tyagi
Assistant Professor
Department of Microbiology

सोशल मीडिया: लाभदायक या हानिकारक

आज के समय में सोशल मीडिया न सिर्फ स्टेटस सिंबल के लिये है बल्कि यह एक जरूरत का आकार ले चुका है। इसमें कोई शक नहीं कि इंटरनेट क्रांति के दौर में सोशल मीडिया प्लेटफार्म के रूप में बेहतर तोहफा मिला है। Face book, Instagram, Whats-app, Google+ ऐसे अनेक प्लेटफार्म पूरे विश्व को एक सूत्र में पिरोने की ताकत रखता है। एक अध्ययन के अनुसार 2014 में भारत के लोकसभा चुनाव में लगभग 150 सीटों पर सोशल मीडिया ने जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी वहीं अरविंद केजरीवाल ने 80% Campaign सोशल मीडिया के माध्यम से ही किया था। देश या विदेश में चुनाव हो या फिर पर्सनल बान्डिंग हो सोशल नेटवर्क की सहायता से कहीं भी संपर्क साध सकते हैं। चाहे गांव हो या शहर तमाम युवक युवतियां Face book, Whats App का इस्तेमाल कर विभिन्न गतिविधियां शेयर करते हैं।

इन सकारात्मक दृश्यों के पीछे एक कड़वी परत भी दिखाई पड़ती है जिसमें Social Media का गलत इस्तेमाल तेजी से बढ़ रहा है विभिन्न आपत्ति जनक संदेशों को सोशल मीडिया के माध्यम से फैलाया जा रहा है।

कई बार इरादतन या अनजाने में लोग ऐसे कदम उठा लेते हैं जो उनकी गिरफ्तारी तक पहुँच जाती है। सोशल मीडिया के माध्यम से कई असामाजिक तत्व अपनी संकीर्ण मानसिकता के विचारों को सोशल मीडिया पर व्यक्त करते हैं जो निंदा के योग्य हैं। समस्या सोच बदलने की है जिससे सोशल मीडिया हमारे लिये उपयोगी सिद्ध हो, इसके लिये हमें नकारात्मकता छोड़नी होगी।

एलिस ब्रेव
एम.एससी., प्रथम सेमेस्टर

काश

यदि होता ना संसार में काश,
रह जाती ना मनुष्य में फिर आस।
यदि होता ना संसार में काश,
अज्ञान के तिमिर में सोता ये स्थिर संसार।

यदि होता ना संसार में काश,
आज क्या इतने आगे बढ़ पाता मानव संसार।

जीवन के अमूल्य क्षणों को यूँही ना व्यर्थ गँवाओं तुम
अपनी-अपनी श्रम बूंदों से अपने-अपने काश को पहचानो तुम।

रह गयी पूरी होने में मेरी भी आस,
जाने किस क्षण साकार हो जाए हम सबका भी काश,
क्योंकि बिना काश ये जीवन है निराश।

इरम प्रवीन
बी.ए., प्रथम सेमेस्टर

संघर्ष

दुनिया से वो लड़ी थी
दुनिया की जंजीरे उसके
पैरों में पड़ी थी
फिर भी वो आगे बढ़ी थी
कुछ करना चाहती थी
पंखों बिना उड़ना चाहती थी
काँटोभरी राहें थी
फिर भी वो न लड़खड़ायी थी
दुनिया से वो लड़ी थी
दुनिया की जंजीर उसके
पैरों में पड़ी थी
एक दिन वो अपनी मंजिल
पर पहुँच पड़ी थी
दुनिया की जंजीर तोड़ वो खड़ी थी।

रीता उनियाल
बी.ए., प्रथम सेमेस्टर

Story of Exams

Pimples of tension
Dark circles of insomnia
Hair loss of frustration
And fever of exam phobia
Months before the schedule
We have earth and sky to rule
And week before the battle
Our condition becomes fatal
Syllabus seems like ocean
Chapters become encryption
Course seems expanding
And damn time contracting
Night outs seem adventurous
With coffee and tea as companion
And then comes the final day
Every cell of heart screams a pray
Within few hours, the story ends.

Arushi Katiyar
B.Sc., IInd Semester

Teacher

When God created teachers
He gave us special friends
To help us understand His world
And truly comprehend
The beauty and the wonder
Of everything we see
And become a better person
With each discovery.

When God created teachers
He gave us special guides
To show us ways in which they grow
So we can all decide
How to live and how to do
What's right instead of wrong
To lead us so that we can lead
And learn how to be strong

Why God created teachers
In His wisdom and His grace
Was to help us learn to make our world
A better and wiser place.

Komal Rani
B.Sc., IInd Semester

स्वामी विवेकानन्द एक आदर्श

आज देश में युवाओं की भागीदारी को लेकर बहस छिड़ी है, हर तरफ यही सवाल है कि आखिर हम युवाओं को किस तरह विकास की राह में अपना साथी बना पाएँगे? इस प्रश्न का एक उत्तर हो सकता है जो सबके लिए अनुकरणीय है। ऐसे ही एक आदर्श हैं स्वामी विवेकानन्द। उनका कहना था कि हमें किसी भी परिस्थिति में अपने लक्ष्य से भटकना नहीं चाहिए।

उठो, जागो और तब तक न रुको जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाए। स्वामी विवेकानन्द के ऐसे आदर्श वाक्यों के कारण आध्यात्मिक हस्ती होने के बावजूद भी वे युवाओं के लिए एक बेहतरीन प्रेरणा स्रोत हैं।

जब-जब मानवता हताश एवं निराश होगी तब-तब स्वामी विवेकानन्द के ओजस्वी, उत्साही और अनंत ऊर्जा से भरपूर विचार जन-जन को प्रेरणा देते रहेंगे और कहते रहेंगे-

“उठो, जागो और अपने लक्ष्य की प्राप्ति से पूर्व मत रुको।” आज आवश्यकता इस बात की है कि स्वामी विवेकानन्द जैसे महापुरुषों को हम अपना आदर्श बनाएँ और अपनी उन्नति के साथ-साथ सारे संसार की उन्नति में सहायक बनें।

लवली
बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

The Last Message

I went to a birthday party, mom
 but I remember what you said
 You told me not to wear too short
 so, I wore a gown instead
 I didn't choose to wear my skirt
 though some friends said I should
 I knew I made the good choice and
 your advice to me was right
 As the party finally ended, and
 the people drove out of sight
 I got into my own car
 sure to get home in peace
 Never knowing what was coming
 something I just expected least
 Now I'm lying on the pavement
 I can hear the policeman say
 The guy who committed this nuisance was
 drunk
 His voice seemed far away
 I can hear the doctor say
 This girl is going to die
 I'm sure the guy had no idea while
 he stripped off my attires
 Why do men do it mom, knowing
 that it ruins our lives?
 But now the pain is cutting me
 like a hundred stabbing knives
 Someone should have taught him
 that it is a shame and a vice.
 My body was fully covered but
 still I'd paid this price
 My breath is getting shorter
 I'm getting really scared
 I wish that I could hold you mom
 as I am bare skinned and no one cared
 I wish that I could tell you mom
 as I take my final sigh
 I really wanted to live mom
 but now I have to say good bye...!!

Afreen Ansari
 B.A., IIIrd year

Are Women Really Empowered?

Woman empowerment refers to the upliftment of women status in the society. Today women have proved that they are no less than men. They have even proved to be better than them. Saina Nehwal, Sunita Williams, Priyanka Chopra etc. are few names which now have become the iconic symbols of 'women empowerment' and have become idols for the future generation.

But observing my surrounding and considering myself mature enough to give my views on this serious issue, my thoughts are bit rebellious. Living among common people in a common society, I have realized that women's thinking is still reserved. They still question a girl's character who works late at night, short dresses are not acceptable and hanging out with boys is still considered a 'taboo'.

Sharing my personal experience, I have found that even the educated women have conservative thoughts. A family lives in my neighborhood - A doctor and a teacher (husband & wife) wife who admitted their only girl child in one of the most reputed schools of Dehradun, had kept a child labour for household chores, lesser than the age of her own daughter. One day when I asked her about child labour, she casually replied "I give her food to eat in addition to salary. I was stunned because the one who should support women empowerment has successfully created a hurdle for a girl child.

This is only one incident. There are lots of such cases in our country which prove that education does not play any role when it comes to the customs of society. In a country where women are women's enemy, it makes me question, "Are women really empowered?"

Deeksha Raturi
 B.Sc., Ist Semester

Tribute

A conscientious projector
Students' benefactor
Finds out pearl from the sea
Polishes the degree.

Unaware of the route

Where to foot
Teacher holds the hand
And gives the soothe.

An image of God
Saves us from for bode
Causes vying
To reach to dine
With the intellectual souls

To have erudition from their
bowls.
Waiting for their grace
As my foot pace
Some knowledge of divine
I am still twenty - nine.

Amandeep Kaur
Research Scholar
Department of English

अजन्मी अभिलाषा

अजन्मी बच्ची करे पुकार
मुझे जीने का दो अधिकार
कहती माँ से यही बार-बार
उठो माँ मुझसे दो बातें कर लो।

नौ महीने के सफर को
तीन महीने तक विराम देने का निर्णय कर
तू चैन की नींद सोयी है
सच मान तेरे इस निर्णय से
तेरी बिटियाँ बहुत रोयी है।

कल सुबह तुम मुझसे मुक्ति पा लोगी
नन्ही सी अपनी अजन्मी बिटिया के
टुकड़े-टुकड़े करवा अपनी कोख उजाड़ोगी
सुन माँ बस इतना ही कर देना।

साँसे ना दे सकी ए माँ मुझे तू
मृत रूप में अपने अंश को देख तो लेना
तेरा खून हूँ, तेरी साँसो कि सरगम हूँ
ए माँ मुझसे इतनी नफरत न करना।

अजन्मी बच्ची करे पुकार
मुझे जीने का दो अधिकार
क्योंकि बेटा और बेटियों में
नहीं हैं कोई अंतर।

इस अपराधिन को एक
अंतिम सजा दीजिये
कुछ कर दिखाने का एक मौका दीजिये
बस एक मौका दीजिये।

पुष्पा लिम्बू
बी.ए., प्रथम सेमेस्टर

A Life

I dream of a life
A life that's perfect and good
A life without problems
Where there isn't any scarcity
of water
Shelter or food.

A life where everybody is
happy
And nobody is sad
Where everybody sings songs
of glee

And where everything is good
and nothing is bad...

A life without worries
A life without any sorrow
A life without any difficulties
No worries about tomorrow.

Where people live in the
present
And forget about the past
Where nobody is an

untouchable
And nobody is an outcast.

I dream of a life
As sweet as ice-cream!
A life that does not have any
problem
A life full of hopes and
dreams.

Ruby Panwar
B.Ed., IInd year

Global Warming

Global warming is the unusually rapid increase in the earth's average surface temperature over the past century primarily due to the greenhouse gases released as people burn fossil fuels. The global average surface temperature increased 0.6 to 0.9°C (1.1 to 1.6°F) between 1906 and 2015, and the rate of temperature increase has nearly doubled in the last 50 years.

Scientists from the Intergovernmental Panel on climate, carrying out global warming research have recently predicted that average global temperature could increase between 1.4 and 5.8°C by the year 2100.

Causes of Global Warming

The climate system can be warm or cool in responses to the changes in external forces. It includes following factors:-

- **Greenhouse gases-** The greenhouse effect is the process by which absorption and emission of infrared radiation by gases in a planet's atmosphere warm its lower atmosphere and surface. On earth, naturally occurring amounts of greenhouse gases cause air temperature near the surface to be about 33°C (59°F) warmer than it would be in their absence. The major greenhouse gases are water vapour, carbon dioxide, methane and ozone. Water vapour causes about 36-70% of the greenhouse effect; carbon dioxide (CO₂) which causes 9-26% methane (CH₄) 4-9% and ozone (O₃) 3-7%.
- **Carbon dioxide emissions from fossil fuel burning power plants-** Our ever increasing addiction to electricity from coal burning power plants releases enormous amounts of CO₂ into the atmosphere.
- **Carbon dioxide emissions from burning gasoline for transportation-** With our population growth at an alarming rate, the demand for more cars and consumer goods means that we are increasing the use of fossil fuels for transportation which increases the

amount of CO₂ in the environment.

- **Methane emissions from animals, agriculture such as rice paddies-** Methane is extremely potent greenhouse gas, ranking right behind the CO₂. When organic matter is broken down by bacteria in rice paddies, methane is produced. As methane escapes from the arctic seabed, the rate of global warming will increase significantly.
- **Deforestation-** The use of forests for fuel is one of the causes of deforestation. Forests remove and store CO₂ from the atmosphere and this deforestation releases large amounts of carbon dioxide, as well as reducing the amount of carbon capture on the planet.

Effects of Global Warming

- **Rise in sea levels-** Scientists predict an increase in sea levels worldwide due to melting of two massive ice sheets in Antarctica and Greenland. One nation, Maldives is already looking for a new home.
- **More killer storms-** The severity of storms such as hurricanes and cyclones is increasing. The maximum wind speed of the strongest tropical cyclones have increased significantly since 1981.
- **Shortage of water resources-** Climate change is expected to have the most severe impact on water supply. Shortage in availability of water resources in future are likely to threaten food production, reduce sanitation, hinder economic development and damage ecosystems.
- **Widespread extinction of species-** According to a research, by 2050, rising temperature could lead to the extinction of more than a million species.
- **Depletion of ozone layer-** The CO₂ radiative force that produces global warming is expected to cool stratosphere. The cooling is expected to produce a relative increase in ozone (O₃) depletion in polar areas.

Medha Joshi

M.Sc. (Microbio.), IIIrd Semester

The little thing that makes a Big Difference

There was a man taking a morning walk near the beach. He saw that along with the morning tide came hundreds of starfish and when the tide receded, they were left behind and with the morning sun rays, they would die. The tide was fresh and the starfish were alive. The man took a few steps, picked one and threw it into the water. He did that repeatedly. Right behind him there was another person who couldn't understand what this man was doing. He caught up with him and asked, "What are you doing"? There are hundreds of starfish. How

many can you hold? What difference does it make? "This man did not reply, took two more steps, picked up another one, threw it into the water, and said "It makes a difference to this one".

What difference are we making? Big or small, it does not matter. If everyone makes a small difference, we would end up with a big difference.

Mansi Thapliyal
B.Sc., Ist Semester

Time for Introspection

"Tell me, what you have done for your college?" Honestly speaking, I am absolutely confused and speechless because this topic requires a lot of sincere introspection on my part, which of course is a difficult thing to do.

Every student has come with grievance or innocently unaware of the fact that the school is not built of mortar and iron or of chairs and desks. It's made what we its worthy students make of it. Friends! talk to any inmate, and what you hear is the never ending lists of grievances; No holidays, no games, too much homework, too many assignments, no picnics, no movies, teachers dictators, Principal totalitarian... etc

But have we ever questioned ourselves what we have done for our school /college? We very playfully vandalize school property, lab equipments and spoil library books. How many times have we become a reason for bringing glory to the college? We find it cool to break rules and trouble the teachers, skipping classes and making false allegations is considered 'must to do'. We honestly believe in the myth that college does nothing good to us, whereas the institution imparts knowledge and prepares us to face the frowns of life. It makes us an asset to ourselves and society. We need to remember that it needs all our cooperation to do us good and make us better. Friends! Let's be impartial judges and introspect. Try to make the best of the time and the resources that are made available to us by our college.

Komal
B.Sc., Ist Semester

समाज का एक अनदेखा पहलु

आज जहाँ एक ओर हमारा देश विकास की ओर आगे बढ़ता जा रहा है वहीं समाज का एक तबका ऐसा भी है जो सदियों पुरानी एक बेकार सी जिंदगी जी रहा है, सर्दी की कपकपाने वाली ठण्ड हो या तेज लू वाली गर्मी, अक्सर कुछ गलियों में और कूड़ेदान के आस-पास कुछ बच्चे कूड़े में कुछ ढूँढ़ते दिखाई देते हैं, उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता कि पैरों में कोई चपल है भी या नहीं, बिन शिक्षा, बिना साफ-सफाई के ये बच्चे कई बार बिमारियों के शिकार बन जाते हैं तो कई बार सही गलत का फर्क ना पता होने के कारण गलत कृत्यों में सम्मिलित हो जाते हैं। आधे से ज्यादा बच्चे तो नशे का शिकार हो जाते हैं शिक्षित न होने के कारण इन्हें न अच्छी जिंदगी मिल पाती है न कोई अच्छा रोजगार, अंत में ये चोरी और अन्य कामों को सहारा लेते हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी ये परम्परा चली आ रही है और समाज के अन्य वर्गों की तुलना में ये वर्ग कहीं पिछड़ा व अशिक्षित है, यद्यपि सरकार द्वारा कही योजनायें भी शुरू की गयी हैं पर इन योजनाओं का लाभ इन वर्गों को नहीं मिल पता, क्यों कि अनेक बार देखा गया है कि इस वर्ग में पैदा होने वाला बच्चा भीख माँगना और कूड़ा बीनने को ही अपनी किस्मत और जिंदगी का मकसद समझ लेता है। इनके माता-पिता भी इनका खूब साथ देते हैं क्योंकि इनके जरिए उन्हें कुछ पैसे जो मिल जाते हैं, आज हमारे समाज को जरूरत है कि हर वर्ग के लोग एक अच्छी जिंदगी जियें ताकि समाज में फैलती बुराईयाँ कम हो सकें, समाज में स्त्रियों का सम्मान हो और देश खुशहाल और समृद्ध बन सके।

आज हर वर्ष अनेक एन.जी.ओ बनाये जाते हैं जिनका उद्देश्य इन लोगों को एक अच्छी जिंदगी के प्रति जागरूक करना होता है, किन्तु देखा गया है कि कुछ दिन इन बच्चों को खाना, दवाएँ तो अवश्य दी जाती हैं और कही फोटो भी खिंची जाती है, इनकी जिंदगी में दो दिन की खुशी लाने के बाद न जाने कुछ दिनों बाद वो संगठन कहाँ गायब हो जाते हैं और अब तो ये लोग इसके आदि हो गये हैं। इसका असर ये हुआ है कि जब कोई संगठन या सरकार सही मायने में इन लोगों की मदद करना चाहती है तो वो इन्हें समझाने में नाकाम हो जाती है और अंत में हार मान लेती है और सभी योजनायें केवल फाइलों तक ही सीमित रह जाती है। आज सभी का ये दायित्व है कि समाज के इस वर्ग को समझाया जाये ताकि एक खुशहाल और समृद्ध समाज की स्थापना की जा सके।

शुभम चमोला

एम.एससी. (भौतिकी), तृतीय सेम.

Touch

Touch of a sculptor
Turns a rock into a beautiful carving.
Touch of a mother
Soothes away all fears from a child's mind.

Touch of a teacher
Removes veil of ignorance from student's mind.
Words fail to convey my deep gratitude to these hallowed corridors of learning
That gave my tumbling steps
A firm footing in school world.

Words fail to convey my deep gratitude to the school mates
For the knowledge imparted and their encouragement.

As I stand at threshold of the challenging and very dynamic world of school
Confident, raring to fly high.
I seek their blessings
To become a worthy and successful "Person".

Ranjana Rawat
B.Com., IInd Semster

Pragmatic Interpretation of Nirguna School in Hindi Poetry: In Pitamber Dutt's work

Dr. R.P. Dhyani PES Rtd., Member, SGRR Education Mission

India has been sanctified by the presence of saints and sages. Sages suggest concentrating on acquiring divine knowledge to ensure fostering celestial stability. The Nirguna School of Hindi Poetry is an approach to New world order and universal brotherhood. It also teaches people to make balance between material and spiritual world. The balance between the two is awfully needed. Dr. Pitamber Dutt Barthwal, the first D. Lit. in Hindi, has pragmatic approach regarding communal harmony and peace. He did an extra-ordinary and outstanding piece of research work on "Nirguna School of Hindi Poetry."

This research is a kind of path in which the success remains a distant dream. In research, we have twin objectives in view i.e. discovery of new facts or to give the new interpretation to already existing interpretation. Dr. Barthwal in his thesis has been able to discover new ideas and ideals of Nirguna School of poetry. He interpreted the hidden aspects of saint poets of devotional phase of Hindi poetry. He stated that ideas controlled the world and the facts guided, directed, controlled the forces of mind.

The populace can be conveniently classified in terms of faith into four categories, the agnostics (those who are doubtful about the existence of God), the atheists (non-believers), theists and neo-theists. The theists are either finitists or Infinitists. Finitists believe in idolatry and incarnation while the Infinitists are formless, fabulous or Nirguna. To them, everything in nature is the manifestation and abode of God. Surdas and Tulsidas are two famous finitist poets.

Dr. Barthwal undertook for his research 'the empirical study of Infinitist poets of devotional phase of Hindi poetry'. Before his work, there was a belief that these unlettered poets possessed confused, undigested and inconsistent mass of unrelated philosophical ideas. The general

understanding of the mass was governed not so much by empiricism and rationality as by soul and heart. Dr Barthwal was successful in making synthetic study of these saints and clear their ideology and stated that they were not confused about spiritual realm.

Dr. Barthwal has trijurious personality in which he had trijunction of philosophical attraction, empirical reality and spiritual reflecting. He had deep and true understanding of phenomenal world and existential reality. Prof Ranade said, "Dr. Barthwal's thesis seems to me to be the first serious attempt for the presentation of Hindi Mysticism. Dr. Barthwal adopted psychological method. His work is real contribution not merely to the interpretation of Hindi Literature but to general philosophy of mysticism too." Prof Shyam Sunder Das said that he had been able to find out a system of philosophy and ethics in the teachings of these saints. In short we can say that Dr. Barthwal gave pragmatic interpretation to the saints of Nirguna School.

In present, Dr. Pitamber Dutt Hindi Academy, Uttarakhand is bringing out *Granthavali* on Dr. Barthwal's work consisting of six volumes edited by different erudites. Dr. Ram Prashad Dhyani, "Savyasachi", PES retd. and well known writer, Speaker of our state is privileged to have been assigned the opportunity to edit first part of *Granthavali*. This part has six chapters. The first one describes the pitiable and terrible condition of India in those days. In the next chapter there is philosophy of Nirguna saints. In third chapter there is facts of mysticism in the Nirguna school. While in fourth and fifth chapter the description of evolution of Nirguna Panth and experiences of various Nirguna -saints respectively. The last one is about the propagators of Nirguna School. I hope this will be very useful for researchers and readers of literature. My best wishes to Dr. Pitamber Dutt Hindi Academy, Uttarakhand.

Women's Rights

You cannot rob us of the rights we cherish
Nor turn our thoughts away
From the bright picture of a 'Woman's Mission'
Our hearts portray.

We claim to dwell, in quiet and seclusion
Beneath the household roof
From the great world's harsh
Strife, and jarring voices
To stand aloof.

Not in a dreamy and inane abstraction
To sleep our life away
But, gathering up the brightness of home sunshine
To deck our way.

As humble plants by country hedgerows growing
that treasure up the rain
And yield in odours, ere the day's declining
The gift again.

So let us, unobtrusive and unnoticed
But happy none the less
Be privileged to fill the air around us
With happiness.

To live, unknown beyond the cherished circle
Which we can bless and aid
To die, and not a heart that does not love us
Know where we're laid.

Shikha Bhandari
B.Sc., IIIrd Semester

Population Growth

One major problem that faces the world today is the rapid growth of population, often referred as 'population explosion'. Until about 800 AD the world's population stayed below 200 million. Since then it has risen drastically. The rise has been greatest in the 20th century. The population has recently risen to about check billion: it is three times as large as it was in 1960. It is not so much the actual population as its rate and increase that is alarming. Experts predict that by 2020 there will be about 1.35 billion people, causing serious problems: hunger, overcrowding and environmental pollution.

This enormous increase in population is due to better food, better hygiene and above all the advances made in medicine. Rapid developments in modern medicine have conquered many diseases and consequently the death rate has decreased. Until the beginning of the 19th century most people died before the age of 50. Today in developed countries, the average life span has risen to more than 70 years. The population goes on increasing at an alarming rate in spite of the practice of birth control in many parts of the world.

With a population of over one billion, India is the second most populous country in the world. China is the first. India's population has risen drastically since 1950, the population today is 2 1/2 times as large as it was in 1950. It is rising by 2.9 percent per year, and in consequence, every year an extra 26 million people have to be provided for.

Neeraj Raturi
B.Sc., Ist Semester

Eco-Tourism for the Sustainable Development of Uttarakhand

What is Eco-tourism?

"Purposeful travel to natural areas to learn about the culture and natural history of the environment, while taking care and not to alter the integrity of the environment and contributing to the economic value of the local people." This definition should also include a sociological dimension, with the phrase 'the culture of the local people'.

Why does Uttarakhand need Eco-tourism?

- Eco-tourism can contribute to the upliftment of rural communities.
- Uttarakhand's biggest challenge is to search new revenue sources and improve its existing sources of revenue.
- Turned around by agricultural development because there is not enough suitable agricultural land and individuals in rural areas do not want to get into agriculture.
- Eco-tourism is a way of generating livelihood.
- For every eight tourists one job is created.

What are key tourism resources in Uttarakhand?

The main key tourism resources in Uttarakhand are pilgrimage (Uttarakhand Charr Dham), hill stations, trekking (Valley of Flowers), (World heritage), mountains, water sports, lakes (Tehri Dam), national parks, mountaineering, bird watching and many more.

Status of Eco-tourism in Uttarakhand

- Despite the huge capacity of natural environment in Uttarakhand, ecotourism is relatively poorly developed in the state. This is due to lack of awareness of eco-tourism and poor understanding of its potential to attract higher spending tourists that can bring significant environmental conservation, social and economic benefits to all sectors of the society.
- Awareness of the environment is growing in the tourism industry.
- Nature based tourism has started to include local communities.

- Need for planning is being emphasised.
- Conservation is increasingly becoming a national priority.

Suggestions for promotion of Eco-tourism in Uttarakhand

- Our Eco-tourism has tremendous potential we have to be aware of market needs.
- Provide local communities with strong incentives to participate in and benefit from the industry.
- Provide appropriate training in Eco-tourism principles and service standards at all levels.
- Adopt aggressive and effective marketing strategies to maximise local profit share and capture the lion's share of the global Eco-tourism market.
- Apply strict conservation measures.
- Maintain essential ecological process.
- Develop small-scale tourist facilities.
- Develop a visitor centre.
- Prepare and distribute eco-tourism codes of conduct.
- Provide well trained tour guides.
- Integrate local communities.

Eco-tourism and sustainable development

Sustainable tourism is built around four pillars of tourism-

- Economic sustainability
- Ecological sustainability
- Cultural sustainability
- Local sustainability

All four of these elements must be addressed, if Uttarakhand has to achieve sustainable tourism. Sustainability can be considered as a strategy, which moves away from the abstract to the practical.

Dr. Raj Bahadur
Head and Assistant Professor
Department of Economics

बिटिया का भाव

‘यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता’ हमारी संस्कृति का सदा से यही उद्घोष रहा है। परन्तु पिछले कुछ वर्षों में जिस समाज की विद्रुपता व अत्याचार स्त्रियों के प्रति समाज में हो रहा है उससे हृदय अत्यंत व्यथित है और इसी पीड़ा को मैंने शब्दों में व्यक्त करने का एक साधारण सा प्रयास किया है अपनी कविता के रूप में मेरी कविता का शीर्षक है-

‘आपकी बेटी’

बेटी हूँ मैं आपकी, विधाता का अनुपम वरदान,
मेरे भी है कुछ स्वप्न और कुछ अरमान,
चाहूँ मैं भी तितलियों सी उनमुक्त उड़ान
परिंदों की मानिंद उड़ना खुले आसमान,
धधकता है अन्तर्मन मेरा ज्वालामुखी समान,
भीतर मेरे है एक हौसलों की अडिग चट्टान,
जीवन की हर पहेली का हूँ मैं समाधान,
पाया है जब भी अवसर गढ़े है नये कीर्तिमान,
नदियों की कल-कल व झरनों का हूँ गान,
जीवन रूपी वीणा की हूँ मैं मधुर तान,
ठंडी हवा का झोका हूँ चपला सी स्मित मुस्कान,

ममता, सौम्यता, मधुरता है मेरी पहचान,
मेरी अद्भुत कलाएँ हैं इन्द्रधनुषी रंगों समान,
जिन्दगी की मुश्किलों का हल हूँ मैं आसान,
माँ, बेटी, बहू, आदि मेरे अनेकों नाम,
जननी हूँ मैं सृष्टि की, देती जीवन को नया आयाम,
दुर्गा, काली, लक्ष्मी, हूँ मैं साहस का प्रतिमान,
दृढ़ इच्छा शक्ति का पुंज हूँ नवसृजन का हूँ निशान,
सुखद सलोने स्वप्न सा है मेरा यही अरमान,
जब भी पाऊँ मैं अवसर, बढ़ाऊँ सदा देश का मान,
सँवारे हमारा जीवन भी आप बेटों के समान,
नहीं कम हम किसी से चाहें अब नया विधान,
मेरी यही प्रार्थना, माँगू सदा यही वरदान,
अगले जन्म में भी मुझे बिटिया बनाना भगवान,
.....मुझे बिटिया बनाना भगवान ।।

डॉ. हरीश चन्द्र जोशी

प्राध्यापक, रसायन विभाग

Why India performed miserably in Olympics?

The millennium's first Olympics games in 1900, in which India took part first time won 2 silver medals by an athlete Norman Pitchard. Since 1920 India has been participating in every Olympics. Since then (1900-2016) India has a measly total of 28 medals (9 Gold, 8 Silver and 11 Bronze). This is equal to the medals won by Michael Phelps of United States in swimming (23 Gold, 3 Silver, and 2 Bronze) from 2004 to 2016. Isn't it strange!

Every Olympic year there is analysis on why Indian sports are deteriorating. Big plans are drawn up but these die a natural death.

If we take latest example of Olympics 2016 held in Rio De Janeiro, 118 players represented India (which is the highest ever) but it is unfortunate that India won only two medals, one Silver by P.V. Sindhu in Badminton and one Bronze by Sakshi Malik in wrestling, even in the presence of big names like Abhinav Bindra, Sania Nehwal, Saniya Mirza, Yogeshwar Dutt and many others. It is a poor result for India but there are some players who raised some hope for India by their talent: Deepa Karmakar, Jitu Rai, Manish Rawat, Lalita Babar, Aditi Ashok.

Indian history never had a sporting culture unlike Greek and Roman civilization. The time is changing now, new talents are emerging but the only need is to identify right talents and promoting them to represent India in International arena. An attitudinal change in the nation for inculcating a physical culture will definitely bring good results.

Dhiraj Kuniyal
B.Sc., IIIrd Year

25 Interesting Facts about Snakes

- Snakes range in size from the tiny, 10 cm long thread snake, to the reticulated python of up to 6.95 meters (22.8.ft) in length.
- Snakes kill 1,00,000 people every year.
- There's an island Brazil where civilians are forbidden to go: it has up to 5 snakes per square meter.
- Snake can have two heads and fight each other for food.
- The top ten deadliest snakes can be found in Australia.
- The Boomsnake snakes' venom causes you to bleed from all holes of your body.
- Snakes can open their mouth up to 150°.
- There are no terrestrial snakes in New Zealand.
- The mortality rate of Black Mamba snake bite is almost 100%.
- Power acids in snake's stomachs mean they will explode if given Alka-Seltzer.
- The Titanoboa lived 60 million years ago and is the largest, longest and heaviest snake ever discovered.
- Snakes used in snake charming performances respond to movement, not to sound.
- One drop of beaked sea snake venom can kill 3 adults.
- Snakes don't have eyelids.
- Snakes use their tongues to smell.
- 51% of Americans fear snake, more than any other thing in the world.
- Snakes can close their eyes. They can't blink and they sleep with their open eyes.
- Some snakes, Komodo dragon, Sharks and Turkeys are capable of virgin birth i.e. asexual reproduction.
- Military commandos in Lebanon eat live snakes, a tradition to display their strength and daring attitude.
- More than 20 snake families are currently recognized, comprising about 500 genera and about 3,400 species.
- Living snakes are found on every continent except Antarctica.
- Snakes can sense other animals approaching by detecting faint vibrations in the air and on the ground.
- Some snakes survive up to 2 years without meal.
- All snakes are strictly carnivorous.
- Snakes are immune to their own venom, venom of close relatives but not to the venom of other species of snake.

Shruti Dobhal
M.Sc., IIIrd Semester

Nobel Laureates of India

- **Ronald Ross - Physiology**

Ronald Ross (born 1857), Almora, India, was awarded the Nobel Prize in Physiology or Medicine in 1902 for his work on malaria.

- **Rudyard Kipling - Literature**

Rudyard Kipling (born 1865), Mumbai, was awarded Nobel Prize in literature in 1907. He remains the youngest ever recipient and the first English language writer to receive this prize.

- **Rabindranath Tagore - Literature**

Rabindranath Tagore (1861-1941) received traditional education in India before traveling to England for further study. He was awarded Nobel Prize in literature in 1913 for his work 'Gitanjali'.

- **Abdus Salam - Physics**

Abdus Salam (1926-1996) born in undivided Punjab and a citizen of Pakistan shared a Nobel Prize in Physics in 1979, with Steven Weinberg for his work on 'Electroweak Unification'.

- **Sir Chandrasekhara Venkata Raman- Physics**

Sir C.V. Raman (1888-1970) was awarded Nobel Prize in Physics for the year 1930.

- **Hargobind Khurana - Physiology**

Hargobind Khurana (born 1922), a person of Indian origin, shared the 1968 Nobel

Prize in Physiology or Medicine for his work on genes.

- **Subrahmanyam Chandrashekar - Physics**

A person of Indian origin, was awarded Nobel Prize in Physics in 1983 as a U.S. citizen.

- **Mother Teresa - Peace**

Mother Teresa (1910-1997) was born in Skopje, then a city in Ottoman empire. She was of Albanian origin. She won the Nobel Prize for Peace in 1979.

- **Amartya Sen - Economics**

Amartya Sen (born 1933) was the first Indian to receive the Nobel Prize in Economics, in 1998 for his work on 'Welfare Economics'.

- **V.S. Naipaul - Literature**

Vidyadhar Surajprasad Naipaul was born in 1932 into a family of North Indian descent living in Chaguanas. He won the Nobel Prize in literature in 2001.

- **Kailash Satyarthi - Peace**

Awarded Nobel Peace Prize in 2014 jointly with Malala Yousafzai "for their struggle against the suppression of children and young people and for the right of all children to education".

Shruti Dobhal

M.Sc., IIIrd Semester

The Girl was Moon

It was a cold night
It was all quiet with some light
I saw the most beautiful sight and I was delighted
I saw its face and thought to chase
I was wondering, how could it come in my hand
She was shining in the night with sky
Clouds around her and starts surrounding her
I thought how
What shall I do now
She was far from my reach
But not far from my heart
Which was playing a budding bard.
She was looking at me from behind the clouds
As it was monsoon the rain was back again
Rain was night's host
Which scared me like a ghost
She vanished in no time
I thought she wasn't mine
I took shelter and stood under with lots of hope
That she would be back again and thrill again
I waited for hours and got no reply
It was thundering and lightning
I thought she was capturing my photograph
It was drizzling
She came back even better than last
We fell in love and I raised my glove
The stars came back twinkling
Around her showing the approval
I wasn't in sorrow as I shall meet her tomorrow
The girl was moon and I will meet her soon.

Himani Thakur
B.Sc., IVth Semester

Absolution

I talk through myself to me
To the river that meets the sea
Which is always flowing and talking back
Happy to move, happy to rest.

I talk through myself to the trees
And to each falling leaf that falls, spinning
Carrying all the weight of the earth
Like we carry the weight of love.

I talk through myself to the people of the world
And tell them to not follow my path to
extinction
It needs the perfect exchange of the soul
For a few words with no real meaning.

I talk through myself to the wilderness
To the crickets and the bees
And tell them to never stop
Or the child in me would cease to breathe.

I talk through myself to another heaven
And a hopeless hand that carries silence
I demand absolution for dying too soon
And now wait silently, living in eternity.

Nikhil Godiyal
M.A. (Eng.), IVth Semester

भारतीय नारी तब और अब

विश्व के समाजों में सिर्फ भारतीय समाज ही एक ऐसा समाज है जहाँ नारी को देवी स्वरूप माना जाता है तथा सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। इस समय अनेक विदूषी महिलाएँ हमारे भारतीय समाज में हैं। यही नहीं उस समय महिलाओं को अपना जीवनसाथी चुनने की भी छूट थी। परन्तु जैसे-जैसे समय बीतता गया भारतीय समाज में नारियों की स्थिति दयनीय होने लगी जब भारत पर बाहरी आक्रमण हुए और आक्रमणकारियों द्वारा महिलाओं की अस्मिता को छलनी किया जाने लगा तो उससे भारतीय समाज में एक डर व्याप्त हो गया और लोग परिवार की महिलाओं को परदे में रखने लगे। इससे उनकी शिक्षा प्रभावित होने लगी।

अशिक्षित होने के कारण नारी पर अनेक अत्याचार अपनी ही समाज में पुरुष करने लगे। स्वतंत्रता के बाद नारी शिक्षा पर जोर दिया जाने लगा। धीरे-धीरे समाज में शिक्षित लड़कियों का प्रतिशत बढ़ा और आज आलम यह है कि लड़कियाँ लड़कों से कई आगे हैं। पहले सेना में महिलाएँ सिर्फ चिकित्सा के क्षेत्र तक ही सीमित थी, लेकिन आज महिलाएँ पायलट भी हैं। आज सानिया मिर्जा, इंदिरा गाँधी जैसी महिलाएँ भी इस देश में हुई हैं। आज सुषमा स्वराज, सोनिया गाँधी जैसी महिलाएँ देश की राजनीति में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं एवं कल्पना चावला जैसा सितारा आज भी आकाश में जगमगा रहा है। एक नवीनतम उदाहरण है पी.वी. सिन्धु जिन्होंने भारत को ओलम्पिक में बेडमिंटन में रजत पदक दिलाया है।

आज के युग में नारी एक लम्बा सफर तय करके समाज में अपने महत्व को दर्शाती है और अपने दशा को और बेहतर बनाने की कोशिश करती है।

प्रेम शर्मा

एम.एससी. (जन्तुविज्ञान), प्रथम सेमेस्टर

मैं समाज हूँ

मैं समाज हूँ, मैं हर पल तुम्हारे साथ रहूँगा।

कभी मित्र बन कर कभी शत्रु बनकर

कभी पड़ोसी बन सदैव तुम्हारे साथ रहूँगा।

कभी हिम बन तुम्हारे तन मन को शीतल कर दूँगा

मैं समाज हूँ मैं सदैव तुम्हारे साथ रहूँगा।

दृढ़ निश्चय कर बढ़ते तुम मैं नत मस्तक हो शीश तاج बन जाऊँ

डगमगाये कदम अगर मैं आलोचना का पहाड़ बन जाऊँगा

मैं समाज हूँ मैं भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के नाम से जाना जाता हूँ

मैं ही शक्ति बन, तुम्हारी प्रेरणा बन जाता हूँ

मैं ही घृणा की तपीस दे, तुम्हें सोने सा चमकाता हूँ

मैं ही करुणा के ताल में, तुम्हें कमल सा खिलाता हूँ

मैं तिरष्कार करता हूँ सदैव तुम्हारा, फिर भी तुम मेरे मन मोह लेते

मैं समाज हूँ, मैं सदैव तुम्हारे साथ रहूँगा

जब-जब तुम मेरे हित के लिए कदम बढ़ाओगे।

तब-तब मुझे चट्टान की तरह अपनी राह के आड़े पाओगे

क्योंकि मैं समाज हूँ यँही न तुम आगे बढ़ने दूना।

मैं समाज हूँ मैं सदैव तुम्हारे साथ रहूँगा

मैं सदैव तुम्हारी राह में तपिश व काँटे बिछाऊँगा।

मैं समाज हूँ मैं ऐसा ही सदैव रहूँगा

मैं समाज हूँ मैं सदैव तुम्हारे साथ रहूँगा।

शशि प्रकाश

प्रयोगशाला परिचर, रसायन विज्ञान विभाग

Science Writing: To Develop Scientific Temperament among Common Mass

Science is generally considered as a subject for specific group of people who had studied science in their curriculum. But if we observe all the things around us, every single thing is working on some scientific principle. Starting from our day in the morning with tooth paste to switching off the lamp during bed time in night, our life runs smoothly due to science. Therefore, it becomes an important duty of scientific community to communicate science in such a manner so that it can be understood by non scientific community as well. Scientists do a lot of scientific writing in various journals which are written by scientists and studied by scientific community. This results in a gap of scientific knowledge among common mass. If each and every aspect of science related to the betterment of our livelihood will be communicated in a lucid manner, our society will be benefitted. For scientific writing, the writer should focus on the following points:

- Appropriate selection of topic and collection of relevant information.
- While writing an article audience must be kept in mind. It is very important aspect that information must be presented in an interesting manner keeping readers in mind.
- Information must be complete and supported by relevant facts. A text supported by diagrams and photographs is easy to understand.
- The content should be clear and concise.
- Language should be easy to understand. Avoid using complicated words.
- Spellings of scientific terms must be checked properly. Precise words should be used.
- Avoid using abbreviations in the text, except for units of measurements.

- Last but most important point is plagiarism i.e. use of others' words, ideas, images etc. without citation is plagiarism. It is an offence. This can easily be avoided by giving references and mentioning the source of information.

Therefore, dear students, I find our college magazine "Pragya" as a strong medium to communicate to you about science writing skills, so that you may enrich the society in future by disseminating scientific information. It is most important to educate everyone about the role of science in our comfortable lifestyle like power generation (Hydroelectric, Thermal, Nuclear etc), household appliances (Microwave, Geysers, Induction, Refrigerators, Vacuum Cleaners etc) and many other related topics. Government of India promotes scientific writing by publishing science magazines like Vigyan Pragati (Hindi) and Science Reporter (English) by CSIR (Council for scientific and Industrial Research). Thus, if common mass will acquire scientific knowledge, it will result in more innovations and more development of the country. Moreover, one can make career in science writing as a science writer or scientific journalist by communicating research discoveries, scientific achievements, critical science issues to the public. I would like to end with this quote by Thomas-

"Science is simply common sense at its best".

Dr. Manisha Uniyal
Assistant Professor
Department of Zoology

मातृ – भूमि के प्रति समर्पण

- आंख मूंद के देख रहा हूँ देश के वीर जवानों को,
खुल रही हैं आखें देख के, वीर सपूतों के बलिदानों को।
- सोच रहा हूँ मैं भी लड़ने के लिये जाऊँ,
दस-बीस दुश्मनों के शीश काट के, मातृभूमि को चढ़ाऊँ।
- कह रहा हूँ मैं भी एक दिन मातृभूमि का ऋण चुकाने जाऊँगा,
तुम एक हो या हजार, बिन मारे वापस न आऊँगा।
- सुन लो देश के दुश्मनों वो दिन भी आयेगा,
लड़ेगा पूरा भारत वर्ष, उस दिन हमसे तुम्हें कौन बचायेगा।
- होगा वो मंजर भी, जब शहीदों के बेटे-बेटियाँ बंदूकें थामेंगी,
थर-थर कांपेगी तुम्हारी रूह तुम्हारी धरती, जब वो गोलियाँ दागेंगी।
- हर एक आँसू का वो बदला लेनी आयेंगी,
तुम्हारी धरती तुम्हारी आत्मा, झुकने की गुहार लगायेंगी।
- मर भी गए हँसते – हँसते देश के काम तो आएंगे,
देश हमें याद रखे, हम मातृभूमि के लाल कहलाएंगे।
- किस्मत वाले होते हैं वो लोग जो देश का ऋण चुकाते हैं,
तिरंगे में लिपटे हुए, देश को गौरवान्वित कर जाते हैं,
और भारत माँ की याद दिलाते हैं।

कैलाश जोशी
एम.एससी., जन्तु विज्ञान

जिन्दगी की हलचल

दुनियाँ कितनी बड़ी हैं,
ना जाने कितने रंगों से सजी है।
ढेरों खुशियाँ और हजारो गम,
फिर भी इंसान कभी तोड़े ना अपना दम।
वक्त ना थमे कभी,
हिम्मत ना टूटे कभी।
अरमान हजारो हो,
ख्वाइश सिर्फ एक हो।
अपनी मंजिल तक पहुँचे सभी,
न टूटे कोई ख्वाब कभी।
सब कुछ पाने को बस एक मंत्र है जरूरी
जी – जान से हो मेहनत जिसकी,
कदम चूमे किस्मत भी उसकी।

रचना
बी.ए., प्रथम सेमेस्टर

सफलता की राह

यह आवश्यक नहीं है कि सफलता प्रथम प्रयास में ही मिल जाए जो आज शिखर पर पहुँचे हैं वे भी कई बार गिरे हैं ठोकर खाई है उस शिशु को देखिए जो अभी चलना सीख रहा है। चलने के प्रयास में वह बार-बार गिरता है, किन्तु उसका साहस कम नहीं होता। गिरने के बावजूद प्रसन्नता और उमंग उसके चेहरे की शोभा को बढ़ाती ही है। जरा विचार करें, उस नन्हे से बीज के बारे में जो अपने अंदर विशाल वृक्ष उत्पन्न करने की क्षमता समेटे हुए है। यदि लक्ष्य स्पष्ट हो, उसको पाने की तीव्र उत्कंठा एवं अदम्य उत्साह हो तो अकेला व्यक्ति भी बहुत कुछ कर सकता है। विश्वकवि रविन्द्रनाथ टैगोर का यह कथन कितना सटीक है कि अस्त होने के पूर्व सूर्य ने पूछा कि मेरे अस्त हो जाने के बाद दुनिया को प्रकाशित करने का काम कौन करेगा। तब एक छोटा सा दीपक सामने आया और कहा प्रभु जितना हो सकेगा उतना प्रकाशित फैलाने का काम मैं करूँगा। हम देखते हैं जितना हम कर सकते हैं उतना करते चलें। आगे का मार्ग प्रशस्त होता चला जाएगा।

किसी ने कितना सुन्दर कहा है:-

जितना तुम कर सकते हो उतना करो, फिर जिसे तुम नहीं कर सकते उसे परमात्मा करेगा। जो व्यक्ति आपत्ति-विपत्ति से घबराता नहीं, प्रतिकूलता के सामने झुकता नहीं और दुख को भी प्रगति की सीढ़ी बना लेता है, उसकी सफलता निश्चित है। ऐसे धीर पुरुष के साहस को देखकर असफलता घुटने टेक देती है।

रोहित कुमार
एम.एस.डब्ल्यू., प्रथम सेमेस्टर

मरी नहीं जिंदा हूँ मैं

बस एक सफेद परिंदा हूँ मैं
 नाम नहीं कोई मेरा
 ना नाम तुम मेरा जानो
 मेरी धड़कनो को सुनो
 मेरी सिसकियों को पहचानो
 आज इंसाफ के दरवाजे पर खड़ी मैं
 अपनी रूह की मुक्ति माँगती मैं
 जो तुम दिला सकते हो मुझे
 मैं सो गई तो क्या हुआ
 तुम जगाओ सोए हुए इस देश को
 मैं तो थी एक आम लड़की
 पर कुछ लोगों ने बनाई मेरी पहचान ऐसी
 कि रो पड़े पूरे दुनिया वासी
 नहीं चाहती किसी के साथ हो ऐसा
 हुआ था अंजाम मेरा जैसा
 मरी नहीं जिंदा हूँ मैं
 बस एक श्वेत परिंदा हूँ मैं ।।

याचना पटेल

बी.एससी. (बायोटेक), तृतीय सेमेस्टर

पैगाम

कोई सोच रहा होगा,
 चलते हुए वक्त के लिए,
 कोई सोच रहा होगा,
 अपने आने वाले कल के लिए।
 इस जन-जीवन में ऐसा भी कोई होगा,
 जो कोसता हो अपने आप को अपनी फूटी
 किस्मत के लिए।
 लेकिन बुझदिल इंसान ये भूल जाता है कि
 जो अंधेरी राहों में भी
 उजालो का पैगाम लाये,
 वो सिर्फ इंसान नहीं
 खुदा का नेक बंदा कहलाये।
 वक्त न कभी रूका, न कभी थमेगा दोस्तो।
 जिन्दगी की राह में न कोई साथ आया था,
 न ही कोई साथ जायेगा दोस्तों।
 ये वक्त है अपने हौसलों में उड़ान भरने का,
 देखे हुए हर सपने को पंख लगाने का।
 जिन्दगी में कुछ कर दिखाने का
 हर अधूरे अरमानों को पूरा करने का।

रचना

बी.ए., प्रथम सेमेस्टर

क्या हो गया है इंसान को?

आज क्या हो गया है इंसान को?
 क्यों कर रहा वो पेड़-पौधों का विनाश?

क्यों कर रहा है वो इस धरती का शोषण
 जिसने किया है उसका सदियों से लालन-पोषण।

उजाड़ रहा वो इन पेड़ों को बनाने के लिए फैक्ट्री और मकान,
 क्या उसको याद नहीं कि इन पेड़ों में भी होते हैं प्राण।

क्यों जानते हुए भी इंसान बन रहा अंजान
 क्या भूल गया वो कि इस धरती से ही हुआ है उसका निर्माण।

सब जानते हुए भी, कर रहा वो धरती का विनाश
 ना जाने क्या हो गया है आज इंसान को।

रिधिमा

बी.ए., तृतीय सेमेस्टर

Should the students be barred from politics?

"In war, you can only be killed once, but in politics many times."

- Winston Churchill

The recent examples of political violence which took place in Jawaharlal Nehru University, Hyderabad University, Film and Television Institute of India and were witnessed by the whole country, raised the long forgotten question once again. Is there any importance of politics during student-life? Should students be barred from politics or be allowed? There is much apprehension about the validity of student politics among the intellectuals and the common mass. These questions have divided people in two groups - one which supports student politics with some necessary changes in the principles and one which is directly against it. I consider myself as a person from the latter group. I believe students must be barred from politics as long as they remain students.

The students of today are the elite of tomorrow.

Students comprise a larger community of society. So much of social welfare depends upon their contribution at present as well as in future. What they think for their own and what they think for society must be ideal to accept? So, their vision should not be blurred and insight should not be corrupted by the biased principles of politics. Though politics perhaps is not a bad thing, if properly channeled and dedicated to country's good rather than making it selfish but the reality is different. Today's politics is an institution, used by the politicians to show the power and arrogance to others. It is a game of power-mongers who try to prove their fake superiority over others in order to control them. By sowing the seeds of nationalism in students' minds, they use them as machines to serve their own purpose. Students must be protected from being trapped in it.

Ayush Kumar
B.Sc., IInd Semester

Life of a Science Student

A Science student leads a life full of cares and worries. He cannot enjoy a sound sleep because sound is always surrounding his ears. The force of attraction always attracts him towards textbooks but simultaneously the force of repulsion repels him from studying them. The physical and chemical balance always balances his mind.

When he opens the chapter of 'Electric Current' in Physics, the current of fear and sadness begins to flow through his body. The fever of exam sucks his blood changing him into a solution. A science student has to study a

number of catalysts to increase or decrease the rate of his studies.

During exam when he forgets any step his brain begins to heat with friction and puzzle his mind. He gets puzzled by lengthy numerical problems and calculations. In the end, the life of a science student is indeed a specimen.

Barkha Paswan
B.Sc., IInd Semester

Terrorism

Today, expansion of terrorism in entire world has created a big challenge for entire humanity. Terrorism is unlawful, inhuman act to create fear and violence in order to pursue their political, religious and ideological aims. Terrorism is an act which is adopted by a group of zealots to coerce government to fulfill their demands. Terrorists involve themselves in destructive activities and they use deadly weapons and ammunition which is a major threat to our society. Explosion, shooting, suicide bombing and flight hijacking has become their preferred target of spreading terror in the world.

Middle East, Asian countries and Africa is being most affected areas by terrorist attack. Iraq, Afghanistan, Nigeria, Pakistan, Syria are mostly affected countries by terrorist attacks. The path of terrorism has been followed by many political organization both ruling and opposition parties to achieve their selfish goals. There are many terror groups around the world who call themselves the saviour of religions but reality is bitter. There are many more perceptions which are responsible and give rise to terrorism that is indoctrination, ethnicity and alienated intelligentsia. Political world had faced many terror attacks in past decades like 9/11 attack at World Trade Centre, in

2001 Beslan School, Russia incident in which terrorist killed around 186 children. In 26/11 attack, Mumbai around 166 people died and several injured. In another terrorist attack Peshawar School, many innocent students died. The list is too long and still the number of terror attacks is increasing which has led to big challenge for entire world.

ISIS, Al-Qaeda, Taliban, Tehrik-i-Taliban Pakistan, Boko Haram, Al-Nusra front, Hezbollah, Hamas, these are terrorist groups which are the biggest threat to civilization.

Now the world is trying to find out a solution to eradicate terrorism. Many hard steps have been taken by western powers to end terrorism with the help of deadly weapons. Although terrorists have different ideologies and they are spreading their ideologies among kids and young men. We all should come together with humanitarian ideologies and it will be a weapon to kill ideologies of terrorists, to make the earth a better place.

Prashant Verma
B.A., IIIrd year

Fashion

It works life time, always in motion
It's hard to catch up
with this ever changing notion
we trip, we fall
We struggle, we crawl
To keep up with what's in 'Vogue'
It's a drug, in spite of being rough
The ritzy clothes, the expensive shoes

Those blingy accessories in all possible
This mania taken as a religion now
Extreme devotion that can't knock anyhow
We all surrender to this craze
These diverse options create a haze
It's fetish we follow with raging passion

It's what we call fashion.

Shivangi Dabral
B.A., IVth Semester

बेटी का सफर

कली जैसी हूँ मैं खिल जाने दो
मीठी खुशबू हूँ मैं फैल जाने दो
मत मारो अब मुझे माँ
जीवन की ज्योति जलाने दो
मैं एक बीज हूँ अंकुरित हो जाने दो
मैं एक डरी सहमी आँखे हूँ देख लेने दो
मैं तो तेरी ही कोख हूँ पनप लेने दो

हाँ माँ एक लड़की हूँ मैं जन्म लेने दो
छुप जाऊँ तेरी आँचल में मन चाहता है
गोद में सो जाऊँ तेरी, दिल कहता है
रूह डर जाती है मेरी न जाने अब क्या होगा
जब तू भी साथ ना हो माँ
तो कौन होगा मेरा माँ

आखिर जन्म दिया माँ तूने मुझे
खुशियों की नजर ना लग जाए मुझे
पापा की हाथों में खिल रही हूँ आज
अपने सपनों की दुनिया बुन रही हूँ आज
जीने दिया मुझे ये दुनिया देखने दिया माँ
इतनी सुन्दर है मेरे सपनों की ये नगर माँ

फिर ये काली घटायें कैसी छाई
पापा के रूपों पे आई ये कैसी शहनाई
मोहर है नीलामी की इन लोगों पे
और सीना तान खड़े हैं मेरी चौखट पे
कैसी दुनिया है ये बिल्कुल अनजानी सी
फिर छिप जाने दो मुझे तुम्हारे आँचल में माँ
नहीं आने दो मुझे इस दलदल में माँ
बचा लो ना माँ इन काली घटाओ से
रूपों के इन बेसुरे तानों से

अब तू भी नहीं आ पायेगी माँ
इतनी दूर हूँ जो तुझसे
अब मैं तेरी वो बिटिया नहीं माँ
बनी हूँ राख इस अग्नि से।

आस्था सिंह
बी.ए., प्रथम सेमेस्टर

सफलता

जीवन में सफलता पाने को
एक दृढ़ निश्चय कर जाओ
नहीं छोड़ेगे एकाग्रता अपनी।

हर मोड़ बहुत कठिनाई का यहाँ
सोच-समझ कर चलना है
जीवन में आगे बढ़ने को
मेहनत का मार्ग ही चुनना है।

लाख आए चाहे उसमे कठिनाई
पीछे नहीं मुड़ना है
हर एक को मेहनत से कार्य करके
फल की इच्छा न करनी है।

एक बार असफल होने पर
यूँ ही नहीं घबराना है,

असफलता के पीछे ही सफलता है
यह विचार मन में लाना है।

कभी किसी को पीछे न करने की
मन में इच्छा लानी है,
पर उससे आगे बढ़ने की
हर कोशिश हमें निभानी है,
दोनों बातों में अंतर है,
जान लिया तो सफलता तुम्हारे कदमों में।

मेहनत करके सब पाना है,
धोखा नहीं दिखाना है,
मेहनत रंग लाती है
धोखा झुलस जाता है।

दिशा गोयल
बी.एससी., प्रथम सेमेस्टर

उम्मीद

कही से आ गयी है, तितली
मन को भा गयी है, तितली
नन्ने पंखों से ही, सही
उड़ने को बेताब है, तितली।

रंगों का मिलाप है, तितली
सुरों का अलाप है, तितली
स्वच्छ भारत कर रूप है, तितली
नन्हें बच्चों का स्वरूप है, तितली।

अक्षर से अक्षर का ज्ञान है, तितली
सर्व शिक्षा का अभियान है, तितली
फूलों सी मुस्कान है, तितली
बागों की मेहमान है, तितली।

विश्वास और नैतिकता सीख रही है,
तितली
कभी अकड़ से, हमें भी हँसा रही है,
तितली
कभी अकड़ से, तो कभी पकड़ से
नये रंगों में रंग रही है, तितली।

जंगल के मधुकोष सी, तितली
जवानों के जोश सी, तितली
देहरा की बहार है, तितली
सावन की मल्हार है, तितली।

धीरे-धीरे ही सही संभल रही है, तितली
अंधेरे में चांद सी चमक रही है, तितली
संस्कारों में बंध रही है, तितली
समाज में मिल रही है, तितली।

किसी का गर्व है, तितली
किसी का कर्म है, तितली
किसी की शर्म है, तितली
किसी का धर्म है, तितली।

आज ना सही कल अपनी पहचान
बनायेगी, तितली
जन-जन से जुड़ जायेगी, तितली
सभी का सम्मान पायेगी, तितली
हम सबका मान बढ़ायेगी, तितली।

तनुज प्रताप सिंह जादौन
समाज कार्य विभाग, प्रथम सेमेस्टर

Motivational and Inspiring Short Stories

The Elephant Rope

As a man was passing through the elephants' group. He suddenly stopped. He was confused by the fact that these huge creatures were being held by only a small rope tied to their front leg. No chains, no cages. It was obvious that the elephants could anytime break away from their bonds but for some reason, they did not.

He saw a trainer nearby and asked, "why these elephants just stood there and made no attempt to get away?" Well! the trainer said, "when they are very young and much smaller we use the same size rope to tie them and at that age, it's enough to hold them. As they grow up, they are conditioned to believe they cannot break away. They believe the rope can still hold them so they never try to break free".

The man was amazed that these elephants could at any time break free from their bonds but because they believed they couldn't, they were stuck right where they were.

Potatoes, Eggs and Coffee Beans

Once upon a time, a daughter complained to her father that her life was miserable and that she didn't know how she was going to make it. She was tired of fighting and struggling all the time. It seemed just as one problem was solved, another one soon followed.

Her father, a chef, took her to the kitchen. He filled three pots with water and placed each on a burner. Once the three pots began to boil, he placed potatoes in one pot, eggs in the second

pot, and ground coffee beans in the third pot. He then let them simmer and boil, without saying a word to his daughter. The daughter moaned and impatiently waited, wondering what he was doing.

After twenty minutes he turned off the burners. He took the potatoes out of the pot and placed them in a bowl. He took out the eggs and placed them in a bowl.

He then took the coffee out and poured it in a cup. Turning to her, he asked. "Daughter!, What do you see?"

"Potatoes, eggs, and coffee", she hastily replied "Look closer" he said, and touch the potatoes." She did and noted that they were soft. He then asked her to take an egg and break it. After peeling off the shell, she observed the hard - boiled egg. Finally, he asked her to sip the coffee. It's rich aroma brought a smile to her face.

"Father, what does this mean?" she asked. He then explained that the potatoes, the eggs and coffee beans had each faced the same adversity of the boiling water.

However each one reacted differently.

The potato went in strong but in boiling water, it became soft and weak. The egg was fragile with the thin outer shell but in boiling water the inside of egg became hard. However, the ground coffee beans were unique. After they were exposed to the boiling water, they changed the water and created something new. "Which are you" he asked his daughter. "When adversity knocks on your door, how do you respond? Are you potato, an egg or a coffee bean?"

Shreya Deorani
B.Sc., IVth Semester

Safety for Girls

The harsh reality is that many disgraceful crimes are increasing day by day with women all over the world whether it is America, Asia or Europe. No country has ever been able to provide 100% safety to these women who are seen as daughters, sisters, mothers etc. but are being treated like animals by some disgusting people of the society. That is why personal safety has become a very important issue to everyone, but especially for women. Being exhausted seeing such activities with the innocent, many personalities, organisations have taken steps to teach self-defense techniques regularly. There comes the need of some basic self-defense techniques, tips and precautions that girls can learn to help themselves in such adverse situations.

- **Always be confident:** A confident woman is very hard to break down. Whatever the situation is, whatever thoughts are coming in your mind, you have to hide those negative feelings and still act as a confident one. Are you alone in the lift with a stranger late at night? Just call someone over phone and don't pay any attention to that stranger so that he dares not harbour any evil designs against you.
- **Carry some safety precautions:** Always have some things like chilli powder, noise making instrument, tear-gas spray and most of all, never forget to have a mobile phone with you because, whenever you smell the bad intention of someone out there, get ready with your phone and type the emergency number for safety. If any attack happens, call without any delay.
- **Don't ever be quiet:** If a person is trying to abuse you then shout as loud as you can. A person with such bad intentions never likes to be exposed of the mob and this is indeed a very important thing.
- **Don't give up:** If the driver drops you in a locality where you are not supposed to be and then tries to take advantage of you, don't ever give up and beg of him to leave you. Instead strike him hard. But don't misuse this action to them who are just staring at you continuously because it's their human nature. Thus, realize that it's actually the time to save yourself instead of taking him to the prison at that moment.

Mohini Rana
M.Sc., 1st Semester

True Friends *who always seem wrong...*

Human beings are referred as 'social animals'. Why is it so? Iterating this question to my mind, it replied, "because we live in a society, having status, where we are supposed to co-operate with other beings" but desire to own high status in the society or in other words, we can say 'getting modernized' take us into the blind race, where we don't know what our target is but we keep imitating others. It truly has venomous consequences. We malice our friends and those who keep imitating, buttering or flirting us, seem to be real friends, but they are only to fulfil their personal interests.

The age in which we are proceeding commonly known as 'Teenage', a very special but critical period of life. Indigenously speaking, this is a sort of mirage where the truth, the real care remains

latent while we are unable to realize the reality of people around us. It is a bitter truth but is with all.

Yes, our parents who are our true friends and are our guides. They are selflessly devoted to give us a bright future but always seem us wrong because they are always true to us and want our good. Sometimes, yes, the teachings and the manners which our parents impart us may irritate us, but instead of reacting to it badly, we should have patience and try to analyze what our mistake was.

As soon we realize our mistake, we naturally will be calm. Have we ever thought why do only parents always guide us, right or wrong? Why never our so called 'friends' guide us? Because, they really bother for us and are not selfish. Think of them who lack this precious gift of God in their

lives. Just ask them, how important and special is parental love and care.

You yourself will respect the precious guidance of your parents and then see how proud they will feel for you. When you do so, they will think as their young plant which they have constantly been watering with their love and care will surely give

them sweet fruits and will grow into a tree which will not only be beneficial to them but will have the potential to serve mankind.

Mehjabeen Siddiqui

B.A., Ist Semester

"Every Saint has a past and every sinner has a future"

Many people go through their lives carrying the burden of guilt or regret over past mistakes. For some, the weight is such that it crushes their sense of self - worth and they are unable to live a normal life. They go to their grave haunted by the wrongs they have done.

Most of us know, even if we do not remember it all the time, that every action has an equal and opposite reaction, and that we reap the seed we sow. This universal law warns us of the consequences of bad karma, but it also encourages us to do good karma. If one has done something bad, repentance cannot undo it. But one can learn from it and direct one's energy for doing good.

Positive and charitable actions lift our spirits and bring benefit to others. They keep the mind engaged in a healthy way, help one forge good relations and, when done repeatedly, creates a habit of doing good. Soon, a time comes when good deeds outweigh past mistakes, and the person not only feels happy himself, but is also a source of support for others. This is how character transformation takes place.

There are several examples in history of who left behind an ignoble past and achieved greatness: St Augustine is perhaps the most famous. A hedonistic party goer who fathered an illegitimate son, he eventually heeded the pleas of his devout mother and became a catholic priest. Today, he is regarded a 'Doctor of the Church', a title given to saints of particular importance.

Similarly, Angulimala, a serial killer, became a monk after an encounter with the Buddha and Valmiki gave up life as a robber and meditated for years in penance before he went on to compose

the epic *Ramayana*. He is now revered as 'Adi Kavi' or the 'first poet', who defined the form of Sanskrit poetry.

These examples show that no one is beyond redemption and each one of us has the potential for spiritual progress regardless of our background. As Oscar Wilde said, "The only difference between saint and sinner is that every saint has past and every sinner has a future."

This is one reason criminal justice system in some countries encourage the convicted to do something charitable to make amends for a mistake or do community service fully or partially in lieu of other forms of punishment such as imprisonment or paying a fine. Even where such provision does not exist, convicts get reduced punishment if they show remorse or cooperate with law enforcement agencies, and sentences are commuted if the convict has a record of good behaviour. Such measures aim to encourage reform so that convicted criminals emerge better persons from their experience of crime and punishment.

While one cannot change one's past, its negative influence on the present and the future can be eliminated by changing one's way of thinking and behaviour. The key is to turn over a new leaf. A mistake does leave a stain on one's life, but repeatedly thinking about it only darkens the stain. Instead, do good, so one can create bright spots that will eventually shine and no one notices the stains.

Prashant Dobriyal

B.Sc., IVth Semester

आध्यात्मिक पहेलियाँ

बोलो कौन थी वह, किसकी थी परिणिता,
जो थी चक्रवर्ती राजा की पुत्री
और चक्रवर्ती राजा की पुत्रवधु
अरे! चक्रवती राजा की ही पत्नी,
एवं चक्रवती राजा की ही थी महतारी
धन सम्पदा से ओत-प्रोत
जिन्दगी फिर भी वन में गुजारी।

सशरीर स्वर्ग को जाऊंगा
धरती पे ना आऊंगा
प्रतिज्ञा वो कि किन्तु ऐसा कुछ ना हुआ
बोलो कौन राजा धरती-आकाश मध्य
आज तक लटका हुआ।

मटकी भर राधे जमुना जल की
बिखरी जुल्फे गाल पर लटकी

मटकी मही थी रटना नट की
बोलो कौन, आन मिले जो
राधा पर अटकी
अटकी ना रही गति घूँघट की
फिर सिर से दार दर्ई मटकी, कटकी-2 हो गई मटकी-मटकी।

एक थी ऐसी भारतीय नारी
पति की थी जो प्रेम पुजारन
भक्ति करती पति परमेश्वर की
पति को मानती थी भगवान
सतीत्व की जिनकी परिक्षा लेने
घर आए त्रिदेवों को भी बनना पड़ उनके आंगन बाल-गोपाल।

भगवान श्री हरि के सत्रहवें अवतार
जिन्होंने दिया श्रीमद्भागवत का सार
अट्ठारह पुराणों चारों वेदों की रचना कर
मानव जाति का किसने किया कल्याण।

विशाखा पाचाँल
बी0ए0, द्वितीय सेमेस्टर

क्या होती है नारी

अपनी इच्छाओं को त्याग कर,
हर कठिनाई पार कर,
परिवार को सुख पहुँचाने वाली कौन
“नारी”

हर कठिनाई पार कर,
धैर्य की देवी है,
खुद दुःख सहन कर
दुसरो को सुख देनी वाली
“नारी”

ममता से परिपूर्ण है
हर क्षेत्र में आगे है

हर कार्य को मेहनत से कर
सफलता पाने वाली कौन है
“नारी”

हर संघर्ष सहन कर
जीवन में आगे बढ़कर
जीत दिलाने वाली कौन है
“नारी”

पुरुष-प्रधान देश में
सिर उठाकर
कार्य में परिपूर्णता दिखाकर
सफलता के मार्ग पर बढ़ने वाली कौन है
“नारी”

दिशा गोयल
बी.एससी., प्रथम सेमेस्टर

बड़ी जरूरत है

- 1) मुख पर आन की, कॉलोनी में शान की,
व्यक्ति को सम्मान की, बड़ी जरूरत है।
- 2) बिजली को तार की, चोर को मार की,
निरक्षर को शिक्षक की, बड़ी जरूरत है।
- 3) नाव को नाविक की, मनुष्य को ईश्वर की,
मुखों को सलाह की, बड़ी जरूरत है।
- 4) शराबी को शराब की, जवाहर को गुलाब की,
पुस्तकालय को किताबों की, बड़ी जरूरत है।
- 5) चित्रकार को चित्र की, फैशन वालों को इत्र की,
सभी को अच्छे मित्र की, बड़ी जरूरत है।
- 6) फिल्मों में हीरों की, युद्ध में वीरों की,
प्रदर्शनी में तस्वीरों की, बड़ी जरूरत है।
- 7) आजादी में क्रान्ति की, विश्व में शान्ति की,
चेहरे पर मुस्कान की, बड़ी जरूरत है।
- 8) घर में मेहमान की, रोज स्नान की,
शिष्य को शिक्षक की, बड़ी जरूरत है।
- 9) हिन्दुस्तान को हिन्दी की, हिन्दी को सम्मान की,
हमे मातृभाषा अपनाने की, बड़ी जरूरत है।।

निधि सैनी

एम.एससी. (रसायन), द्वितीय सेमेस्टर

कॉलेज के कुछ पल

कॉलेज के दिन की बात कुछ निराली है
कुछ यादें, कुछ बातें अलग ही सुहानी है
रोज सुबह कॉलेज को आना और फिर शाम को घर को
जाना
पार्किंग में बैठकर एक दूसरे पे कमेंट उड़ाना
ना जाने कहाँ से आती है इतनी बातें, लेकिन दिल को
भाती है बातें
रोज सुबह क्लास में लेट से आना फिर नए-नए बहाने
बनाना
टीचर के क्लास में होने से वट्सअप पर गप्पें लड़ाना
क्लास में लास्ट बेंच पर बैठकर जोक बनाना
फिर चहरे पर मुस्कुराहट लाना
फिर टीचर के पकड़ने पर, नई-नई बातें बनाना
रोज कॉलेज में नई-नई पिक खिंचवाना, फिर डी.पी.,
एफ.बी. पर लगाना
फिर पेपर से पहले वाली रात दोस्तों से नोट्स माँगना
फिर दिवाली जैसी रौनक रूम पे लाना
एक बार बुक की रीडिंग लगाना और फिर पेपर में
अनाप-सनाप लिख के आना
ये हैं कॉलेज लाइफ की निराली बातें
हर पल, हर बातें बना देती है जिंदगी की यादें।

मीता पैन्थूली

बी.एड.

हौसला

हौसले को ना झुकने देना कभी
झुक जाओ तुम पर झुकने न देना, सिर कभी।
कुछ पाना है तुम्हें, बड़ी दूर जाना है तुम्हें,
आसमां ढका है बादलों से,
बस तुम्हें सूरज बन छा जाना है।
अंधकार की जब रात आएगी,
भय से तेरी रूह कांप जाएगी।

जब दरिया को नहीं मिलेगा कोई किनारा
तब क्या करेगा अकेला, बेसहारा,
तब, तेरा हौसला ही तुम्हें सहारा देगा

तू सारे दुख, सारी सुख-सुविधा
सारी मोह-माया को,
अलविदा कहेगा।

फिर एक उजियाली सुबह होगी,
मेहनत से सींची तेरी बगिया होगी,
उस दिन,
जब तेरी आँखों में आँसू आएगा,
तब तेरा हौसला ही तुझे धैर्य बाँधाएगा।

निशिता चौहान

एम.एससी., प्रथम सेमेस्टर

Rio Olympics

Olympics as we know of it today is a leading international sporting event in which thousands of athletes all around the world participate in many competitions, owing its existence to Ancient Greece, the ancient Olympic Games, which were held in Olympia, Greece, from the 8th century BC to the 4th century AD. The Olympic Games reached their zenith in the 6th and 5th centuries BC, but then gradually declined in importance as the Romans gained power and influence in Greece. While there is no scholarly consensus as to when the games officially ended, the most commonly held date is 393 AD, before being founded again as the International Olympic Committee (IOC) in 1894 by Baron Pierre de Coubertin. The IOC is the governing body of the Olympic Movement with the Olympic Charter defining its structure and authority.

The 2016 Summer Olympics officially known as the Games of the XXXI Olympiad and commonly known as Rio 2016, was held in Rio de Janeiro, Brazil, from 5 to 21 August, 2016. More than 11,000 athletes from 207 National Olympic Committees, including first time entrants like Kosovo, South Sudan and the Refugee Olympic Team took part. With 306 sets of medals, the games featured 28 Olympic sports, including Rugby Sevens and Golf, which were added to the Olympic program in 2009. These sporting events took place at 33 venues in the host city and five at São Paulo, Belo Horizonte, Salvador Brasília, and Manaus.

Brazil unfurled a vast canvas celebrating its rainforest and the creative energy of its wildly diverse population in welcoming the world and the 31 Olympics games in Rio de Janeiro at the pulsating beat of samba, bossa nova and funk.

The opening ceremony was decidedly simple and low tech, a reflection of Brazil's tough economic times. In one of the world's most unequal societies, the spectacle celebrated the culture of the favelas, the slums that hang Net vertically above the renowned beaches of Rio and Ring the Macarena. The former Brazilian marathon runner, Vanderlei Cordeiro de Lima

got the honor to light up the Olympic cauldron to mark the start of the 2016 Games.

India first participated at the Olympic games in 1900, with a lone athlete (Norman Pritchard) winning two medals-both silver-in athletics. The nation first sent a team to the Summer Olympic Games in 1920 and has been participating in every Summer Games since then. India has also competed at several Winter Olympic Games beginning in 1964. Indian athletes have won a total of 28 medals so far, all at the Summer Games. For a period of time, Indian national field hockey team was dominant in Olympic competition, winning eleven medals in twelve Olympics between 1920 and 1980. The run included 8 gold medals in total and six successive gold medals from 1928-1956. In 2008 Beijing Olympics, Abhinav Bindra won gold in the 'Men's 10 metre air rifle' event becoming the first Indian to win an individual gold medal at the Olympic Games. Vijender Singh got the country of winning first medal in boxing with his bronze medal in Middleweight category. Wrestler Sushil Kumar became the first Indian with multiple individual Olympic medals (bronze in 2008 Beijing Olympics and silver in 2012 Summer Olympics). Saina Nehwal won bronze medal in badminton in Women's singles getting the country's first Olympic medal in badminton. Pugilist Mary Kom became the first Indian woman to win a medal in boxing with her bronze medal finish in Women's flyweight category.

In 2016 Summer Olympics, 124 athletes became a part of Indian contingent. Amidst various controversies, wrestler Sakshi Malik's bronze which ended India's medal drought at the Rio Olympics is a testament to her fighting spirit- as quoted by the Hindustan on Aug. 19, 2016 followed by PV Sindhu who bagged a silver in women's badminton singles. This year Olympics was a women dominated affair especially for India where women athletes became the pride of our country. In spite of this India's performance at the Olympics has been a topic of heated arguments all over the country. Prime Minister, Narendra Modi's

directive shows that India is willing to look ahead and address issues rather than getting stuck in the review mode as usual as quoted in the Hindustan. India's history in the last three Olympics shows that we can match with the best athletes in the world provided that there is proper planning, monitoring and preparation. In the final analysis, though our sporting failures are interlinked with our economic and infrastructural weaknesses, we by no means lack the talent, skill and determination. Only proper

channeling of the available resources can ensure success in any future sporting endeavour. Whilst P V Sindhu, Sakshi Malik, Dipa Karmakar and Jitu Rai are nominated for 'Rajiv Gandhi Khel Ratna Award', India's highest sporting award. They continue to be a source of inspiration to many upcoming sportspersons.

Aparajita
M.Sc., IIIrd Semester

The Purpose of Life

I once heard the phrase that the best photographs of life come when you have no camera with you and what I have grasped it's meaning is that the best moments in our life are unplanned. Everyone (well most of us) has some personal goal even if one is not aware of it consciously. Some of us want to be the best student of the class, some of us will gladly work harder for a better salary and some of us want a better body. Even if you don't talk about them, human wants and desires are unlimited.

Now if you'll try to find the end zone of all our wants and desires, all our wants end in hope of gaining happiness.

We desire for something because we feel we are going to get happiness from it! So instead of making things and want your purpose, why not make happiness itself the purpose of living?

For example, you must have seen two people in the exactly same situation but with exactly different emotion. Sometimes we notice the people who have it at worst are usually the happiest. Even if you look around, the poor beggar kids, they have such innocent smiles in their eyes when having fun with each other. So this clearly proves that happiness is our own state of mind. It is not something that comes from the outside world. It comes from within, and the more we focus on this little fact, the more we are in tune with our inner peace.

But don't misunderstand me. It's not just how we manage our inner beliefs but also how we interpret our stimulus around us. For example, if someone big and muscular punches you, half of

you'll fight back, some of you will probably be scared and some of you will basically start plotting revenge against him later in life. Happiness is almost the same. People react in different manner in different situation. Some people have trained themselves to be extremely positive no matter what this makes all the difference.

Mind is a muscle and it gets stronger with practice. Not just that, it gets more resistant to stress and pressure over the time. But only if we train it to. Remember hammer breaks a glass but forges the steel. You have to unveil that side of yourself that's strong to withstand any distress and adversity. The basic opportunities and troubles in almost everyone's life are the same, everyone receives the same amount of sunshine, everyone gets old, falls ill, feels pain, everyone likes ice cream and hates the taste of bitter medicines, and everyone feels the love and kindness in their hearts. If you'll thoroughly look around, you'll notice there are people around us who are living the life at fullest, making most of their time here on earth and creating memories that are worth sharing and recalling at the old age with almost same amount of stress and obstacles in life as us. And it is not that only the special among of us are capable of doing that. It is in everybody. Everyone is capable of achieving a really strong congruent mental strength. The only hindrance is our thought process.

Neelamber Preet Thapa
B.Com., IInd Semester

क्या स्वच्छता अभियान बाहरी स्वच्छता ही है?

आज जब आप घर से बाहर कहीं घूमने निकलते हैं तो अधिकतम जगह कूड़ा फैला हुआ पाते हैं एवं नाक सिकोड़ कर दूसरों की निन्दा करते हुए आगे चले जाते हैं। ऐसे में उजागर हुआ “स्वच्छता अभियान।” स्वच्छता अभियान- हमारे प्रधानमंत्री द्वारा शुरू की गई वह सशक्त योजना है जिसकी कल्पना आज के युग में शायद ही किसी ने की होगी। गाँधी जी भारत को स्वच्छ देखना चाहते थे परन्तु मृत्यु के कारण यह सपना केवल कल्पना मात्र ही रह गया। ऐसे में प्रधानमंत्री जी ने उनका यह सपना पूरा करने के बारे में सोचा। इस अभियान का आगमन जोरो-शोरों के साथ हुआ एवं सबसे हर्ष का विषय तो यह है कि लोगों ने भी इसका स्वागत खुले दिल से किया। लोगों ने अपने आपको इस अभियान का हिस्सा बनाया। बच्चे हो या बूढ़े सब कूड़ा हटाने को अपना दायित्व समझने लगे एवं आज भी कूड़ा हटाने के लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं।

परन्तु अगर गौर किया जाए, तो क्या आस-पास का पर्यावरण साफ करना ही स्वच्छता अभियान का मतलब है? क्या सिर्फ भौतिक प्रदूषण मुक्त भारत ही ‘स्वच्छ भारत’ का एकमात्र लक्ष्य है? यदि इस विषय की गहराई में जाएँ तो हम पाएँगे कि एक और तरह का प्रदूषण है जिसके बारे में शायद कोई सोच भी नहीं रहा है परन्तु स्वच्छ भारत के लिए हमें उसे भी हटाना होगा और वह है- आंतरिक प्रदूषण। जी हाँ? हमारे अन्दर का कूड़ा। वह कूड़ा जो हमारे मनुष्य

समाज को जानवर के झुण्ड में बदलता जा रहा है। स्वच्छ भारत देश की प्रगति की एक महत्वपूर्ण सीढ़ी है परन्तु क्या आपको लगता है कि समाज में आपसी द्वेष-ईर्ष्या होने से देश की प्रगति हो पायेगी? जब तक समाज में छल-कपट रहेगा, जात-पात का भाव रहेगा, दूसरों के प्रति हीन भावना रहेगी एवं दूसरों को नीचा दिखाने की होड़ लगी रहेगी तब तक हमें विकसित भारत का ख्याल मन से निकाल ही देना चाहिए। भ्रष्टाचार या भ्रष्ट आचरण को भी समाप्त करना होगा।

प्रधानमंत्री ने तो अभियान का दायित्व हमें देकर अपनी जिम्मेदारी पूरी कर ली है परन्तु अब बारी है हमारी उनकी उम्मीदों में खरा उतरने की, जिससे हम भविष्य में शान से कह सकें- स्वच्छ भारत, सुन्दर भारत।

“कूड़ा-करकट देश से हटाओ
भारत की प्रगति को बढ़ाओ।
प्रधानमंत्री मोदी का यही है नारा-
स्वच्छ भारत, सुन्दर भारत हो हमारा।”

दीक्षा रतूड़ी

बी0एससी0 (ऐग्रीकल्चर) प्रथम वर्ष

दून मेरा शहर, मेरा हमसफर

दून शहर है मेरा जितना,
चाँहू सब चाहें इसको उतना।

नित वीरता की गाथा लिखता आई.एम.ए. अपना,
तो वन अनुसन्धान संस्थान शोध में अपार है कितना।

तीर्थों का समन्वय इतना, एक ओर ऋषिकेश
तो दूजी ओर हरिद्वार विस्तृत है कितना।

कभी टपकेश्वर शिवरात्रि का मेला है,
तो कभी झंडे जी का अद्भुत रेला है।
एक ओर पहाड़ों की रानी का डेरा है,
तो दूजी ओर सहस्रधाराओं का घनघोर बसेरा है।

चार धामों का उद्गम स्थल कहलाए,
पर्यटन से सम्भावनाएँ अपार दिखलाए।
विद्या का मंदिर, प्रकृति का संसार,
मन करे मेरा लूँ, जन्म यहाँ हर बार।

दून शहर है मेरा जितना
चाँहू सब चाहें इसको उतना।

डॉ. अरुण जोशी
डीएसटी-एसईआरबी
युवा वैज्ञानिक
वनस्पति विभाग

HUMAN DISEASES CAUSED BY VIRUSES

Sr.No.	Disease	Causative virus
1.	Influenza /flu	<i>Orthomyxoviruses</i>
2.	Chicken Pox/varicella	<i>Varicella zoster</i>
3.	Small Pox/Variola	<i>Variola virus</i>
4.	Measles / Rubeola	Measles or rubeola virus
5.	Rabies / Hydrophobia	Lyssavirus
6.	Mumps	Paramyxoviruses
7.	Poliomyelitis / Polio	<i>Polio virus</i>
8.	Trachoma	<i>Chlamydia trachomatis</i>
9.	AIDS [Acquired Immuno-deficiency syndrome]	<i>HIV [Human Immunodeficiency virus]</i>

HUMAN DISEASES CAUSE BY BACTERIA

Sr. No.	Disease	Causative Bacteria
1.	Cholera	<i>Vibrio Cholerae</i>
2.	Pneumonia	<i>Diplococcus pneumoniae</i>
3.	Typhoid	<i>Salmonella typhi</i>
4.	Tetanus	<i>Clostridium tetani</i>
5.	Diphtheria	<i>Corynebacterium diphtheriae</i>
6.	Whooping	<i>Bordetella pertussis</i>
7.	Tuberculosis [T.B.]	<i>Mycobacterium tuberculosis</i>
8.	Plague	<i>Yersinia [Pasteurella] pestis</i>
9.	Boils	<i>Micrococcus aureus</i>
10.	Leprosy	<i>Mycobacterium leprae</i>
11.	Meningitis	<i>Neisseria gonorrhoeae</i>
13.	Diarrhoeal	<i>Escherichia coli, shigella dysenteriae, salmonella</i>

THE PATHOGENIC PROTOZOON OF MAN

Sr. No.	Parasite	Diseases
1.	<i>Trypanosoma gambiense</i>	Gambian sleep sickness
2.	<i>Trypanosoma cruzi</i>	Chagas fever
3.	<i>Leishmania donovani</i>	Kala-azar
4.	<i>Entamoeba histolytica</i>	Amebic dysentery

THE PATHOGENIC PLATYHELMINTHES OF MAN

Sr. No.	Parasite	Diseases
1.	<i>Schistosoma</i>	Schistosomiasis
2.	<i>Taenia Solium</i>	Taeniasis / Cysticercosis
3.	<i>Fasciolopsis buski</i>	Fasciolopsiasis

contd.

THE PATHOGENIC ASCHELMINTHES OF MAN

Sr. No.	Parasite	Diseases
1.	<i>Ascaris lumbricoides</i>	Ascariasis
2.	<i>Enterobius vermicularis</i>	Enterobiasis
3.	<i>Wuchereria bancrofti</i>	Bancroft's filariasis elephantiasis

ARTHROPOD-BORNE DISEASES

Sr. No.	Vectors	Diseases Transmitted
A	INSECTS	
	Mosquitoes	
i)	<i>Anopheles</i>	Malaria
2)	<i>Culex</i>	Filariasis, Japanese Encephalitis
3)	<i>Aedes aegypti</i>	Yellow fever, Dengue Hemorrhagic fever [DHF]
4)	<i>Mansonia</i>	Filariasis
B	FLIES	
1)	House fly	Typhoid, Paratyphoid, Diarrhoea, Dysentery, Cholera, Tuberculosis
2)	Sand fly [<i>Phlebotomus</i>]	Poliomyelitis, Anthrax, Trachoma
3)	Tsetse fly [<i>Glossing</i>]	Kala-azar, oriental sore
3)	Louse [<i>Pediculus, Phthirus</i>]	Sleeping sickness
4)	Rat flea [<i>Xenopsylla</i>]	Epidermic Typhus, Trench fever, Relapsing fever, Bubonic Plague.
5)	Kissing Bug [<i>Panstrongylus</i>]	Endemic Typhus, Hymenolepiasis
		Chagas Dieses

Anil Kumar
M.Sc. (Zoology), Ist Semester

Stop Child Labour

Child labour is the practice of having children engage in economic activity, on part- or full -time basis. The practice deprives children of their childhood, and is harmful to their physical and mental development. Poverty, lack of good schools and growth of informal economy are considered as the important causes of child labour in India. Legislation across the world prohibits child labour. Child labour has existed to varying extents, throughout most of history. During 19th and early 20th centuries, many children aged 5-14 from poorer families worked in Europe. These children mainly worked in agriculture, home-based activities, factories, mining and in services such as news boys. Some worked night shifts lasting 12 hours. The work of children was important in pre-industrial societies as children needed to provide their labour for their survival and that of their group. Pre-industrial societies ever characterized by low productivity and short life expectancy, preventing children from participating in productive work would be more harmful to their welfare and that of their group in the long run. In pre-industrial societies, there was little need for children to attend school. This is especially the case in non-cliterate societies. Most pre-industrial skill and knowledge were amenable to being passed down through direct mentoring or apprenticing by competent adults.

UNICEF defines child labour differently. A child, suggests UNICEF, is involved in child labour activities if between 5 and 11 years of age, he or she did at least one hour of Economic activity or at least 28 hours of domestic work in a week, and in case of children between 12 and 14 years of age, he or she did at least 14 hours of economic activity or at least 42 hours of economic activity and domestic work per week. Children are

looked upon by us as a gift of God and they constitute about 36 percent of the Indian population but it is very shameful that about 73 million children who contribute about 13% of the child population are in the age of 10-14 are engaged in child labour all over the world. No child below 14 years of age should work in factory or any risky place. Child labouring can be reduced by offering income opportunities, improving health and safety in agriculture. The need of hour is the vocational and the ethical education right from the primary stage so that poor students can earn and learn simultaneously. We can hope that the education would make them aware of their plight and they would surely be able to choose other ways of earning their livelihood and not get exploited for money. Thus, it is the youth who can help the government in carrying out its efforts to check or eliminate child labour. Eliminating child labour will require committed citizens in every neighborhood to attack it at its roots. A systematic, sympathetic and sincere approach is necessary in our society, if we want to banish this evil practice completely.

Shivani Kaushal

B.Ed., Ist Year

आज फिर पहाड़ दिखा

आज फिर पहाड़ दिखा,
सोता दिल दहाड़ उठा।
नवचेतना खिल गयी,
मानों नयी सुबह हो गयी।

ये प्रकृति के उत्तम नजारे,
घटा के बादल कारे-कजरारे।
नैनो को लगते अति प्यारे,
जैसे बालक भोले - भाले।

लगता मानो जान है इनमें,
कहने को कुछ फिरते हैं।
सुन लो भईया कान लगाके,
राज की बात ये करते हैं।

दूर-दूर से आते सैलानी,
मसूरी पहाड़ों की रानी।
सुंदरता में वो अभिमानी,
दुनिया में उसके सब शानी।

कितना मज़ा पहाड़ों में है,
जंगल से आती दहाड़ों में है।
झरनों से गिरता जल सुंदर,
पेड़ों पर कूदे वन-बंदर।

मौसम का तुम हाल न पूछो
सुहावना अति प्यारा है।
न सर्दी इस दून में ज्यादा,
न गर्मी में जलता है।

इन्द्रधनुष के रंग है, इसमें
हरियाली का राजा है।
प्रकृति का इक घर प्यारा सा,
इन ही सबसे न्यारा है।

तनुज प्रसाद सिंह

एम.एस.डब्ल्यू. प्रथम सेमेस्टर

बचपन याद आता है

बचपन के वो दिन याद आते हैं,
अक्सर जब बच्चे बॉलीवुड के गीत गाते हैं,
वो पल शरारत के और गुड्डे-गुड़ियों संग
ब्याह रचाये जाते हैं,
अमीरी का भी हिसाब नहीं होता था
किताबों के 6 मंज़िले मकान हुआ करते थे
प्लास्टिक की कार और कागज़ के विमान
हुआ करते थे
वो पल आज भी जीना चाहते हैं
बचपन के वो दिन याद आते हैं।

बचपन मानो आज खो सा गया है
वो मौज भरी सुबह का सूरज सो सा गया है
वक्त ऐसे गुज़रा की कुछ पता ना चला,

जवान हो गए यकायक बचपन खो गया
आज भी हम बच्चे होना चाहते हैं
बचपन के वो दिन याद आते हैं।

बड़े हम शरीर से हैं, मन आज भी बच्चा है
जितना सच्चा कल था, आज भी उतना
सच्चा है
बड़े हम कितने ही हो जायें, हर बड़े के
भीतर बच्चा है
उस बच्चे को हम जीवित करना चाहते हैं
बचपन के वो दिन याद आते हैं।।

अभिषेक गौड़

एम.एससी. प्रथम सेमेस्टर

दास्ताँ वक्त

वक्त के सागर से चलता ये संसार है
जो खोया वो डूब गया, जो पाया वो
उस पार है,

जो जब जागा सुबह है उसकी
जो जब सोया तो अंधकार है

इसमें किसी की क्या साजिश है
ये तो वक्त की रफ्तार है, वक्त के
सागर संसार है,

वक्त को पकड़ना यूँ आसान न होगा
ये तो अदृश्य सा एक तार है।

समझा इस वक्त को जिसने तो वक्त
भी तैयार है

जागोगे बेवक्त तुम तो वक्त भी
बीमार है

इसमें किसी की क्या गुस्ताखी है
ये तो वक्त की एक मार है। वक्त के
..... संसार है,

कोई बन जाता है राजा तो कोई
फकीर का किरदार है
वक्त को अनमोल समझो यही जीवन
का सार है

फिर न कहना हमें चोट लगी थी
क्योंकि ये तो वक्त का वार है। वक्त
के सागर से संसार है।

नरेन्द्र सिंह राणा

बी.कॉम. प्रथम सेमेस्टर

Dengue Fever:

Causes, Symptoms and Ayurvedic Treatment

We are now in the middle of a dengue fever epidemic that has left many dead and many more sick and in pain.

Ayurvedic name of dengue fever is *Dandak Jwara*. Some other names are dandy fever, three days fever and breakbone fever. Dengue fever is a disease caused by one of the number of viruses. These viruses are spread by the bite of mosquitoes and are transmitted to the human body.

Causes of Dengue fever : If a mosquito carrying dengue fever virus bites a healthy human, the virus travels in the blood stream and then starts multiplying itself in the whole body. Dengue fever is not 'contagious', which means one person cannot pass it directly to another. Dengue is also a type of arbovirus, which is short for arthropod - borne viruses. The main virus causing dengue fever is carried by a mosquito named "*Aedes Aegypti*" which transmits the virus to humans through its bite. An organism that carries a disease, without actually developing the disease itself is called a vector. '*Aedes Aegypti*' works as a vector for transmitting the disease.

Another cause for dengue fever is a virus named '*flaviviruses*'. More than 100 million cases of dengue fever occur every year in the whole world. A little bit percent of these develop into dengue '*hemorrhagic fever*'.

Symptoms of dengue fever: Symptoms are generally seen around three days after the transition of virus to human through mosquito bite and after that patient starts feeling very weak. Dengue fever however, is not a fatal disease. One should always remember before looking for treatment that over medication in dengue fever is likely to lead to further complications and some times it may also turn slight serious. Other symptoms are rapidly

climbing high fever, severe headache, Retrol-orbital pain behind the eye, nausea, pain in muscles & joints, vomiting and loss of appetite. Furthermore rashes develop on the feets or legs three to four days after the beginning of the fever.

Ayurvedic treatment: Since they are not only cheap but also effective and available at home. Some are given below:-

- Tulsi (holy basil) is one of the Ayurvedic medicines for dengue. The leaves of tulsi are used to produce soothing effect on the nervous system, strengthen the stomach and induce copious perspiration.
- Mix 360 mg of Shunti Churna with 125 mg of Hinguleshwar and take this mixture at least four times daily, you may take with tea or hot water. Incase, the temperature of the patient rises beyond 104°F (40°C) then you may apply cold pad on the forehead till the temperature subsides.
- Amurtharistam, Amruthothotharam kashayam, Darsanam gulika, Panchamrutham kashayam can be given for treatment.

Kunal Rawat

B.Sc., Ist Semester

"Earth has enough for everyone's need not for greed"

Earth means 'life'. It is the only planet where life exists and its because earth has enough for everyone's need. And what a man needs to live is air, water and land.

Nature has provided many resources on the earth and man utilizes these resources with his ability and technique. To utilize these resources he has to interact with the environment but the utilization of these resources has increased the greed of man which has crossed all limits. Most of the activities of man take place on land whether it is agriculture, transport, industry, housing, mining and many more. Man needs air for breathing, burning, transport soundwaves and above all wind energy. Man makes different uses of water for household purposes, irrigation, industries, transport and tidal energy. As we all know, human life is impossible without it. Overutilization of these resources has resulted into various problem like -

- Unplanned felling of trees leads to soil erosion, cleaning of forests destroy the home of many wild animals. Undue intervention of man has also resulted in the extinction of many species of animals.
- Many industries discharge their waste

material into the rivers, harmful chemicals pollute the water. This results into the increment of water born disease and moreover disrupting the lives of water creatures. Sewage of many cities is also discharged into rivers.

- Global warming and its bad effects can't be ignored. The ice of polar regions is melting and the temperature of the earth is increasing which is a matter of great concern.
- Acid rain is again the result of air pollution. It badly affects the forest cover, fishing and above all it has badly affected the Tajmahal which can't be ignored.
- Last but not least the depletion of ozone layer and its various hazzards can be seen.

These all are the results of men's increasing greed, if man uses the resources of earth just to fulfill his needs, the earth will also shower her blessings on him otherwise he should be ready to face the curse.

Jitender Singh
B.Sc., IInd Semester

Ache of Her Life

How can you breathe fresh when the stale fragrance of your past keeps on choking you. Rashes that make your soul flutter every night, trouble you deep and at times create paucity of euphoric energy, thus carving a negative space too tough to mend. At that time certainly carrying empty feelings in your heart, you just urge for on eternal steep.

The same emptiness shuffled hard in Nina's life. It was just really bizarre how she handled the chaos which day by day incensed her to red. Isn't it

astounding how a tree never cares for a leaf, drying to death for it has got plenty more to recreate himself with. Nina's scary past neither revolved in front of her eyes nor distracted her present, still the pain she was suffering each day was a scary productivity of her past only. Surely a venom whose antidote the traitor refused to hand over and here was she, choking and sinking deep with the tides of Tsunami day by day.

It was January 12, 2008, still her records clear. The dark figure entered her soothing life and played

the game of evil. Too innocent to understand the rules, she enjoyed the game pretty well. Now, when your mind craves for something desperately, not even surmising right and wrong, kindly wipe the mist and read clearly, that's what's summarized as addition "DRUG ADDICTION"..... The rope of innocence and lack of awareness dragged Nina to a replica of hell and due to similar reason, she enjoyed hell akin to heaven. Her body's clay went on decaying slowly and steadily, no one a witness except the evil one. One can imagine how harassing is mental torture accompanied by physical one. Years went by. One day, her inner voice blasted an atom bomb punishing the accused, "Do you think her misery would have ended there?"

Not every annal had a satisfactory climax, I must say. Her life would have been back to normal provided she be freed from shackles of her so called drug addition. The most shocking thing was

that every night her inner thirsty devil opened her mouth wide to drink the oozing blood, her every intrinsic organ was damaged by herself as if her soul has been captivated by a malevolent spirit. Even her dreams turned into drastic nightmares provoking her to fill her belly with that crap. This supersonic addiction no doctor could cure except her own strong determination. This was the ultimate fact, she was very well aware of every night she fights with the negative and positive phase of her soul hoping to gain victory before tasting unpalatable fatality and lying eternally null. What more misery can one suffer, kindly decide.

Megha Kothari
B.A., IVth Semester

आंतक और वेदना

कुछ मर गये, कुछ बच गये,
कुछ का खून बहता रहा,
कैसी है ये समय की आँधी,
रोकर दिल कहता रहा।

भारत आजाद है
चारों ओर यही नारा है,
दूर भाग जाओ आतंकियों
हिन्दुस्तान हमारा है।

अब तक बहुत सह लिया हमने,
बस आगे नहीं कुछ सहना है,
बन जाओ आग का शोला,
अगर देश में रहना है।

जो जखम सूखने लगे थे,
वो फिर से हो गये हरे,
सभी के होठों पर थी चीख
और आंखों में आंसू भरे।

जब तक दुश्मनो को जीवन देते रहेंगे,
वे यूँ ही मासूमों के प्राण लेते रहेंगे।

अब तक तो ये नारा था,
अहिंसा पर चलो और देश पर हो जाओ
कुर्बान,
लेकिन अब बदल दो इस नारे को,
चीर दो दुश्मन का सीना,
तभी होगा भारत महान।

नहीं भूल पायेंगे हम,
छब्बीस नवम्बर की काली रात,
किसी के साथ थी फिजाएं
कुछ थे काल के साथ।

अब समय आ गया है,
बख्शीश और दान की पोटली छोड़ दो,
उठा लो हथियार हाथ में,
दुश्मन की गर्दन तोड़ दो।

आखिर कब तक यूँ ही सहते रहें,
बार-बार फिर कहते रहें,
अब हम जग जायेंगे,
नया सवेरा लायेंगे।

अहिंसा तो ठीक है, परहिंसा से भी दोस्ती
कर लो,
आंतक की वेदना को बनाओ ताकत सीने
में आग भर लो।

चाँदनी राठोर
बी.एससी. तृतीय वर्ष

Buddha's Teaching

The origin of religion is as complex as religion itself. The earliest beginning of religion means of production and worshiping of its object. Buddhism, however brought about a more sophisticated understanding of religion as a set of principles with the domains of sociology and psychology. Buddhism provides practical solutions of basic problems of human existence - it acknowledges that every living being must undergo suffering but suggests ways to raise oneself out of it.

Buddha never claimed to be God or a messenger but propounded principles to make human life peaceful and free of conflict, without resorting to false hopes.

It is a myth that Siddhartha (Gautam Buddha) left his kingdom after observing misery. Some evidence suggests that he left home because views were different from those who were responsible in the government over sharing of water resources with a neighbouring kingdom. The majority wanted war, whereas Siddhartha favoured discussion and negotiation.

It is also a myth that Buddha got enlightenment via tapasya. He did attempt tapasya, but after almost dying of starvation, he abandoned it. He evolved a set of principles we call 'Buddhism' after extensive discourses with intellectuals and through rational analysis of philosophical questions. His ideology is based on the principles of equality, liberty and fraternity and the main pillars of modern democracy. His belief was the liberty of both thought and action which was a fundamental requirement for human dignity. He liberated the Shudras from slavery and practised equality between genders and treated women as equal in all aspects of life even bestowing priesthood upon them. What Buddha told his followers was: "Believe only what appeals to your consciousness that is based on rationality. That is the only religion."

Perhaps, it is the right time to embrace the

heritage the Buddha bequeathed to us. Buddhism is not learning about strange belief, it is about looking at and thinking about our own lives. It shows us how to understand ourselves and how to deal with our daily problems.

The Four Noble Truths of Buddha

- Suffering is common to all.
- We are the cause of our suffering.
- Stop doing what causes suffering.
- Everyone can get enlightenment.

Suffering:-

- When we born, we cry.
- When we are sick, we are miserable.
- Old age is hard to get around.
- We feel deep sorrow when someone dies.

Other things, we suffer from are following:-

- Being apart from those whom we love.
- Not getting what we want leads to disappointments.

For all these Buddha said, "There is happiness in life, happiness comes within us, in friendship, in family, in nature, but when one loses them, there is suffering."

- **Cause of suffering-** People live in a sea of suffering because of ignorance and greed. They do things that are harmful to their bodies and peace of mind, so they can not be satisfied with their own lives.

Buddha has said that everyone deserves a good home, food and family. So without becoming greedy they should enjoy life.

- **End of suffering-** Buddhist call the state in which all suffering is ended 'Nirvana'. It is an everlasting state of great joy and peace.
- **Path to end suffering-** It is known as the 'Noble

Eightfold Path.' It means to change one's views and living in a more natural and peaceful way.

The Noble Eightfold Path

Buddha's teachings lead to the central point of the Dharma wheel, the point which is fixed called, 'Nirvana'. This Dharma wheel is the symbol of eight spokes to represent the 'Noble Eightfold Path'. Just as every spoke is needed for the wheel to keep turning, we need to follow each step of the path:-

- Right View- The right way is to see the world through the eye of Buddha - wisdom and compassion.
- Right Thought- Our mind is everything. What we think, we become.
- Right Speech- By speaking helpful words, we are respected and treated well.
- Right Conduct- Before we criticize others, we should first see what we do ourselves.
- Right Livelihood- Do not earn your living by harming others. Do not seek happiness by making others unhappy.

- Right Effort- Do your best and make efforts to be helpful toward others.
- Right Mindfulness- Being aware of your thoughts, words, works and deeds.
- Right Concentration- Focus on one's thought or object at a time. By doing this one can attain true peace of mind.

Following the Noble Eightfold Path means cultivating a garden and one's wisdom. The mind is the ground and thoughts are seeds. Deeds are the ways as one cares for the garden. Our faults are weeds. Pulling them out is like weeding a garden. The harvesting is real and lasting happiness. It can be summed up as Buddhism explains the purpose of life, and provides a code of practice or way of life that leads to true happiness.

Priyanka Sharma

M.Sc. (Zoology), 1st Semester

Stress and Teenagers

Teenagers? Stress? You must be joking! This is probably the reaction when asked whether teenagers are fretful and apprehensive for, it is generally believed that they have no responsibilities, no worries and no duties but that is not true.

In today's competitive world, one needs to struggle and fight to make it dynamic, yet uncertain environment that is both stressful and anxiety inducing. Teenagers face myriads of pressures. The pressure to perform well from parents, teachers and peers. The lack of aptitude tests sometimes results that students are pushed into fields which may not interest them or for what they are not equipped.

Apart from the pressure to perform well, they are often burdened with the pressure to conform to the norms laid down by society. Teenagers are often pressurized to conform to re-form themselves, especially students in the age group of 13 to 17 commonly experience this. Everybody is telling them when to wake up and what to do.

Here's what one can do to deal with pressure:-

- As a result of pressures, teenagers are often found to be very anxious, a song of anxiety and to holding one's breath. The easy way out is to take deep breath at regular interval, trying to clam your minds.

- The competitiveness of modern life and challenges put a tremendous load of work on teenagers. They need to understand that they are strong enough to handle the tough challenges in life, studying and assignment being just two of them.
- Effective stress management lies in having a healthy attitude towards competition, work, friends and acquaintance. It lies in taking life as it comes, doing your best being prepared for the worst.

Teenage can be the best of the person's life if one takes joy in the opportunities that await ones and with a smile. Remember, attitude is everything.

Saba Rehman
B.Sc., IVth Semester

Women Empowerment in India

The subject of empowerment of women has become a big issue all over the world including India. India which is known by the name 'Bharat-Mata' which is in turn a woman that serves as the mother of every Indian. India is also known for its 'male-chauvinism'. Inequalities between men and women have also been an age old issue in our country.

Although India is growing at a fast rate, the condition of women is still a worrying factor. We know that our country is the 4th most dangerous place in the world for women, acts of violence like acid throwing, domestic violence, female foeticide, dowry harassment and sexual harassment are still encountered by our women. The girl child sex ratio has also dipped from 919 in 2001 to 917 in 2011. Women discrimination can hugely be observed in our parliament where a small percentage of women is present.

To bring equality in the society, our government has taken many steps to empower our women, education being the foremost priority. Recently the government has announced free education to girls, who are single daughters of their parents. Moreover in some states like Bihar, free school uniform with text books and bicycle have been distributed to them. Fifty percent reservation for women in Panchayati Raj in states like Bihar, Uttarakhand, Himachal Pradesh and Madhya

Pradesh has also been given. Acts have been enacted to emancipate women in India. An Act was enacted in 2005 for protecting women from domestic violence.

Despite many hurdles, there are many examples of women, who have conquered different cliffs of life. Rani Laxmi Bai, Indira Gandhi, Bachendri Pal, Mary Kom and Kiran Bedi etc. Today women CEOs are heading many reputed companies, still there are many challenges which need to be overcome.

It has been well said that an educated boy only educates himself, but an educated girl educates her whole family and her society. But the tragedy is we do not give freedom to our girls, the basic requirement of life. How can we think rebuilding our nation? The question needs a comprehensive analysis.

Priyanka Chauhan
M.A. (History), Ist Semester

A Priceless Experience of Visiting Jaipur Literature Festival

We, the students of M.A. English IInd Sem along with two faculty members Dr. Jyoti Pandey and Ms. Amandeep Kaur feel lucky to get an opportunity to attend JLF 2017, which is rated as one of the greatest literary shows in Asia. It started on 19th Jan., 2017 and the keynote address was delivered by the famous film director and lyricist, Gulzar Sahib and American poet, Anne Waldman in the front lawn. We witnessed the charm of the most celebrated writers in their respective genre which was a dream come true. It was a delight to see Gulzar Sahib peeping into the soul of society to extract such beautiful compositions and mirroring it to society.

The second day of JLF began with the conversations of Gulzar Sahib with his long time translator, Pawan K. Verma where we got a glimpse into Gulzarji's unbeatable humour which he sprinkled in the questions he asked about politics and corruption which he himself has discussed in his poetry. We were deeply inspired by Mr. Ravinder Singh, an icon of today's youth. His conversation with Lucy B. Ford was a depiction of his talent of words which he uses in his writings.

The third day i.e. 21st Jan was a treat for us as we got on our seats to attend the session of Indian historian, writer and T.V personality Mr. Devdutt Patnayak who introduced his new book **Olympus** which revealed a lot about the history of Greece and India and the comparison drawn between both the cultures. He read out certain excerpts from his book which revealed that "It isn't history that makes heroes but it is heroes who create histories." The three days trip ended on an inspiring note. We extend a note of thanks to our Principal, Prof V.A. Bourai who has been so humble and kind to grant us with a golden opportunity for such a priceless experience which not only helped us to feel the culture of Rajasthan but also witnessed the love and beauty of our own tradition and soil.

Priyanka Tariyal

M.A. (Eng.), IInd Semester

जिंदगी ना मिलेगी दोबारा

आखों के आगे यह कैसा नजारा है
कहीं धूप के खेत है तो कहीं छाँव का
बसेरा है

निकल गया जो इस आँधी से
वहीं जिंदगी का सवेरा है।

मत पूछो कितने शोले गिरे
बस इतना याद था,
कदमों के नीचे धरती थी

चलते गये उस अंधेरे में
मन में उम्मीदों का पिटारा बाँध
कही तो मिलेगी रोशनी।

डगर-डगर, मोड़-मोड़ पर
आया बवंडर मगर तोड़ न सका हौसला
खड़े रहे हम उस आँधी में ऐसे कि
वह झुककर बोली
जा बंदे तेरा साहस है इतना

जिंदगी की जंग जीत ले
है मंजिल को पाना तो सारा जग जीत ले
सीखा मानव को मानवता का पाठ
पर तू जिंदगी की जंग जीत ले।।

याचना पटेल

बी.एससी. (बायोटेक), तृतीय सेमेस्टर

ज्ञानपीठ पुरस्कार

ज्ञानपीठ पुरस्कार भारतीय ज्ञानपीठ न्यास द्वारा भारतीय साहित्य के लिए दिया जाने वाला सर्वोच्च पुरस्कार है। भारत का कोई भी नागरिक जो आठवी अनुसूची में बताई गई 22 भाषाओं में से किसी भाषा में लिखता हो इस पुरस्कार के योग्य है। पुरस्कार में धनराशि, प्रशस्ति पत्र, और वाग्देवी की कास्य प्रतिमा दी जाती है। प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार 1965 में मलयालम लेखक शंकर कुरुप को प्रदान किया गया था। 1982 तक यह पुरस्कार लेखक की एकल कृति के लिये दिया जाता था। लेकिन इसके बाद से यह लेखक के भारतीय साहित्य में सम्पूर्ण योगदान के लिये दिया जाने लगा। अब तक हिन्दी तथा कन्नड़ भाषा के लेखक सबसे अधिक सात बार यह पुरस्कार पा चुके हैं। यह पुरस्कार बांग्ला को 5 बार, मलयालम को 4 बार, उड़िया, उर्दू और गुजराती को तीन बार, असमिया, मराठी, तेलगू, पंजाबी, तमिल को दो-दो बार मिल चुका है।

हिन्दी में ज्ञानपीठ पुरस्कार:-

वर्ष	नाम	कृति
1968	सुमित्रानंदन पंत	चिदम्बरा
1972	रामधारी सिंह दिनकर	उर्वशी
1978	सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सायन अज्ञेय	कितनी नावों में कितने बार
1982	महादेवी वर्मा	यामा
1999	निर्मल वर्मा	एक चिथड़ासुख
2005	कुँवर नारायण	आत्मजयी
2009	अमरकान्त	इन्ही हथियारों से
2013	केदारनाथ	अकाल में सारस

सुमित्रानंदन पंत की चिदम्बरा:

चिदम्बरा कविता संग्रह है। जिसके लिए 1968 में सुमित्रानंदन पंत को ज्ञानपीठ से सम्मानित किया गया। यह संग्रह उनकी काव्य-चेतना के द्वितीय उत्थान की परिचायिका है। उसमें युगवाणी के लेकर अतिमा तक की रचनाओं का संचालन है जिसमें युगवाणी, ग्राम्या, स्वर्ण-किरण, स्वर्णधूलि, शिल्पी, सौवर्ण और अतिमा की चुनी हुई कृतियों के साथ वाणी की अन्तिम रचना आत्मिका भी सम्मिलित है। चिदम्बरा में सन् 1937 से 1957 तक प्रायः बीस वर्षों की विकास श्रेणी का विस्तार है। सुमित्रानंदन पंत की द्वितीय उत्थान की रचनाएँ, जिनमें युग की, भौतिक आध्यात्मिकता दोनों चरणों की कटु आलोचनाओं एवं आक्षेपों की लक्ष्य रही है।

रामधारी सिंह दिनकर की उर्वशी:

महाकवि कालीदास के संस्कृत महाकाव्य विक्रमोर्वशीय नाटक की कथा का आधार यह प्रसंग है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में रामधारी सिंह दिनकर ने इसी कथा को अपने काव्यकृति का आधार बनाया और उसका शीर्षक भी रखा उर्वशी। महाभारत की एक कथा के अनुसार एक बार अर्जुन इन्द्र से अस्त्र विद्या की शिक्षा लेने गए तो उर्वशी इन्हें देखकर मुग्ध हो गई। अर्जुन ने उर्वशी को मातृवत् देखा। अतः इच्छा पूर्ति न करने के कारण इन्हें शापित होकर एक वर्ष पुरुषत्व से वंचित रहना पड़ा।

अज्ञेय की कितनी नावों में कितनी बार:

अज्ञेय द्वारा रचित प्रकृति प्रेम की कविता है। अज्ञेय ने बिंबों का सुन्दर प्रयोग किया। प्रकृति के सौन्दर्य से आकर्षण होकर कवि को नावों में आने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

महादेवी वर्मा की यामा:

यामा एक कविता संग्रह है। इसमें उनके चार कविता संग्रह नीहार, नीरजा, रश्मि और सांध्यगीत संकलित किए गए हैं। यामा में महादेवी की काव्य यात्रा के चार आयाम संगृहीत हैं। नीहार, रश्मि, नीरजा चिंतन जगत की क्रमबद्धता के कारण महत्वपूर्ण हैं। प्रत्येक आयाम में नवीनता तथा

विशिष्टता का परिचय दिया गया है। मानवीकरण पर बल दिया जाता है। प्रकृति के स्थूल सौन्दर्य में भी प्रायः महादेवी ने मानवीय भावना का साक्षात्कार किया।

नरेश मेहता की उपन्यास धूमकेतू:

धूमकेतू एक उपन्यास है। जिसमें उदयन की आत्मकथा का वर्णन किया। उदयन के शैशवावास्था का वर्णन किया।

निर्मल वर्मा का उपन्यास एक चिथड़ासुख:

चिथड़ासुख एक उपन्यास है। निर्मल वर्मा यह तीसरा उपन्यास है। जिसे ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया है। दिल्ली जीवन के केन्द्र पर आधारित है। मानवीय सम्बन्धों की जटिलता और सुख की तलाश को जोड़ने वाली कड़ी है।

कुँवर नारायण की आत्मजयी:

आत्मजयी में मृत्यु सम्बन्धी शाश्वत समस्या को कठोपनिषद का माध्यम बनाकर व्याख्या के साथ हमारे सामने रखा। इसमें नचिकेता अपने पिता की आज्ञा, को शिरोधार्य करके यम के द्वार पर चला जाता है। जहाँ पर तीन दिन तक भूखा-प्यासा रहकर यमराज उसे तीन वरदान माँगने की अनुमति देते हैं। नचिकेता इसमें से पहला वरदान यह माँगता है कि पिता का क्रोध समाप्त हो जाए।

अमरकान्त का उपन्यास इन्ही हथियारों से:

इस उपन्यास में उस समय का वर्णन किया है। जब भारत में भारत छोड़ो आन्दोलन चल रहा था।

केदारनाथ का अकाल में सारस:

केदारनाथ सिंह की 61 कविताओं का संग्रह अकाल में सारस 1988 में आया। जिसमें सन् 1983 से 1987 तक की कविताएं संकलित हैं।

अंजलि रतूड़ी

प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग

Angels Amongst Us

A bright Sunday morning, the millennium year, city of dreams. I woke up to the first photograph ever taken of my then eight year old sister. For some reason I liked it more than any other, much to my sister's disagreement I never liked working early morning, one of the perks my profession allowed that of a photographer. But today, I have to keep the promises, I make to my dear picture. The building the NGO was housed in, was in ruins. They worked for the betterment of children who didn't know whom to call a 'Mom or Dad'. The shoot was to be sent to a U.N. Body, they were expected to provide some funds.

Hema, the care taker of the home came with a bunch of kids. They were not like the child artistes we saw on the T.V., they were not cute and chubby. But they had a sparkle in their eyes. What nagged me the most was that they were not happy. Something that made both the person and the photographer fully disappointed. After some wide shots with all the kids, I wanted a single shot with a kid. For some reason my eyes caught Amir. I asked them to tell Amir to smile for me. But whatever I did, I couldn't get that smile from him. We got talking. He asked "'Bhaiyya' who all are there in your family?" I said "I have a younger sister". He asked, What about your Mom and Dad. Not every one has, I could feel a tear straining at the corner of my eyes. I took out a chocolate from the pocket and gave it to him. He grabbed it and said 'Bhaiyya! I come just now. Before finishing the sentence he started running. I went after him. He entered a small room in which a girl was sitting. Amir offered his chocolate to his small sister and she looked totally angelic holding up the chocolate.

Lovely
B.A., IInd Semester

डेंगू बुखार का प्रकोप

डेंगू बुखार के प्रकोप के कारण हर साल दुनिया में लगभग 10 करोड़ लोग डेंगू बुखार के शिकार होते हैं। भारत में ही हर साल कई लोगों की मृत्यु डेंगू बुखार के कारण हो जाती है। हमें रोज डेंगू का आंतक सुनने को मिलता है। तो आइए जाने कि-

डेंगू बुखार क्या है?

डेंगू बुखार (Fever) यह एक Viral बीमारी है जो की Dengue virus के कारण होती है इसे हड्डी-तोड़ बुखार भी कहते हैं। यह बुखार किसी को एक से अधिक बार हो जाए तो यह जानलेवा भी साबित हो सकता है। दूसरी बार होने वाला डेंगू बुखार जिसे Hemorrhagic Fever कहते हैं।

डेंगू बुखार कैसे होता है?

यह बुखार हवा, पानी, साथ खाने से या छूने से नहीं फैलता है। डेंगू बुखार Aedes aegypti नामक मादा मच्छर के काटने से होता है। अगर किसी व्यक्ति को डेंगू बुखार है और उस व्यक्ति को यह मच्छर काट कर उसका खून पीता है तो उस मच्छर में Dengue virus युक्त खून चला जाता है जब यह संक्रमित मच्छर किसी स्वस्थ व्यक्ति को काट लेता है तो उस स्वस्थ व्यक्ति में भी डेंगू वायरस चला जाता है।

Aedes aegypti मादा मच्छर की प्रमुख विशेषताएँ-

- यह दिन में ज्यादा सक्रिय होते हैं।
- इन मच्छर के शरीर पर चीते जैसी धारियाँ होती हैं।
- ये ज्यादा ऊपर तक नहीं उड़ सकते।
- ये ठण्डे और छाँव वाली जगहों पर रहना पसंद करते हैं।
- ये घरों में पर्दों या अंधेरे वाली जगह पर रहते हैं।
- ये घर के अन्दर रखे हुए शांत पानी में प्रजनन (Breeding) करते हैं।
- ये प्रजनन के पश्चात प्रजनन क्षेत्र के 200 मी० की दूरी के अन्दर ही उड़ते हैं।
- ये गटर व खराब पानी में कम प्रजनन करते हैं।

- पानी सुख जाने के पश्चात् भी इनके अण्डे 12 महीनों तक जीवित रह सकते हैं।

डेंगू बुखार के लक्षण-

डेंगू बुखार संक्रमित मच्छर के काटने से उसे 14 दिनों बाद डेंगू बुखार के कुछ लक्षण दिखाई देने लगते हैं। डेंगू बुखार के कुछ लक्षण निम्न दिखाई देते हैं-

- तेज ठंडी लगकर बुखार आना
- सरदर्द
- आँखों में दर्द
- बदन दर्द/ जोड़ों में दर्द
- भूख कम लगना
- उलटी का मन होना
- दस्त लगना
- चमड़ी के ऊपर लाल चक्कते पड़ना
- Dengue Herorrhagic बुखार की गंभीर स्थिति में आँख व नाक से खून आना इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं।

डेंगू बुखार के लिए रोकथाम-

- Dengue का रोकथाम ही इसका सबसे बेहतर इलाज है।
- Dengue बुखार की कोई विशेष दवा/ Vaccine नहीं है। इस बुखार की कोई दवा नहीं है पर इस रोग से शरीर पर होने वाले Side-effect से बचने के लिए रोगी को डॉक्टर की सलाह से आराम करना चाहिए। और समय-समय पर डॉक्टर के सम्पर्क में रहना चाहिए।
- रोगी को पर्याप्त मात्रा में आहार और पानी पीना चाहिए और डॉक्टर की सलाह से Paracetamol दवाई लेनी चाहिए।
- डॉक्टर की सलाह से नियमित Platelets count की जाँच करानी चाहिए।
- हमें हमेशा योग्य संतुलित आहार और प्रतिदिन योग व व्यायाम करना चाहिए जिससे हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता बनी रहे।

डेंगू बुखार के प्रति कुछ घरेलू बचाव के कारण-

- घर के अन्दर और आस-पास पानी जमा न होने दें।
- किसी भी खुले बर्तन में पानी जमने न दें।
- घरों में बर्तन को खाली करके, उसे उलटा करके रखें।
- अगर किसी बर्तन में पानी जमा कर रखते हैं तो उसे सदैव ढक कर रखना चाहिए।
- घरों में कीटनाशक का छिड़काव करना चाहिए।
- कूलर के पानी को हर हफ्ते बदलना चाहिए।
- घरों के दरवाजे व खिड़कियाँ हमेशा बन्द रखना चाहिए।
- शरीर को पूरा ढकने वाला कपड़ा पहनना चाहिए।
- राते को सोते समय मच्छरदानी या मच्छर विरोधी उपकरणों का इस्तेमाल करें जैसे- Electric mosquito net, repellent

cream, spray इत्यादि।

- अगर बच्चे खुले में खेलने जाए तो उन्हें Mosquito repellent cream लगाकर खेलने भेजें।
- अपने आस-पास के लोगों को भी मच्छर को फैलाने से रोकने के प्रति प्रोत्साहित करें।
- स्वस्थ व्यक्तियों को Blood donation करना चाहिए।
- डेंगू बुखार में Platelet Count बढ़ाने के लिए पपीते के पत्ते का रस पीना चाहिए।
- खुले में शौच नहीं करना चाहिए।
- डेंगू बुखार के प्रति लोगों को जानकारी देनी चाहिए।

राजा अभिषेक चन्द्र स्वामी

एम.एससी. (जन्तुविज्ञान), प्रथम सेमेस्टर

Wetlands

Wetlands are home to some of the richest biodiversity on earth. A wetland is a land area that is saturated with water, either permanently or seasonally, such that it takes on the characteristics of distinct ecosystem. The primary factor that distinguishes wetlands from other land forms or water bodies is the characteristic vegetation of aquatic plants, adapted to the unique hydric soil. They have been called the "Nature's kidneys," because they clean our environment. Wetlands play many roles in the environment, principally water purification, flood control, carbon sink and shoreline stability. Natural wetlands in India consists of the high altitude Himalayan lakes, followed by wetlands situated in the flood plains of the major river systems, saline and temporary wetlands of the arid and semi-arid regions, coastal wetlands such as lagoons, estuaries, mangrove swamps, coral reefs and marine wetlands. Indian wetlands cover the whole range of the ecosystem types found. In addition to the various types of natural wetlands, a large number of man made wetlands also contribute

to the faunal and floral diversity. Wetlands are one of the most threatened habitats of the world. Wetlands in India, as elsewhere are increasingly facing several anthropogenic pressures. Thus, the rapidly expanding human population, large scale changes in land use, and improper use of watersheds have all caused a substantial decline of wetland resources of the country. Significant losses have resulted from its conversion threats from industrial, agricultural and various urban developments. Healthy wetlands are essential in India for sustainable food production and potable water availability for humans and livestock. Wetlands are also necessary for the continued existence of India's diverse populations of wildlife and plant species, a large no. of endemic species are wetland dependent. Wetlands cover at least 6% of the earth and have become a focal issue for conservation due to the ecosystem services they provide.

Dr. Poonam Sharma
Assistant Professor
Department of Botany

The Impact of Social Media on Students' Life

Today's world is a global village. Everyone is connected to one another in the vast network generated by the Internet.

In the past, the communication and free sharing of thoughts among people were restricted by long distance and nationality. But now, even these barriers cannot stop the flow of information and knowledge. The new world of social network allows free sharing of thoughts. Online social networks are created by websites such as Facebook, Instagram and Twitter.

As in 2015 the world's largest social networking company, Facebook has 1.49 billion active users and the numbers of user is increasing every year. One of the most interesting things at a look is the increasing number of students users on such social networking sites. As per the survey conducted by Pew Research Centre, 72% of High school and 78% of college students spend time on Facebook, Twitter, Instagram etc. These numbers indicate how much the student community is involved in the virtual world of social networking.

Social networks provide them the freedom to do whatever they want to upload, and talk to whom they want. They like to make new friends and comment on the lives of the people. Students can create other online identities that the real world does not allow.

The lives of people especially students, are largely influenced by what is posted by other people on their profiles.

The most important thing in a student's life is studying and learning good habits to become a righteous ones. Students neglect their studies by spending time on social networking websites rather than studying or interacting with family members.

Getting too involved in social media can lead to an addiction that inculcates bad habits. Students prefer to chat with friends for long hours and this lead to wastage of time that could have been used for studying, playing or learning new skills.

It is necessary to frame certain regulations over the use of such social networking sites, especially for High school and college students so that it would not hamper their school or college performance. It should be kept in mind that social networking sites create virtual world that drastically differ from reality. Now it is left up to the students to decide what really matters in their lives and how much of this virtual life translates to real life.

Shubham Gharia
B.A., 1st Semester

आधारित है बेटियों पर देश का भाविष्य

शांति के असीम पलो में,
खामोश सी मैं बैठी थी
सोच रही थी उन कन्याओं के विषय में,
जन्म से पहले ही, जिन्दगी जिनसे रूठी थी
मौत के आगोश में सुला देते हैं, जिनको
यदि जन्म दे, दे तो जीवन भर रूलाते रहते हैं जिनको
जन्म हुआ एक कन्या का
सुनो एक आम लड़की की कहानी कहती हूँ
क्योंकि मैं भी एक आम लड़की सा जीवन जीती हूँ।
पोता चाहिए दादी माँ का अरमान था,
अरे! जन्म दिया जिसने,
उसके लिए तो बेटा-बेटी समान थी,
दर्द सहा है जब एक समान
इसलिए पुत्र या पुत्री बाद में,
पहले उसकी सन्तान थी।
कन्या का जब जन्म हुआ,
घर आंगन किलकारी गूँज गई,
माता तो भई प्रसन्न
दादी माँ क्यूँ रूठ गई।
ना बाजी घर में थाली, ना गाए गए कोई बधाई।
दादी माँ की आँखे क्यूँ हो गई रुसवाई
घर आंगन में खुशबु सी महकने लगी।
कन्या हो गई बड़ी चिड़िया सी चहकने लगी
अच्छे संस्कारों संग पलती, बगिया में किसी कली सी
खिलती

अब जब बड़ी हो गई कन्या कॉलेज में पदार्पण किया।
होनहार वह बन गई, लक्ष्य उसने साध लिया।
दिवस रात्री एक बनाया, मन में उसने ठान लिया।
माता-पिता का जीतकर विश्वास
दिखलाना है एक नया प्रकाश
एक दिवस फिर ऐसा आया
कन्या ने अपना लक्ष्य पाया,
आँगन में घुटनों के बल जो चलती थी
आज उसने हवाई जहाज उड़ाया।
घर आंगन में बजी बधाई
सारे गाँव में बँटी मिठाई
गा रही दादी अंगना, मंगल गान
खुश होकर पिता, बाँट रहे मिष्ठान
बेटी है मेरी यह कहकर करते हैं अभिमान
सब लोग जब गये हैं जान
फिर हम क्यों बने अनजान
जन्म दो बेटियों को
चलाओ बेटी बचाओ अभियान।

विशाखा पाचाँल

बी.ए., तृतीय सेमेस्टर

An Important Medicinal Plant:

Ashwagandha (Withania Somnifera)

India is one of the twelve mega bio-diversity centers. The Indian environmental condition is blessed with a wide variety of aromatic and medicinal plants. Cultivation of medicinal plants is a challenging task because less is known about their reproductive biology, niche ecology, seed biology and biosynthetic pathway. *Withania somnifera* (Solanaceae) has extensive medicinal properties and one of its products is commonly called as asgand. Pharmacological properties of *Withania somnifera* are diverse ranging from anti-inflammatory, anti-tumor, anti-stress, anti-oxidant, immunomodulatory, hemopoietic and cardioprotective effects. *Withania somnifera* is mainly distributed from the Southern mid region to the Canary Islands and to South and East Africa from Palestine upto North India, also having Baluchistan, Sudan, Jordan, Egypt, Afghanistan, Iran, Israel and Pakistan. In India, the plant grows in wild North Western regions to mountainous and hilly regions of Himachal Pradesh, Punjab and Jammu upto an altitude of 1500 m above the sea level. In India they are cultivated in Madhya Pradesh, Andhra Pradesh, Rajasthan and Uttar Pradesh. Every part of the herb contains various chemical compounds called steroidal/withanolides in which most of the pharmaceutical properties are present in these plants. The Indian Himalayan region (BHR), one of the richest reservoirs of biological diversity in the world is undergoing irrational extraction of wild, medicinal herbs thus endangering many of its high value gene stock. *Withonia somnifera* L. (Dunal) is a member of solanaceae, also known for thousands of years by Ayurvedic practitioners. *Withania somnifera* root contains flavonoids, alkaloids, steroid and many active functional

ingredients. *Withania somnifera* consists of very high concentration of secondary metabolites that can also be known as bioreactors like steroidal lactones, alkaloids and flavonoides, which have effective properties and they are used in ninety commercially Ayurvedic formulations. *Withania somnifera* having small white flowers mainly in rainy and winter seasons that can be developed into fruit during the winter seasons. Plant products can be obtained from the roots, leaves, and branches by using many different biological techniques. *Withania* which is also known as Ashwagandha having effective property can also be used in blends and supplements which are designed to show many multiple effects. It is described as a herbal tonic and health food in Vedas and considered as 'Indian Ginseng' in traditional Indian system of medicine.

The Ashwagandha is used for betterment of the following disorders.

- Chronic fatigue (long term disabling tiredness)
- Dehydration or hypo-hydration (loss of excessive body water)
- Weakness in bone and muscles
- The Aswaganda is used for reducing tension involving stress and for the betterment of various disorders including loose teeth, thirst, impotency, premature ageing, emaciation, debility, constipation, senility, rheumatism, nervous exhaustion, memory loss, neurodegenerative disorders.

Dr. Naveen Gaurav

Assistant Professor

Department of Biotechnology

सामुदायिक विकास एवं राष्ट्रीय कैडेट कोर

सामुदायिक विकास की महत्वपूर्ण अवधारणा को कदापि गौण कर के नहीं आंका जा सकता। समुदायों के समूह राष्ट्र सृजन के आवश्यक अवयव है। किसी राष्ट्र का सर्वांगीण विकास विकसित समुदायों के पूर्ववर्ती लक्ष्य को प्राप्त किये बिना मात्र कपोल कल्पना ही सिद्ध होगा। राष्ट्र की अमूल धरोहर, युवा अपने समुदायों की इकाई भी है। युवाओं के अपने विकास के लिये भी यह नितांत आवश्यक है कि वह समुदाय भी विकसित हो जिसका वो प्रतिनिधित्व करते हैं। यदि युवक/युवतियाँ अपने समुदाय के विकास हेतु प्रेरित हो कुछ करते हैं तो उनकी आत्म उन्नति के साथ राष्ट्र विकास के महान लक्ष्य को बिना अतिरिक्त श्रम सहज ही प्राप्त किया जा सकता है। आवश्यकता है तो युवाओं के नेतृत्व में ऐसे किसी स्वतः स्फूर्त जन आन्दोलन की।

राष्ट्रीय कैडेट कोर राष्ट्रीय सेवा योजना आदि युवा कार्यक्रम, जो सभी प्रान्तों में संचालित हो रहे हैं, सामाजिक विकास हेतु युवाओं को उत्प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाहित कर रहे हैं। सामुदायिक विकास सामाजिक विकास का ही एक सोपान है। यह कार्यक्रम यदि युवाओं में उनके सामाजिक दायित्वों एवं कर्तव्यों का पूर्णरूपेण सम्प्रेषण करने में सफल होते हैं तभी ये कार्यक्रम अपने वृहद् लक्ष्य की ओर अग्रसर हो सकते हैं। युवाओं द्वारा अर्जित सामाजिक बोध ही सामुदायिक विकास हेतु उनका प्रेरणा स्रोत सिद्ध होता है।

देश में चलाये जा रहे सामुदायिक विकास के सरकारी कार्यक्रमों की न्यूनता कदापि नहीं है। अवरोध उनके सही क्रियान्वयन में है। विभिन्न गैर सरकारी संगठन भी इस क्षेत्र में प्रयत्नशील हैं। असीम ऊर्जा के भण्डार युवा अपने समाज में प्रवाहित ऊर्जा के उद्गम स्रोत भी है। इसमें तनिक भी संशय नहीं कि किसी सामाजिक अभियान की कल्पना युवाओं की भागीदारी सुनिश्चित किये बिना नहीं की जा सकती, अन्यथा उस कार्यक्रम की सफलता पर सदैव अनिश्चितता के मेघ आच्छादित रहेंगे।

राष्ट्रीय कैडेट कोर युवाओं में विद्यमान गतिज सामाजिक ऊर्जा को दिशा प्रदान करने का सशक्त मंच है। कोर के सामाजिक उन्नयन हेतु प्रयासरत होने के प्रमाण विभिन्न वाहिनियों द्वारा चलाये जा रहे अनेकानेक कार्यक्रमों में स्वतः ही दृष्टिगोचर है। कोर अपने स्तर पर शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, स्वच्छता, निर्माण आदि से सम्बन्धित कार्यक्रम आयोजित करता रहता है। ये कैडेटों में नूतन उत्साह के

संचरण के साथ उसे सामुदायिक विकास हेतु भी प्रेरित करते हैं। इन अनुभवों से युक्त कैडेट समुदाय की अमूल्य निधि है। कोर से प्रशिक्षण पूर्ण करने के पश्चात् वे समाज में उक्त गतिविधियों हेतु प्रशिक्षक की भूमिका भी सराहनीय ढंग से निभाने में सक्षम होते हैं। प्रशिक्षण अवधि के दौरान प्रदत्त उच्च स्तरीय उत्प्रेरण, कैडेटों को समाज के अन्य युवाओं का प्रेरणा स्रोत सिद्ध करने के साथ ही अनुकरणीय उदाहरण के रूप में प्रतिस्थापित करने में सक्षम है।

कोर की गतिविधियों में सामुदायिक विकास कार्यक्रमों को समाहित करते समय कोर के मूल उद्देश्यों को कभी विस्मृत नहीं किया जाता। अतएव ये कोर के लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक होते हैं। कोर की समस्त गतिविधियों के केन्द्र में कैडेट ही होता है। उदाहरणार्थ सड़क बनाना कोर का उद्देश्य नहीं है। इसके लिए लोक निर्माण विभाग एवं अन्य निकाय उत्तरदायी है। यदि कोर कही मार्ग निर्माण का कार्य प्रारम्भ करता है तो उसका मूल उद्देश्य कैडेट को श्रम के महत्व से अवगत करा उसके व्यक्तित्व का विकास करना ही होता है। प्रौढ़ शिक्षा का दायित्व राष्ट्रीय साक्षरता मिशन का है। इसमें कोर की सन्निप्ता अपने कैडेट में इस विचार का सूत्रपात करना है कि उसे अपने समाज एवं साथियों की उन्नति में सहायक होना चाहिये। वृक्षारोपण एवं वृक्ष संरक्षण हेतु वन विभाग विद्यमान है। कोर द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन कैडेट को पर्यावरण परिरक्षण के प्रति जागरूक कर उसे प्रदूषण नियंत्रण में सचेष्ट एवं सक्रिय रखना ही है। अतः विभिन्न सामाजिक विकास की गतिविधियों में भाग लेना वाला कैडेट मूलतः स्वयं अपना स्वरूप में विकसित होता है तब ही कोर का मूल लक्ष्य प्राप्त होगा। कोर द्वारा किसी भी सामुदायिक विकास कार्यक्रम की संकल्पना होती है तो उसके नियोजन के समय उपरोक्त तथ्यों पर अवश्य ही दृष्टिपात कर उन्हें उसमें समाहित किया जाता है। राष्ट्रीय कैडेट कोर सदैव स्मरण रखता है कि ऐसे सामुदायिक कार्यक्रम एक माध्यम मात्र है और अनुशासन, दायित्वबोध, नेतृत्व आदि गुणों से भरपूर कौशल युक्त युवा निर्माण उसका मूल लक्ष्य।

आज हम एक बाजार उन्मुख उपभोक्तावादी संस्कृति से युक्त समाज में रह रहे हैं। अतः यह सहज ही है कि किसी संगठन द्वारा अपने मूल उद्देश्य से इतर कुछ भी करने पर उसके प्रचार की होड़ रहती है। यह उचित भी है क्योंकि ऐसा प्रचार दूसरों हेतु प्रेरणा स्रोत बन सकता है और वे भी उन सद् क्षेत्रों में प्रेरित हो सकते हैं जो अब तक उनसे अछूते थे। परन्तु यदि यही प्रचार-प्रसार उद्देश्य हो जाये तो समस्त ऊर्जा उधर ही झोक दी जाती है और कार्यक्रम अपने मूल लक्ष्य से विमुख हो जाता है। ऐसे प्रलोभन से बचने का साहस प्रदर्शित करना होगा। प्रचार का ध्यान रखते हुए कोर के लक्ष्य को सदैव केन्द्र में

स्थापित कर, विचलित हुए बिना आयोजित कार्यक्रम ही वास्तविक सफलता को आत्मसत् करता है।

सामुदायिक विकास समस्त समुदाय को एकीकृत कर साथ ले कर चलने से ही प्राप्त होगा। यहाँ 'एकला चलो रे' की नीति प्रायः असफल होगी। यदा-कदा समस्त श्रेय स्वयं लेने की ललक में वाहिनियों एवं उपवाहिनियों के संचालक ऐसे कार्यक्रमों में उन संगठनों का सहयोग नहीं लेते जो उस क्षेत्र में प्रवीणता रखते हैं। ऐसी स्थिति में कभी-कभी यथेष्ट सफलता भी प्राप्त नहीं होती। इस परिस्थिति से बचना ही श्रेयकर है। सामाजिक सेवा का कोई भी कार्यक्रम प्रारम्भ करने से पूर्व उन विभागों से समन्वय स्थापित कर उनका सहयोग लेने की चेष्टा अवश्य करनी चाहिये, जिनका मूल कर्म ही वह क्षेत्र विशेष है। ऐसा करके अनेकानेक लाभों के साथ-साथ उनके मूलभूत ढाँचे एवं विस्तृत अनुभवों का उपयोग आवश्यकतानुसार किया जा सकता है। समन्वयपूर्वक चलाये गये ऐसे कार्यक्रमों की आशातीत सफलता पर प्रश्न चिन्ह लगने की सम्भावनाये बहुत क्षीण होती है।

सामुदायिक विकास के कार्य कैडेट एवं राष्ट्र निर्माण हेतु उच्च कोटि के माध्यम है। राष्ट्रीय कैडेट कोर अपने ऊर्जावान प्रशिक्षणार्थियों में विकास कार्यों हेतु सशक्त भूमिका निभाते हुए अपने लक्ष्यों की ओर द्रुत गति से अग्रसर है। वाँछित सफलता हेतु कोर द्वारा संचालित सामुदायिक विकास के समस्त कार्यक्रमों में कैडेट को मध्य में रखकर उसके इर्द-गिर्द ही गतिविधियों की रूपरेखा बनती है। कैडेट के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास ही मूल उद्देश्य है अन्य सभी उद्देश्य सदैव सहगामी है। कोर द्वारा ऐसे क्रियाकलाप यदि अन्य सम्बन्धित विभागों से समन्वय स्थापित कर उनकी दक्षता का उपयोग करते हुए नियोजित किये जाये तो इसमें लेश मात्र भी संदेह नहीं कि इन कार्यक्रमों से कोर, समाज और राष्ट्र सभी को लाभ मिलेगा। इससे इन कार्यक्रमों की अपेक्षित सफलता में भी गुणात्मक सुधार की पूर्ण सम्भावनाये हैं।

मेजर प्रदीप सिंह

3/29 उत्तराखण्ड वाहिनी रा. क. को., देहरादून

Do you know?

- A blue whale's tongue weighs more than an elephant.
- The giant crab of Japan can be as large as 12 feet across.
- Sharks never stop moving even when they sleep or rest.
- Minnows have teeth in their throat.
- Dogs have about 100 different facial expressions, most of them made with the ears.
- Some species of Dinosaurs were the size of chicken.
- To make 1kg of honey, bees have to visit four million flowers, traveling a distance equal to 4 times round the earth.
- China uses 45 billion chopsticks per year. 25 million trees are chopped down to make these sticks.
- The dot over a letter is called a tittle.
- Stomach has to produce a new layer of mucus every two weeks other wise it will digest itself.
- Butterflies taste with their feet.
- Starfish dont have brain.
- Snails can live for three years without sleeping.
- A shark can detect one part of blood in 100 million part of water.

Priyam Sharma
M.Sc. (Zoology), Ist Semester

खुम्ब – एक परिचय

खुम्ब एक विशेष प्रकार के जैव वर्ग से संबंध रखते हैं जिन्हें फफूंद के नाम से जाना जाता है। इनमें पौधों के समान हरित पदार्थ (क्लोरोफिल) नहीं होता और ये जैव पदार्थों व इनके अवशेषों पर उगते हैं। इन पदार्थों से ये अपना भोजन कुछ महीन धागों जैसी रचना (माईसीलियम) जो पदार्थ के अंदर तक भेद जाते हैं, द्वारा सोखते हैं। धागे अधिकतर पदार्थों की ऊपरी सतह पर नजर नहीं आते। काफी भोजन सोखने तथा बढ़ने के बाद यह माईसीलियम उत्पत्ति करने वाले अंगों को बनाती है जो अधिकतर पदार्थ की सतह पर आकर खुम्ब की उत्पत्ति करती है। यह खुम्ब छातेनुमा या अन्य किसी आकार की अनेक रंगों में हो सकती है। साधारणतया इसमें ऊपर एक टोपी एक डंठल पर टिकी हुई होती है। इनके अतिरिक्त कुछ अन्य रचनाएं जैसे पर्दा या गलफड़े (वेल), अंगूठी (एनूलस), कप या वॉल्वा आदि भी हो सकते हैं जो खुम्ब की विभिन्न अवस्थाओं के दौरान विभिन्न कार्यों के लिये आवश्यक होते हैं। इनमें सबसे आवश्यक कार्य टोपी (पीलियस) द्वारा खुम्ब के करोड़ों छोटे-छोटे बीज (स्पोर्स) बनाना होता है। ये बीज उपयुक्त परिस्थितियों में उपयुक्त भोज्य पदार्थ पर उगकर खुम्ब की नई माईसीलियम बनाते हैं। यह माईसीलियम किसी अन्य योग्य माईसीलियम या स्वयं अपने से ही जुड़ कर फिर से नई खुम्ब को जन्म देती है और इस प्रकार खुम्ब का पूरा जीवन चक्र चलता है। इस प्रकार के जीवन चक्र तथा मृत पदार्थों पर उगने के कारण खुम्ब साधारणतया: उन स्थानों में बहुतायत में पाई जाती है। जहां पर पौधों के अवशेष जैसे पत्ते, तिनके, तने आदि सड़ रहे हो। सभी खुम्ब खाने योग्य नहीं होती। कुछ खुम्ब अभक्षणीय तथा जहरीली भी होती है। इन जहरीली खुम्बों के कारण ही कई बार मनुष्य डर के कारण भक्षणीय खुम्बों को भी खाने से कतराता है।

आदिकाल से ही खुम्बों को जंगलों से इकट्ठी कर खाने का प्रचलन रहा है। परन्तु खुम्ब उगाने में सफलता इसकी पेचीदा जीवन चक्र के कारण नहीं मिली। यद्यपि सबसे पहले 1000 वर्ष पूर्व उष्णीय वातावरण में उगने वाली खुम्ब को चीन में उगाने में सफलता मिली परन्तु वास्तविक व्यावसायिक खेती यूरोपीय देशों में सोलहवीं व सत्रहवीं सदी में हुई। वैज्ञानिक रूप से खुम्ब की खेती 20वीं सदी से शुरू हुई। सदी के शुरू में खुम्ब का उत्तकों व सूक्ष्मदर्शी बीजाणुओं से शुद्ध संवर्धन बनाने में मिली सफलता के कारण वैज्ञानिक रूप से बटन खुम्ब की व्यावसायिक खेती को प्रोत्साहन मिला। सन् 1932 में गेहूँ के दानों के ऊपर स्पॉन बनाने के पेटेंट से इस व्यवसाय में विस्तार शुरू हुआ। सदी के मध्य तक उत्पादन में

वृद्धि धीमी थी जो सदी के अंत तक बहुत तीव्र गति से बढ़ने लगी। सन् 1970 तक यह वृद्धि बटन मशरूम तक ही सीमित थी। इसके बाद कई अन्य खुम्बों के उत्पादन में वृद्धि होने लगी और आज चीन में लगभग 60 प्रकार के खुम्ब की किस्मों की खेती होती है और यह देश विश्व का लगभग 60 प्रतिशत खुम्ब पैदा करता है। वर्तमान में खुम्ब को इनकी पौष्टिकता, औषधीय गुणवत्ता तथा आय के उत्तम साधन के रूप में 100 से भी अधिक देशों में बहुत महत्व मिल रहा है। वर्तमान में विश्व का कुल खुम्ब उत्पादन 215 लाख टन प्रति वर्ष है और इसमें तेजी से वृद्धि हो रही है। विकसित देशों में विशेषकर यूरोप व अमरीकी देशों में खुम्ब एक बड़ी औद्योगिक इकाई के रूप में गिनी जाती है। इन देशों में वेतन अधिक होने के बावजूद बड़े स्तर पर 10000-20000 टन प्रतिवर्ष पैदावार के लिये इकाईयों में आशातीत सफलता मिली।

भारतवर्ष में खुम्ब उत्पादन के अवसर

भारतवर्ष में विविध प्रकार का मौसम व बहुतायत में विभिन्न प्रकार के कृषि व्यर्थ उपलब्ध है तथा सस्ती मानवक्षमता आसानी से मिल जाती है। इसीलिये यहां पर शीतोष्ण, उपोष्ण तथा उष्ण सभी प्रकार की खुम्ब पैदा की जा सकती है। ऐसा अनुमान है कि भारतवर्ष में प्रतिवर्ष लगभग 600 मिलियन टन कृषि व्यर्थ उत्पन्न होते हैं। इसका एक प्रतिशत भी यदि खुम्ब उत्पादन के लिये प्रयोग किया जा सके तो भारतवर्ष एक प्रमुख खुम्ब उत्पादक देश बन सकता है। भारतवर्ष में खुम्ब उत्पादन यद्यपि 1960 के दशक में शुरू हो गया था परन्तु इसे अपेक्षित गति 1990 के दशक में मिली जब यहां विदेशी कंपनियों की सहकार्यता में बड़ी-बड़ी योजनाएं आईं। इन योजनाओं से खुम्ब उत्पादन वर्ष 1985 में 4000 टन से बढ़कर 1995 में 30,000 टन प्रतिवर्ष हो गया था। वर्तमान में भारत में खुम्ब की पैदावार 1,20,000 टन प्रतिवर्ष है। इसमें 80 प्रतिशत भाग बटन खुम्ब का है तथा शेष अन्य खुम्बों का उत्पादन है जबकि भारतवर्ष में इन शेष खुम्बों को उगाने के अवसर बटन खुम्ब से अधिक हैं और आशा है कि आने वाले वर्षों में समशीतोष्ण एवं उष्ण खुम्बों की पैदावार बढ़ेगी।

बटन खुम्ब

यह खुम्ब आज भी स्वदेशी व विदेशी बाजारों में सर्वाधिक लोकप्रिय है। इसका उत्पादन देश में बड़ी-बड़ी योजनाओं में, मध्यम आकार की इकाईयों तथा मौसमी इकाईयों में किया जा रहा है। शुरू में बड़ी-बड़ी योजनाओं के कार्यान्वयन में कच्चे माल की गुणवत्ता,

पराली पर बनाई गई खाद की गुणवत्ता बनाए रखने में समस्या, केसिंग मिट्टी (पीटमॉस) के आयात में अत्यधिक व्यय आदि समस्याएं आईं। फलस्वरूप इन योजनाओं में उत्पादन में गिरावट आई व कई बार सम्पूर्ण फसल नष्ट हो जाने के कारण खुम्ब उत्पादन लागत बहुत अधिक आता था। बिजली आदि की मंहगी दरों ने इस उत्पादन लागत को और अधिक बढ़ा दिया। विदेशी बाजारों में चीन द्वारा सस्ते मूल्य पर खुम्ब दी जा रही थी। इन सब कारणों से सभी खुम्ब निर्यात करने वाली इकाईयों को नुकसान हुआ। पिछले कुछ वर्षों से मध्यम आकार की इकाईया पूर्णतया: स्वदेशी तकनीक द्वारा शुरू की गई जिसमें ये इकाईया आर्थिक रूप से सुदृढ़ हो गई। इनमें अधिकतर इकाईया बड़े शहरों के नजदीक लगाई गई। उत्तरी राज्यों जैसे हरियाणा, उत्तर प्रदेश, दिल्ली व पंजाब में सर्दियों में खुम्बों को मौसमी तौर पर उगाया जाता है जो खुम्ब स्थानीय बाजारों व कैनिंग में प्रयोग होती है। परन्तु इन मौसमी इकाईयों में उत्पादन कीड़ो-मकोड़ों व बीमारियों के कारण घटता-बढ़ता रहता है। खुम्ब के मौसमी उत्पादन के लिये सहकारिता द्वारा खुम्ब की उत्तम खाद बनाने के लिये व खुम्ब के बीज के उत्पादन के लिये इकाईयां लगाई जा सकती है, इसके अतिरिक्त खुम्ब का सहकारी विक्रय न केवल खुम्ब उत्पादन में वृद्धि करेगा अपितु आय को भी बढ़ाएगा। वर्तमान में बटन खुम्ब मुख्यता हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडू व कर्नाटक में उगाई जाती है।

शिटाके खुम्ब

शिटाके खुम्ब विश्व की दूसरे नम्बर की खुम्ब है। जो विश्व उत्पादन का 25% है। आने वाले वर्षों में इसकी मांग काफी बढ़ने लगी है। इसका मुख्य कारण इसके पौष्टिक गुणों के साथ-साथ औषधीय गुण है। भारत में इसकी पैदावार नहीं के बराबर है परन्तु यहाँ इसकी सम्भावनाएं हैं। इसे लकड़ी के बुरादे पर 18-24° सेल्सियस तापमान पर पैदा किया जा सकता है।

आयस्टर खुम्ब

ढिंगरी या आयस्टर खुम्ब (प्लूरोटस) सर्वाधिक लोकप्रिय शीतोष्ण एवं उपोष्ण प्रजाति है और विश्व खुम्ब उत्पादन में इसका बटन खुम्ब के बाद तृतीय स्थान है। भारत में इसका उत्पादन निम्नलिखित कारणों से अनुकूल है।

1. इसे विभिन्न प्रकार के कृषि अवशेषों पर उगाया जा सकता है।
2. इसे विभिन्न प्रकार के तापमान पर उगाया जा सकता है।
3. इसकी उत्पादन क्षमता भोज्य पदार्थ के अनुपात में 100 प्रतिशत तक है।
4. इसमें बीमारियों व स्पर्धात्मक फफूँद द्वारा नुकसान की

संभावना कम है।

5. इसकी वृद्धि बहुत तेज है और उत्पादन विधि आसान है।
6. इसकी उत्पादन लागत काफी कम है।
7. यह ग्रामीण क्षेत्रों में आसानी से उगाई जा सकती हैं व बेरोजगारों के लिये रोजगार का साधन बन सकती है। इसकी खेती किसी भी स्तर पर की जा सकती है।
8. इसका संसाधन विशेषतया सुखाना बहुत आसान है।

पुआल पर उगने वाली खुम्ब (वॉल्वेरियेला)

इसकी सर्वाधिक खेती उड़ीसा में होती है। यह खुम्ब दक्षिणी-पूर्वी और पूर्वी एशियाई देशों में अभी भी सर्वाधिक लोकप्रिय है। यह एक उष्ण प्रजाति है। इस खुम्ब को 40° सेल्सियस तापमान तक उगाया जा सकता है। इसका स्वाद उत्तम है तथा जीवन चक्र छोटा है। इस खुम्ब की तुड़ाई बटन या अण्डाकार स्थिति में होनी चाहिए। इसे उगाने के लिये चावल की पराली में मुर्गी की खाद व बिनौले (रूई के बीज) के छिलके डालकर पास्चुरीकृत माध्यम में अच्छी पैदावार मिलती है। तुड़ाई के बाद जल्द खराब होना इसकी मुख्य समस्या है।

दूधिया खुम्ब (कैलोसाइबी इन्डिका)

यह उष्ण क्षेत्रों में उगाने के लिये खुम्ब की एक नई प्रजाति है। तमिलनाडू, आंध्रप्रदेश व कर्नाटक राज्यों में इस खुम्ब की खेती बहुत लोकप्रिय है। चावल की पराली पर उगने वाली खुम्ब के बाद यह दूसरी खुम्ब है जो उष्ण वातावरण में पैदा होती है। इसका रंग आकर्षक-दूधिया सफेद व रखने पर गुणवत्ता का बना रहना इसके मुख्य गुण है। यह कई प्रकार के कृषि व्यर्थ पदार्थों पर 25-35° सेल्सियस तापमान पर आसानी से उग जाती है। आयस्टर खुम्ब के समान इसकी फसल उगाने के लिये प्रयोग किये गये माध्यम (कृषि अवशेष) के अनुपात में अच्छी पैदावार मिलती है (80-100 प्रतिशत)। यह खुम्ब अचार व चटनी बनाने के लिये भी उत्तम है।

कनचपड़ा खुम्ब (ऑरिकुलेरिया)

बटन, शिटाके व आयस्टर खुम्ब के बाद विश्व में यह सबसे लोकप्रिय खुम्ब है। यह एक सम-शीतोष्ण खुम्ब है और विश्व की चीनी जनसंख्या में सर्वाधिक लोकप्रिय है। इसे पेट की खराबी में दवा के तौर पर भी उपयोग किया जा सकता है। यह लकड़ी के लट्ठों पर, लकड़ी के बुरादे पर रूई कारखानों की व्यर्थ पर तथा चावल अथवा गेहूं के भुसे पर आसानी से उगाई जा सकती है। इसे 90 प्रतिशत आर्द्रता से भी अधिक होने पर भी आसानी से उगाया जा सकता है।

औषधीय रिशी खुम्ब (गैनोडर्मा ल्यूसीडम)

यह विश्व की सर्वाधिक लोकप्रिय औषधीय खुम्ब है निदेशालय में

इस खुम्ब को नियंत्रित वातावरण में लकड़ी के बुरादे पर उगाने की तकनीक उपलब्ध है। इसके उत्पादन के लिये गर्म (30-35° सेल्सियस) व आर्द्र (90-95 प्रतिशत आर्द्रता) वातावरण अति उपयुक्त है।

खुम्ब उत्पादन व्यवसाय के फायदे

आज के युग की तीन समस्याएँ हैं: उत्तम भोजन, सेहत व वातावरण। खुम्ब की खेती इन तीनों का हल है। देश में खुम्ब उत्पादन को प्रोत्साहित करना चाहिए। खुम्ब उत्पादन एक घर के भीतर करने योग्य कृषि कार्य प्रणाली है और इसे अन्य फसलों के समान उपजाऊ भूमि की आवश्यकता नहीं होती। अतः यह छोटे किसानों व भूमिहीनों के लिए उपयुक्त व्यवसाय है। इसकी जैव परिवर्तन क्षमता

अधिक होती है और उगने के लिए प्रयोग किये जा रहे पदार्थ (कृषि अवशेष) के अनुपात में खुम्ब उत्पादन अच्छा मिलता है। खुम्ब उत्पादन के उपरान्त शेष बचे व्यर्थ जो स्पेंट कम्पोस्ट के नाम से जाना जाता है, को खाद में बदलने के बाद खेतों में प्रयोग किया जा सकता है। खुम्ब उत्पादन बेराजगारों के लिए रोजगार का एक अच्छा साधन है।

डॉ. दीपक सोम

असि. प्रोफेसर

माइक्रोबायलॉजी विभाग

प्रदूषण का संहार करो

आस-पास जो है गन्दगी
मुश्किल जीनी है जिन्दगी
होता जा रहा गन्दा जल
ध्वनि प्रदूषण ने मचाई हलचल।

वाहनो से उठता गन्दा धुँआ है
साँस लेने को न शुद्ध हवा है
आज जीवन खतरे में पड़ गया है
हृद से ज्यादा प्रदूषण बढ़ गया है।

प्रदूषण ने भंयकर हमला किया है
नए रोगों को जन्म दिया है
प्रदूषण हमारा दुश्मन है
इससे परेशान हर कोई जन है।

अब सलाह ये मान लो
प्रदूषण को पहचान लो
प्रदूषण को जीवन से दूर भगाना है
मेहनत करके धरती पर स्वर्ग लाना है।

प्रदूषण का मिलकर संहार कर डालो
ये दुश्मन है हमारा इसे मार डालो
फिर जीवन सुखी हो जाएगा
और संसार स्वर्ग हो जाएगा।

फरहीन प्रवीन

एम.एससी. (बायोटेक), प्रथम सेमेस्टर

श्रीमान कहते हैं मेरा भारत महान

कहीं रोज फाड़ा जाता है संविधान
कहीं लेखों का हो रहा है अपमान
कहीं हिन्दी बोलने पर है बंधन महान
कहीं निर्वासित पड़ा है राष्ट्रगान
कहीं बोला जाता है जिन्दाबाद पाकिस्तान
ऐसे में मुझे बता दो श्रीमान
कहाँ है? कहाँ है? कहाँ है? मेरा भारत महान।

तुलसी के प्रांत में भाषा विवाद है
टेगौर के घर में नक्सलवाद है
क्षिप्रा के किनारे मजहबी फसाद है
ऐसे में मुझे बता दो श्रीमान
कहाँ है? कहाँ है? कहाँ है? मेरा भारत महान।

मर्यादा डिस्को में तड़पती मिली
ओये-ओये करता मिला मनु की संतान
ऐसे में मुझे बता दो श्रीमान
कहाँ है? कहाँ है? कहाँ है? मेरा भारत महान।

नरेन्द्र सिंह राणा

बी.काम, प्रथम सेमेस्टर

फौज हिन्दुस्तान की

देश पर मस्तक चढ़ाती
फौज हिन्दुस्तान की,
हर समय में विजय पाती
फौज हिन्दुस्तान की।

दृढ़ इरादे अडिग साहस
शौर्य की इसकी कहानी,
मौत से आँखें लड़ाती
है यहाँ बढ़कर जवानी।

त्याग की गाथा सुनाती
फौज हिन्दुस्तान की
हर समय में विजय पाती
फौज हिन्दुस्तान की।

पर्वतों की चोटियाँ हो
रेत के मैदान हो,
नदी, जंगल, घाटियाँ हो
शहर हो, सुनसान हो।

हर दशा में मुस्कुराती
फौज हिन्दुस्तान की
हर समय में विजय पाती
फौज हिन्दुस्तान की।

घाव कितने सह चुकी है
छातियों पर वार के,
पर कभी लौटी नहीं है
दुश्मनों से हार के।

तिरंगा ऊँचा उठाती
फौज हिन्दुस्तान की
हर समय में विजय पाती
फौज हिन्दुस्तान की।

नम्रता इसकी विरासत
शान्त है, यह धीर है,
शान्ति की पूजक सही
कायर नहीं, यह वीर है।

विश्व को यह है बताती
फौज हिन्दुस्तान की,
हर समय में विजय पाती
फौज हिन्दुस्तान की।

प्रियंका चौहान

एम.ए. (इतिहास), प्रथम सेमेस्टर

गुरुवर

कभी न कभी भटकता है इंसान
कभी इस जहान तो कभी उस जहान
जो जीवन में प्रकाश दे सूर्य समान
वही कहलाते हमारे गुरु भगवान।

जीवन की विषमता में
भावों की जटिलता में
अद्भुत है वे इंसान
जिन्हें हम कहते गुरु भगवान।

माता-पिता, गुरु भगवान
ये सभी हैं गुरु रूप समान
अंधकार में प्रकाश समान
हमें दो आशीष हे गुरु भगवान।।

प्रवेश रावत

बी.एससी., द्वितीय सेमेस्टर

अंधकार

यह कैसी है विडम्बना हे इंसान।
क्यों नहीं समझता पक्षियों की उड़ान
क्यों नहीं सीखता तू इस प्रकृति से हे इंसान
अपने अंध पर क्यों है तुझे इतना अभिमान?

इतिहास ने बताया, भविष्य बताएगा
वर्तमान के कृत्य का तेरे, परिणाम भविष्य बताएगा
इस समय संभल कर चल हे इंसान
वरना तेरा अंध चढ़ जाएगा परवान।

ना कोई बचा है, ना कोई बचकर जाएगा
अपने कृत्यों का दंड यहीं भुगतकर जाएगा
कितना भी अभिमान क्यों न हो तुझे अपने बल पर
परंतु एक दिन तू भी इस कर्मभूमि में समा जाएगा।

प्रवेश रावत

बी.एससी., द्वितीय सेमेस्टर

जब पैसा बोलता है तो सत्य मौन हो जाता है?

“भाई साहब आप बस हमारा यह छोटा-सा काम कर दीजिए और बदले में अपना बैंक अकाउंट दे दीजिए, बाकी चिन्ता हमारी।”

इस वाक्य से तो सब परिचित होंगे ही। आज के इस युग में जहाँ समय कम काम ज्यादा, ईमानदारी कम बेईमानी ज्यादा एवं भाईचारा कम लालसा ज्यादा आम बात हो गई है, वहाँ मानवता और नैतिकता का आधार कोई आश्चर्यचकित करने वाला विषय नहीं है। एक समय में जहाँ भारत नैतिकता, ईमानदारी और सद्भाव के लिए विश्व प्रख्यात था वहाँ आज वही भारत सबसे ज्यादा जुर्म एवं कालाबाजारी करने वाले देशों की सूची में शीघ्रता से शामिल होता जा रहा है। ऐसे कई उदाहरण हैं जिसमें किसी ने शराब के नशे में किसी को मौत की नींद सुला दिया हो या फिर द्वेष में आकर किसी का खून कर दिया हो, परन्तु आज वह सब बिना किसी शर्म के सिर उठाए शान से समाज में घूम रहे हैं। एक शोध के अनुसार यह ज्यादातर वे लोग होते हैं जो धनी परिवार से संबंध रखते हैं। धनी परिवार यदि ‘पैसा’ – एक ऐसा अमृतराय जिसके लिए संसार प्यासा है। वकीलों एवं न्यायधीशों को किस तरह अपनी तरफ करता है यह ‘पैसा’ भली भाँति जानता है। ऐसा नहीं है कि पैसों के लालच से सिर्फ वकील ही घिरे हुए हैं। पैसों के बोलने से तो चिकित्सा रिपोर्ट, परीक्षा के अंक एवं चपरासी पंक्ति में खड़े लोगों का क्रम ही बदल देता है। प्रेमचन्द अपनी कहानी ‘नमक का दरोगा’ से भी यह संदेश पहुँचाना चाहते थे कि किस तरह पैसों का सत्य के ऊपर दबदबा बन गया है और भारत में नैतिक मूल्य किस तरह से बदलते जा रहे हैं। आज की स्थिति तो इतनी खराब हो गई है कि छोटे बच्चे को भी अध्यापकों/अभिभावकों द्वारा सत्य छुपाने के लिए 10-20 रूपयों का लालच दिया जाता है। यह परिस्थितियाँ जहाँ पैसा सत्य को खरीद सकता है, समाज ने शुरू की है और समाज ही इसे खत्म कर सकता है। समाज को अपनी सोच में बदलाव लाना होगा। उन्हें प्रण लेना होगा – “न पैसा लेंगे और देंगे, सदैव सत्य का साथ देंगे।” परन्तु जब तक यह स्थिति सुधरती नहीं तब तक यह कहना बिल्कुल उचित होगा कि –

“जब पैसा बोलता है तो सत्य मौन हो जाता है।”

दीक्षा रतूड़ी

बी.एससी. (कृषि) प्रथम वर्ष

My True Friend

I hadn't ever seen her still
she was the best friend of mine
whenever I was sad, she started to whine
One day she decided to solve all my
problems.
A voice came from within me and asked
"Why are you so sad? Tell me about your
problem".
I read out my heart to her and cried
"No one loves me nobody cares
whenever I try to reach my goal
unfortunately, I fall down the stairs.
I do good to everyone, but others always
make fun".
I never shed tears in front of anyone and I
feel that makes me strong, but people think I
am heartless and say 'you are wrong
whenever I feel like crying nobody is there
you only tell me, "Is that fair?" Then, I started

crying, she consoled me and said "Don't you
worry", my friend.

I am always there, to help you fulfill your
dreams and never let you go where everyone
wants to be the winner, so enlighten your
hopes and don't let them get dimmer.

Just like two and two makes four we both
will work out things together and one day
this world will be yours. I felt boosted up by
her words.

And suddenly I realized, I didn't even know
her good name.

She asked "Do you want to know by what
name should I be called?"

"I stay within you girl, I am no one else but
your own soul."

Shubhangini Tomar
B.Com., IInd Semester

श्रृंगारालय महिमा

वेश सुवेश किये रूपसी, ज्ञान विराग के व्यूह ढहे
 श्रृंगार अलौकिक अनुपम को, निरखि नयन दृश लाभ लहैं
 मंद पवन मकरंद विकट, खुल अलकें फिर चहु ओर बहैं
 अर्घ निमेष दमके दुति दामिनि, चंचल चपला ओट गहैं
 फरकत अगम अपार अधर, रतिनाथ सुमन सर बेध कहैं
 प्रेमातुर और सुखातुर होय, प्राण प्रयाण जनु कीन्ह चहैं
 यही सुखधाम सुहावन हेतु, जीव जरान्तक ताप सहे ?
 मुक्त अनंग के पाश जबै, घन मर्दक माया मोह दहैं।

मेजर प्रदीप सिंह
 विभागाध्यक्ष
 भू-विज्ञान विभाग

कैसा देश प्रेम

छद्म देश प्रेम को देखा
 एक दूजे से लड़ते देखा
 ये मेरा है ये तेरा है
 हाय हाय चिल्लाते देखा
 अधिकारों की बात करेंगे
 कर्तव्यों का ध्यान न धरेंगे
 हम व्यवस्थाएं बंद करेंगे
 हड़ताल मौलिक अधिकार है मेरा
 देश सम्पति नष्ट करेंगे
 देश को अपशब्द कहेंगे
 सेना के उच्च नायक को
 जो मुंह आया वही कहेंगे
 जिसके बल पर सोते घर में
 मन आया तो गुंडा कहेंगे
 अभिव्यक्ति की है आजादी
 जो मन आया वही कहेंगे
 आग लगी है बस्ती बस्ती

कौन बुझाने पहले पहुंचा
 न्याय गुहार लगाई फिर से
 देश को बंद करा के देखा
 और खेरातें पाई फिर से
 धर्मनिरपेक्ष पर करी लड़ाई
 कौन करे सम्मान किसी का
 मैं हिन्दू, तू है मुस्लिमान, सिख
 इसाईयों ने कहाँ है छोड़ा
 एक दूजे को आग लगाई
 मरने वाला मर गया
 न फिर वो सिख न ईसाई
 कैसी विडंबना है ये देखो
 कैसे देश बढ़े मेरे भाई।

डॉ. अतुल कुमार गुप्ता
 विभागाध्यक्ष
 रसायन विज्ञान विभाग

Biotechnology and Microbiology: Knowledge, Innovation and Entrepreneurship

The Department of Biotechnology and Microbiology were established under Self-finance scheme with the introduction of PG course in 2008 and UG course in 2009. As of now, the Department has 08 faculty members from diverse streams and specializations. In recent years, both the departments have made considerable progress in establishing research related facilities. In addition, training programmes have also been organized regularly for the students to promote scientific knowledge and further also help them to stride towards innovation and entrepreneurship.

RESEARCH AND DEVELOPMENT ACTIVITIES

• Plant Tissue Culture

The Department of Biotechnology has established Plant Tissue Culture laboratory and High-Tech green house facility jointly funded by State Biotechnology Program (SBP) and Shri Guru Ram Rai Education Mission (SGRREM). Propagation by tissue culture offers good commercial prospects in ornamental plants, vegetables and also fruit plants, where value of the products is high. As a result, there is a great demand for micropropagated superior quality plants in ornamental, horticultural, floricultural sectors of agriculture in India.

All the students of B.Sc. Biotechnology and M.Sc. Biotechnology are given training on Basic techniques in plant tissue culture. The students from other fields like Microbiology, Agriculture, Botany and pharmacology etc. are also encouraged to pay a visit to the lab and understand the basics of plant tissue culture. The students pursuing under graduate (UG) and post graduate (PG) courses at various institutions and universities within the state have also undergone

hands on training programme and projects/dissertations in the respective area under experienced faculties.

ENTREPRENEURSHIP

• Floriculture

The Department of Biotechnology has also initiated Floriculture project last year. Under this project, 5000 rose and gerbera cultivars (approximately) have been bought from Green Agrotech and are being cultivated under polyhouse (1200 sq. metres) and High-Tech green house (41.82 sq. metres) with the latest technology of greenhouse cultivation. The students of M.Sc. Biotechnology (IV semester) are also given training and technical know-how of the projects so that they could utilize this knowledge and apply it in future for setting up a small business initially and gradually build upon it.

• Mushroom cultivation

Two types of mushroom cultivation / farming viz., button and oyster mushrooms, are being carried out in the Department of Microbiology for the past 2 years. Mushroom cultivation, on a commercial scale, envisages huge profits with low capital investment. The UG and PG students of Biotechnology & Microbiology are encouraged to learn technical knowhow of this project so that this knowledge can be applied by them for commercial prospects. Recently, one month Mushroom cultivation training programme was organized by the Department of Microbiology from 01 Mar. to 31 Mar., 2017 and approximately 55 students participated in this training programme.

GATE/NET qualified candidates (2016-2017)

Biotechnology Department

1. Manish Tripathi (Batch 2009-11): CSIR-UGC NET, June 2016 (LS) (Rank 24) Qualified GATE (Mar 2016)
2. Vinod Singh Bisht (Batch 2011-13): ICAR NET, Aug 2016 (LS)
3. Zeba Kidwai (Batch 2012-14): CSIR-UGC NET, June 2016 (LS) (Rank 26)
4. Deepak Kumar (Batch 2013-15): CSIR-UGC NET, Dec 2016 (JRF) (Rank 73) Qualified GATE (Mar 2016)

5. Shadab Ahmad (Batch 2013-15): CSIR-UGC NET, Dec 2016 (JRF) (Rank 110)

Microbiology Department

1. Vivek Kumar Sharma Batch 2013-15): CSIR NET, June 2016 (JRF) (Rank 73), ARS NET Qualified with 68% (2016).

Dr. Kumud Saklani

Head

Deptt. of Biotech. & Microbiology

Department of Chemistry: A Glance

(2015-16 & 2016-17)

Apart from routine admissions, classes, practicals and research works, Chemistry Department did the following activities during the session 2015-16 & 2016-17.

- Department organized two educational tours for PG students. First tour had been a visit to AKUMS Pharmaceuticals, Haridwar. Students got benefitted from the tour and updated themselves with latest technologies used in Pharma industry. Second tour had been a visit to HESCO, Dehradun. In HESCO, students upgraded their knowledge viz, radio analytical methods and interacted with various scientists including Padamshree, Dr Anil Joshi.
- Two students were awarded Ph.D. degree by HNB Garhwal University, Srinager Garhwal.
- Department started a three months diploma course, "Physicochemical analysis of milk and water" for both PG and UG students

under the coordinatorship of Dr. H.V. Pant. Presently, PG students are getting benefited from the course.

- Ms Shefali Banga, M.Sc. IV semester student (2015-16), got summer research fellowship of National Academy of Sciences, Bangalore. She did research in the University of Madras, Chennai during summer vacation.
- Department has been regularly organizing 'National Science Day' celebration on 28 February since 2015.
- Presently, six students of M.Sc. IVth semester are getting training in FRI University under DST sponsored programme.

Dr. A K Gupta

Head

Deptt. of Chemistry

Department of English

Publication

A book on ***Short Stories and Memoirs of Women Writers of Uttarakhand*** translated from Hindi and edited by Dr. Madhu D Singh and Prof. Jaiwanti Dimri was published by the Womens Studies Centre in April 2017.

Programmes

English Literary Society, 'Meet the Author Programme'

- In the year 2015 the ELS (English Literary Society) had invited the author, Dr Raj Dhar (Vice Dean Academics in UTI, Dehradun) who enlightened the students with her talk on Creative Writing and shared a few excerpts from her novel ***From the Pages of my Diary***.
- For the year 2016, another promising writer from Himachal Pradesh University, Shimla, Dr Harshvardhan Khimta was invited to address the students which was an interesting and interactive session about his collection of short stories ***Maidens of Trafford House***. The author not only encouraged the students by appreciating their poetry recitals but also delivered some tips on Creative Writing.

Booknerds Show

Booknerds is an international book-club which promotes and encourages reading habits among the youth. On 3rd April, 2017 the Club hosted a talk with a young budding writer from Haryana, Jogi sharing his thoughts on his debut novel ***@dreams*** which was inspiring as well as interactive session with the UG and PG students of literature.

Tours

Jaipur Literay Festival (Jan 19th to 21st Jan 2017) Six students of MA English along with two faculties (Dr Jyoti Pandey and Mrs. Amandeep Kaur) had been sent to attend the Jaipur Literature Festival by the English Department

from 18th to 22nd Jan., 2017. The students witnessed face to face interaction with world famous writers like Gulzar, Anne Waldman, Devdutt Patnaik and Ravinder Singh to name a few.

Workshops

An awareness workshop on '**Anti-human Trafficking and Gender Sensitization**' was conducted by 'Empowering People Society' (NGO) on 25th Feb., 2017 in collaboration with the English Department.

Achievements of Students

Awards and Honours

Yachna Suryavanshi of MA English (Batch 2013-15) secured 1st position in HNB Garhwal University Srinagar.

Placements

1. Yachna Suryavanshi joined the English Department as Faculty for English Language and Communication.
2. Sugandh Singh (Batch 2014-16) is working as writer for the magazine ***Entrepreneur***, New Delhi.
3. Saloni Goyal (Batch 2014-16) is working as Practitioner for Concentrix, an MNC in Gurgaon.
4. Pankaj Singh Rawat (Batch 2016-18) has been selected in the Indian Army and presently is undergoing pre-commission training at Chennai.

Dr. Jyoti Pandey
Assistant Professor
Deptt. of English

Department of Botany

Achievements

- Dr. Arun Joshi, Assistant Professor, awarded "Young Scientist Award" - SERB (Department of Science & Technology, Government of India).
- Dr. Saurabh Guleri, Assistant Professor is supervising one student for the dissertation on Mycology allotted by Department of Botany & Microbiology, H.N.B. Garhwal University.
- Dr. (Mrs.) Poonam Sharma, Assistant Professor is supervising one M.Sc. student for her dissertation on Phycology under new criteria of ³7.5 SGPA score of the University (HNBGU).

Excursion Report

On 8 April, 2017 an excursion was organized for P.G. students to the Rajaji National Park and its adjoining areas. It was an endeavour to make them aware about biodiversity conservation under one of their core curriculum "Conservation Biology." The park is blessed with rich flora and fauna. Wildlife mainly includes elephants, leopards, tigers, herds of chitals and barasinghas etc. One fascinating fact of the park, that it is only habitat in Uttarakhand for barasinghas (swamp deers).

We (staff members and students) were inside it in the morning hours through Chilla range, Haridwar by means of jungle safaris. As we entered, we were lucky enough to see chitals (spotted deers) and barasinghas but unfortunately couldn't see the main attractions of the park which are elephants and tigers. We

also visited Jhimil Conservatory, famous for bird watching. It was a great experience to watch a rare bird 'Standard Eagle' there. Flora comprise of Rohini, Amaltas, Shisham, Sal, Palash etc. Simply, the park is a paradise for nature lovers and wildlife enthusiasts.

Special thanks to our Principal Sir and management for their kind permission and support which made it possible. We are also thankful to the Forest Department of Rajaji National Park for their kind cooperation during the visit.

Dr. Poonam Sharma
Assistant Professor
Deptt. of Botany

Department of Physics

Achievements of Students

- Seven M.Sc. students qualified CSIR NET/GATE/USET Exams. The details are as follows:
 - 1- Meetesh - USET (2015)
 - 2- Shivani Gupta - USET and GATE (2015)
 - 3- Anjali Nautiyal - USET and NET (2015)
 - 4- Chetan Singh - USET (2015)
 - 5- Aakansha Chauhan - GATE (2017)
 - 6- Sathis Verma - GATE (2017)
- Shivani Semwal, M.Sc. student, was selected for Research Programme in 2015 at Tata Institute for Fundamental Research, Hyderabad.
- Shivani Semwal, M.Sc student, was selected for research project in 2016 at Institute of Complex System (sponsored by IHRS Bio-soft), Germany
- Shakshi Patwal, M.Sc. student, was selected for Orientation Programme at Inter-University Accelerator Centre (An Autonomous centre of UGC, New Delhi) in 2016.
- Eight MSc students (Batch 2014-16) were selected for training programme at IRDE, (division of DRDO) Dehradun in 2016.
- Four M.Sc students (Batch 2015-17) were selected for training programme at IRDE (division of DRDO) Dehradun in 2017.
- Twelve M.Sc. students (Batch 2015-17) were selected for training programme in ATI-EPI, Department under Ministry of Labour, Niranjanpur Dehradun in 2017.
- Anjali Sati, MSc student, was selected for Orientation Programme at Inter university Accelerator centre (An Autonomous centre of UGC) New Delhi) in 2017.

Mr. Manoj Baluni
Head
Deptt. of Physics

शिक्षा से न करो इन्कार
शिक्षा बिना जीवन है बेकार

National Service Scheme (NSS)

The National Service Scheme (NSS) is an Indian government-sponsored public service programme conducted by the Department of Youth Affairs and Sports of the Government of India. Popularly known as NSS, the scheme was launched in Gandhi Ji's Centenary year 1969. It was aimed at developing student's personality through community service. To fulfill this objective various activities like awareness programmes related to environment education, health, AIDS, drug abuse etc. were organized by NSS units at S.G.R.R. (P.G.) College, Dehradun during the year 2016-17. This year our three NSS units (two boys and one girl) comprising 406 volunteers, (Unit A- 121; Unit B-164 & Unit C-121) have been registered under the guidance of NSS Programme Officers Dr. M.K. Purohit, Mr. Manoj Baloni and Dr. Poonam Sharma.

One day and five days camp were organized on 12th August (International Youth Day), 24th September (NSS Day), 01 October (The National Voluntary Blood Donation Day), 09 November (Uttarakhand Foundation Day) and 01 December (World's AIDS Day). Two special camps (07 days; Day/Night) have been successfully organized from 09 to 15 January 2017, at S.G.R.R. Public School Patel Nagar and 23 to 29 January 2017 at Community Health Centre, Mothrowala Dehradun in which 93 and 23 volunteers participated respectively. Some of the intellectuals were invited to interact with the volunteers such as Prof. H.C. Purohit, Head, School of Management Doon University, Dehradun (Cashless Economy), Dr. Kalyan Singh "Maitees" Environments (Afforestation), Dr. D.P. Uniyal, Senior Scientist Officer UCOST) Science & Technology) & Dr. S.P. Sati, Geologist, HNBGU Srinagar (Disaster Management). A Civil Defence Programme was also organized for the volunteers. They were trained in handling different rescue operations

by Shri Narendra Luthra and his team. Volunteers participated in various activities like cleaning campaign, sanitation, health, and digital financial transaction awareness rallies etc. were also organized in these areas. A Career Counseling and Creative Writing programme was also organized for the volunteers in the camp. The special camp was conducted with a spectacular performance given by the volunteers in the form of various cultural activities.

This year more than 100 volunteers donated blood in two Voluntary Blood Donation Camps in the College premises in the association with SGRRIMHS Blood Bank on 14th September & 01 October 2016 respectively. A one day workshop on "Anti Drug Addiction" "NASHA MUKTI" was organized on 08th March 2017 in collaboration with Chief Medical Officer Dehradun. Dr. Vinod Kumar, State Coordination of NSS was chief guest of the function along with keynote speakers Mr. Rishab Anand, Mr. L.M. Tiwari and Dr. Anuradha, NTPC Office of CMO. More than 300 NSS volunteers, NCC cadets, students & staff members participated in the workshop.

NSS has been doing great work since its inception. Every year the challenges are increasing manifold and NSS evolving itself as an effective tool to count these challenges. NSS is broadening its horizons to meet new and unforeseen problems and to help human society emerge out as victorious.

Dr. M.K. Purohit
Mr. Manoj Baloni
Dr. Poonam Sharma
NSS Incharge Officers

Annual Report of 3/29 Uttarakhand Battalion NCC

The NCC Sub- Unit of the college is a vibrant unit. It comprises 103 cadets of which 33 are SW (Girl) cadets and 70 SD (Boy) cadets. Besides conducting various assigned activities in a proper manner, the sub-unit also takes up various relevant activities through its own initiative. The major activities taken up by the unit during the training year 2016-17 are as under:

- **Selection for Zonal Shooting Camp:** It was held at Pithoragarh from 2nd to 11 June. Two SD (SUO Rajat Kabdal and Cadet Ashish Henry) attended this camp.
- **Combined Annual Training Camp (CATC):** held at Old MH, Dehradun from 14th to 23rd June, 2016. A total of 53 cadets (SW-19,SD-34) attended this camp where they participated in various competitions. Achievements of students at various competitions:

SW	SD
1. Drill Competition (1st)	1. Tug of War (1st)
2. Cultural (1st)	2. Line Area (IInd)
3. Line Area (IInd)	
4. Tug of War (IInd)	
5. CDT. NEHA was awarded as Best Firer.	

- Three SW cadets (SGT. Anjali Thapa, CDT. Sangeeta, CDT. Shamli Khattri) were anchors on the occasion of International Day of Yoga.
- North Zone Shooting Camp held at Punjab from 11th to 20th July. Cadet Ashish Henry was selected for this camp.
- Army Attachment Camp (ATC) held at 10th Garhwal Rifles from 10th to 24th July, 2016. 13 SD attended the camp. There our cadet

CHM Bipin Rawat was awarded the best weapon handling award by our ADG Maj. Gen. C. Mani.

- TSC Intergroup Competition camp held at Roorkee from 19th to 28th Aug., 2016. Total 9 cadets (6 SW and 3 SD) from the college participated in this camp.
- PRE TSC held at Roorkee from 9th to 18th Sept., 2016. SW (UO Arti Dabola, Cdt. Neha, Cdt. Neelam Rawat) were selected for this camp.
- Thal Sainik Camp (TSC) held at New Delhi, Cantt. Area from 19th to 30th Sept., 2016. Three SW (UO Shivam Pant, SGT. Pradeep Chauhan, Swetketu, Vaibhav Chauhan) and three SW (SGT. Anjali Thapa, Cdt. Neha Rana, Cdt. Pooja Rana) were selected for this camp.
- RCTC held at Pauri from 22nd to 26th Sept., 2016. One cadet, SUO Rajat Kabdal attended this camp.
- All India NCC Shooting Camp held at Asansol, West Bengal from 2 to 10th Sept., 2016. CDT. Ashish Henry was selected for this camp.
- Sports Camp held at New Delhi Cantt. Area from 15th to 26th Oct., 2016 (Volleyball) Cdt. Sangeeta was selected for this camp.
- National Integration Camp (NIC) held at Karnataka from 16th to 25th Oct., 2016. Ten SD Cadets attended the camp:
 1. Rahul Rohilla,
 2. Abhishek Chandra Lekhak
 3. Manish Negi
 4. Nirmal
 5. Manish Sajwan
 6. Pankaj Rana
 7. Sanuj Pal
 8. Dharendra

9. Mayank Sharma

10. Tejendra Rawat

- **Youth Exchange Programme (YEP) Sri Lanka** SUO Rajat Kabdal was selected for this camp from 24th Oct. to 14th Nov. 2016.
- Inter Group Competition (RDC) held at Old MH from 17th to 26th Oct., 2016. 3 SW and 4 SD attended this camp.
- PRE RDs held at Old MH Dehradun:
PRE RD 1 from 21st to 30th Nov., 2016 (2SW and 1 SD)
PRE RD 2 from 21st to 14th Dec., 2016 (2SW and 1 SD)
PRE RD 3 from 21st to 30th Dec., 2016 (1SW and 1 SD)
- **CATC** held at Old MH from 21 to 30th Dec., 2016. SW-3 and SD-2 attended this camp.
- **Republic Day Camp (RDC)** 2017 to 29th Jan. 2017. Cdt. Neelam Rawat and Cdt. Nitin Aswal were selected for this camp. In this camp Cadet Neelam Rawat represented Uttarakhand Directorate in Line area competition as well as she was also nominated for YEP competition.

- 8 SD from our institute were selected for State RD on 26th Jan.
- Two SW Cadets (UKSW/15/54290 CDT Nisha Dhyani and UKSW/15/54285 CDT Aditi Mall) have been selected for the coveted special NIC to be held at Lakshdweep during April' 2017.

Apart from the above camps our NCC Cadets also participated in many other social activities and awareness programs held at the College/Group/Directorate levels. Some of our SD cadets participated at State Independence day function on 15th August' 2016 at Parade Ground, Dehradun. An impressive parade was held at this year's Republic Day function of the college, where inspection of parade by the visiting VIP, and March Past was conducted by the NCC sub-unit. The cadets from the unit also performed escort and honour duties for various visiting eminent personalities at the college, during the year.

Major Pradip Singh
Incharge NCC, Head
Deptt. of Geology

इस देश के सबसे अच्छे दिमाग....
क्लास की लास्ट बेंच में मिल सकते हैं।

– ए.पी.जे.अब्दुल कलाम

Rover/Ranger Activities

In session 2015-16 and 2016-2017, the college Rovers and Rangers unit participated in the several programmes of Bharat Scout and Guide India. Number of Rover/Ranger qualified (6) Pravesh and Nipun eligibility. 03 Rovers got selected in the 'Rajyapal Puraskar' (Bipin Bangwal, Sunil Bijlwan and Kailash Joshi) and got eligibility to compete in the 'Rashtrapati Puraskar' in 2017-18 session.

- National Adventure Programme, 31 May-6 June 2015, Panchmarhi M.P.
Participated: 02 Rover (Sunil Bijlwan, Kailash Joshi).
- National Youth Meet - 1-5 June 2015, Panchmarhi
Participated: 02 Rover
- Rover Scout Leader Course - NTC, 1-7 June 2015, Panchmarhi
Dr M.S. Gusain successfully went through the RSL course.
- Provincial Rover / Rangers Samagama - 12-16 Feb 2016, Kashipur
6 Rover and 4 Rangers participated.
- International Adventure Programme - 2-Feb 2016, Panchmarhi
Participated: 02 Rover (Sunil Bijlwan, Bipin Bangwal)

- Rovers/Rangers Pravesh / Nipun Camp, Hardwar, 20-24 Aug 2016
4 Rovers and 4 Rangers participated.
- NAP-349, 12-18 June 2016, Panchmarhi
Participated: 02 Rover + 2 Rangers (Ujma Ansari, Komal, Prashant Verma, Sandeep Bisht)
- National Rover Ranger Meet - 26-30 Sept 2016, Rajasthan
Participated: 02 Rover (Bipin Bangwal, Sunil Bijlwan)
- Youth Week Club - 9-13 Jan 2017, Madhupur, Jharkhand
Participated: 02 Rover (Bipin Bangwal, Sunil Bijlwan)
- 19th International Adventure Programme - 2-8 Feb, 2017, Panchmarhi
Participated: 02 Rover/Ranger (Prashant Verma, Ujma Ansari)

Dr. M.S. Gusain
Incharge
Rover/Ranger

सिर्फ सपनों से कुछ नहीं होता...
सफलता प्रयासों से हासिल होती है।

Games & Sports Activity 2015-16

- In the year 2015-16, College Annual Sports meet was conducted in 18 Nov. 2015. The students of Arts, Science, Agriculture and Commerce faculty participated with a lot of enthusiasm. The students participated in High Jump, Long Jump, Discus throw, Shot-Put, Javelin throw, 100 mt, 200mt and other different races were also conducted.
- In the year 2015-16, different teams of the college participated in HN BGU Inter-Collegiate tournaments. The college teams participated in HN BGU Inter Collegiate Football (M), Kabadi (M) Badminton (M & W), Table Tennis (M & W), Cricket (M), Lawn Tennis (M), Boxing (W) Handball (M) and Volleyball (M) Tournament.
- The athletic team of the college participated in Inter collegiate Athletic meet which was held at Maharana Partap Stadium, Raipur, Dehradun. The college athletic team comprised 17 boys and 09 girls.
- The Basketball team of the college performed well in HN BGU Inter college basketball Tournament and was champion of the tournament held at Birla Campus, Srinager, Uttarakhand.
- The Hand ball team of the college performed very well in HN BGU Inter Collegiate Handball (M) tournament held at Paithani college, Paithani, Uttarakhand. The team emerged as runner-up in this tournament.
- The Cricket (M) team of the college participated in HN BGU Intercollegiate Cricket (M) tournament and emerged as runner-up in this tournaments.
- Women players actively participated in different sport activities in the college and first time the Women Boxing team participated in Boxing tournament held at D.A.V. PG College and won Gold medal in 70 kg events.

The following students of the college were selected in different teams of the University to participate in Inter - University level competitions.

Name of the player	Game	Name of the player	Game
Mohit Kumar	Athletics	Divyanshu Dehrari	Basketball (M)
Vijay Kumar Rikhari	Football (M)	Pankaj Rana	Basketball (M)
Vikram Rana	Football (M)	Pradeep Lasyar	Basketball (M)
Pradeep Negi	Football (M)	Mohit Jardari	Basketball (M)
Avneesh Payal	Football (M)	Shravani Sharma	Basketball (W)
Abhilash Kumar	Handball (M)	Krishna	Badminton (W)
Amit Bhandari	Handball (M)	Prateek Badola	Lawn Tennis (M)
Robin Kumar	Handball (M)	Karmveer Kaushal	Cricket (M)
Manisha Kothari	Table-Tennis (W)	Lalit Singh Panwar	Cricket (M)
Mukta Ashwal	Table-Tennis (W)		

Games & Sports Activity 2016-17

- The college organized Inter collegiate Football (M) tournament 2016-17 of HNBGU on college football ground from 5th Dec. 2016 to 7th Dec. 2016. 16 teams of different colleges of Garhwal University participated in this tournament.
- The college team performed very well and emerged as runner-up in this tournament.
- The college also organized Inter collegiate Football (W) tournament 2016-17 of HNBGU on college ground. Different teams of different colleges of Garhwal university participated in tournament held on 22-23 Jan 2017.
- The college Football (W) team for the first time participated in the HNBGU Inter collegiate tournament and entered into the semifinals.
- The college Basketball (M & W) team participated in the HNBGU Inter collegiate tournament and entered into the semifinals.
- Prateek Badola participated in Inter collegiate Lawn - Tennis tournament held at DAV PG College, D.Dun and won the Gold medal in the tournament.
- Kalpana Negi participated in Boxing Inter collegiate tournament of HNBGU university held at Maharana Partap Stadium, D.Dun and won Gold medal in 70kg events.
- The college team of Chess (M) for the first time participated in HNBGU Chess tournament and student, Rishab Semwal won Gold medal in the tournament.
- College athletic team participated in Intercollegiate Athletic tournament organized at Maharana Partap stadium, Dehradun and student, Sangeeta of BA-III won III place in 100 mts Hurdle. The college girls team (Relay) won III place in 4x100 events.
- College student Akanksha Rauthan won Gold medal in HNBGU tournament of Table Tennis at OIMT, Rishikesh, Dehradun.
- The college cricket team performed well in HNBGU Inter collegiate tournament held at Maharana Pratap Stadium, Raipur, Dehradun organized by BFIT, D.Dun. The team entered into the semifinal in the tournament.

The following students of the college were selected in different teams of the university to participated in Inter University level competitions.

Achievements of the players in 2016-17

Players Name	Games	Venue of North Zone
Prateek Badola	Lawn Tennis	DAV (PG) College, Dehradun
Sumit Rawat	Football (M)	Desh Bhagat University, Punjab
Sidharth Bhatt	Football (M)	Desh Bhagat University, Punjab
Mohit Jardari	Basketball	Desh Bhagat University, Punjab
Ankit Kumar	Basketball	Desh Bhagat University, Punjab
Shravani Sharma	Basketball (W)	DCR University, Haryana
Muskan Ghale	Football (W)	Kurukshetra University, Haryana
Ragzen Doloma	Football (W)	Kurukshetra University, Haryana
Sangeeta	Football (W)	Kurukshetra University, Haryana
Akanksha Rauthan	Table-Tennis	Chitkara University, H.P.
Karnveer Kuashal	Cricket (M)	CCS University, U.P.
Vishal Dangwal	Cricket (M)	CCS University, U.P.
Rishab Semwal	Chess	Rohtak University, Haryana

Dr. Harish Chandra
Incharge
Games & Sports

सांस्कृतिक शैक्षणिक रिपोर्ट

(वर्ष 2015-2016)

- 1) 14 अगस्त 2015 को महाविद्यालय में पुस्तकालय दिवस मनाया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय सुशासन केन्द्र मसूरी के सहायक पुस्तकालयध्यक्ष श्री सतीश बहुखण्डी मुख्य अतिथि थे उन्होंने इस अवसर पर छात्र-छात्राओं को पुस्तकालय के सन्दर्भ में जानकारी दी।
- 2) 26 सितम्बर 2015 को महाविद्यालय में आर.टी.आई. क्लब देहरादून द्वारा 'आर.टी.आई. के दस वर्ष अपेक्षाएं और उपलब्धियां' विषय पर एक वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें महाविद्यालय के अनेक छात्र/छात्राओं ने प्रतिभाग किया। जिसका परिणाम इस प्रकार रहा-
 1. गौरव, बी.ए. तृतीय वर्ष - प्रथम स्थान
 2. प्रियका धस्माना, एम.एससी. रसायन - द्वितीय स्थान
 3. शाइनी शाह, एम.एससी. बायोटेक - तृतीय स्थान
- 3) 2 अक्टूबर 2015 को गाँधी जयन्ती के अवसर पर महाविद्यालय में एक पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका शीर्षक था- 'स्वच्छता अभियान' जिसका परिणाम इस प्रकार रहा-
 1. शाइनी शाह, एम.एससी. बायोटेक - प्रथम स्थान
 2. दीपक, बी.ए. द्वितीय - द्वितीय स्थान
 3. सुमित कुमार, एम.एड. - तृतीय स्थान
- 4) 14 सितम्बर 2015 को हिन्दी दिवस पर आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में निम्न छात्र-छात्राओं ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया।
 1. सुमित सारस्वत, एम.एड. - प्रथम स्थान
 2. शीतल कण्डवाल, बी.ए. तृतीय - द्वितीय स्थान
 3. शुभम चमोला, एम.एस.सी. रसायन - तृतीय स्थान
 - 4.) कीर्ति चौहान, बी.ए. प्रथम सेम. - तृतीय स्थान
- 5) दिनांक 16-11-15 से 20-11-15 तक महाविद्यालय में सांस्कृतिक, शैक्षणिक सप्ताह का आयोजन किया गया। दिनांक 16-11-15 को पोस्टर प्रतियोगिता एवं रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। रंगोली प्रतियोगिता का विषय था- 'हमारे धार्मिक पर्व' - जिसका परिणाम इस प्रकार रहा-
 1. सुकीर्ति रावत, बी.कॉम द्वितीय वर्ष - प्रथम स्थान
 2. उर्वसी धारीवाल, बी.ए. तृतीय वर्ष - द्वितीय स्थान
 3. मोना कुमारी, एम.एससी. प्रथम रसायन - तृतीय स्थान
 पोस्टर प्रतियोगिता का विषय था- "नमामि गंगे", जिसका परिणाम इस प्रकार रहा-
 1. नवीन सूद, एम.एस.सी. बायोटेक - प्रथम स्थान
 2. दीपक गुप्ता, बी.ए. द्वितीय वर्ष - द्वितीय स्थान
 3. शैफाली बांगा, एम.एससी. रसायन - तृतीय स्थान
 दिनांक 18-11-15 को स्वरचित कविता पाठ कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसका परिणाम इस प्रकार रहा-
 1. विकास कुकरेती, बी.ए. तृतीय - प्रथम स्थान
 2. नरेश जोशी, एम.एससी. - द्वितीय स्थान

3. गौरव, बी.ए. तृतीय – तृतीय स्थान
4. उजमा अंसारी, बी.ए. द्वितीय – तृतीय स्थान

दिनांक 23-11-15 को वाद-विवाद व भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। वाद-विवाद प्रतियोगिता का विषय था-
“क्या राष्ट्रीय पुरस्कारों को लौटाकर विरोध करना उचित है,” जिसका परिणाम इस प्रकार रहा-

1. शैफाली बांगा, एम.एससी.-रसायन – प्रथम स्थान
2. वैष्णवी शर्मा, बी.एससी. कृषि – द्वितीय स्थान
3. प्रियका धस्माना, एम.एससी. रसायन – तृतीय स्थान

भाषण प्रतियोगिता का शीर्षक था- युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति” जिसका परिणाम इस प्रकार रहा-

1. प्रियका धस्माना, एम.एससी.-रसायन – प्रथम स्थान
2. सुकीर्ति रावत, बी.कॉम द्वितीय – द्वितीय स्थान
3. शुभम चमोला, एम.एससी. भौतिकी – तृतीय स्थान

दिनांक 19-11-15 को एकल गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसका परिणाम इस प्रकार रहा-

1. दिनेश चन्द भट्ट, बी.एससी. बायोटेक – प्रथम स्थान
2. आयशा प्रवीन, बी.एससी. प्रथम सेम. – द्वितीय स्थान
3. सीता सती, बी.कॉम द्वितीय – तृतीय स्थान
4. विनीता सजवान, एम.एससी.-रसायन – तृतीय स्थान

वर्ष 2015-2016 में महाविद्यालय के बाहर सांस्कृतिक, शैक्षणिक गतिविधियों में सफल प्रतियोगी इस प्रकार रहे:

- दिनांक 10-10-15 को आर.टी.आई. क्लब देहरादून द्वारा अन्तर महाविद्यालयीय वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका विषय था “आर.टी.आई. में दस वर्ष अपेक्षाएं और उपलब्धियां” जिसमें महाविद्यालय की छात्रा प्रियंका धस्माना (एम.एस.सी. रसायन) ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।
- दिनांक 28-12-2015 को डा0 पीताम्बर दत्त बड़थवाल हिन्दी अकादमी उत्तराखण्ड में आयोजित महाकवि सुमित्रानन्दन पंत की पुण्यतिथि पर आयोजित कविता पाठ में महाविद्यालय की छात्रा उजमा अंसारी (बी.ए. द्वितीय) कृतिमा गौड़ (बी.ए. द्वितीय) ने प्रतिभाग किया।
- दिनांक 24-2-16 से 25-2-16 को एच.एन.बी. गढ़वाल विश्वविद्यालय में आयोजित अन्तर महाविद्यालयीय सांस्कृतिक, शैक्षणिक प्रतियोगिता में महाविद्यालय ने ओवर ऑल द्वितीय स्थान प्राप्त किया। जिसमें सफल प्रतियोगिताओं का विवरण इस प्रकार है-

एंकाकी नाटक व सामूहिक लोक गीत में महाविद्यालय का प्रथम स्थान रहा, समूह गान व क्विज प्रतियोगिता में महाविद्यालय ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

वही एकल प्रतिस्पर्धाओं में सफल छात्र-छात्राएं-

1. उजमा अंसारी, द्वितीय – कार्टून मेकिंग में द्वितीय स्थान
2. राहुल राणा, बी.एससी. द्वितीय – पाश्चात्य संगीत में द्वितीय स्थान
3. मोहित बिष्ट, बी.एससी. द्वितीय – मिमिकरी में द्वितीय स्थान
4. दिनेश चन्द्र भट्ट, बी.एससी. तृतीय – शास्त्रीय गायन में तृतीय स्थान
5. अर्चना नेगी, बी.एससी. तृतीय – शास्त्रीय नृत्य में तृतीय स्थान
6. शैफाली बांगा, एम.एससी.- रसायन – पोस्टर मेकिंग में तृतीय स्थान

सांस्कृतिक शैक्षणिक रिपोर्ट

(वर्ष 2016-2017)

- 1) 14 अगस्त 2016 को स्वतंत्रता दिवस की पूर्व सन्ध्या पर महाविद्यालय परिसर में कैंडिल मार्च का आयोजन कर स्वतंत्रता आन्दोलन में शहीद हुए महान विभूतियों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।
- 2) 14 सितम्बर 2016 को हिन्दी दिवस के अवसर पर महाविद्यालय में एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका विषय था- “वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा की उपयोगिता और सार्थकता” जिसका परिणाम इस प्रकार रहा-
 - 1) अमित सिंह रावत, बी.ए. तृतीय - प्रथम स्थान
 - 2) अंजलि कुमारी, बी.ए. प्रथम सेमेस्टर द्वितीय स्थान
 - 3) तनुज प्रताप सिंह, एम.एस.डब्ल्यू प्रथम सेमेस्टर द्वितीय स्थान
 - 4) अवकाश रावत, एम.एससी. चतुर्थ सेमेस्टर तृतीय स्थान
 - 5) सिमरन, बी.ए. प्रथम सेमेस्टर तृतीय स्थान
- 3) 2 अक्टूबर 2016 गाँधी जयन्ती के अवसर पर स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत महाविद्यालय में एक पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका शीर्षक था- डेंगू से बचाव तथा सावधानियाँ। जिसका परिणाम इस प्रकार रहा-
 - 1) पूनम नौटियाल, एम.एससी. (जन्तु विज्ञान) तृतीय सेमेस्टर प्रथम स्थान
 - 2) अर्चना चमोली, बी.एससी. प्रथम सेमेस्टर द्वितीय स्थान
 - 3) तूली काम्बोज, एम.ए. (अंग्रेजी) प्रथम सेमेस्टर द्वितीय स्थान
 - 4) सिमरन, बी.ए. प्रथम सेमेस्टर तृतीय स्थान
 - 5) इशा बंसल, बी.एड. द्वितीय सेमेस्टर तृतीय स्थान
- 4) 13 सितम्बर 2016 को आर.टी.आई. क्लब देहरादून द्वारा आयोजित अन्तर-महाविद्यालय वाद-विवाद प्रतियोगिता में महाविद्यालय की बी.ए. प्रथम सेमेस्टर की छात्रा सिमरन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।
- 5) दिनांक 10.11.2016 से 16.11.2016 तक महाविद्यालय में सांस्कृतिक-शैक्षणिक सप्ताह का आयोजन किया गया।

दिनांक 10.11.2016 - रंगोली प्रतियोगिता परिणाम

 - 1 एकता सिंह, बी.ए. तृतीय वर्ष - प्रथम स्थान
 - 2 मोना कुमार, बी.कॉम. तृतीय सेमेस्टर द्वितीय स्थान
 - 3 लवली, बी.ए. प्रथम सेमेस्टर तृतीय स्थान

10.11.2016 - पोस्टर प्रतियोगिता का परिणाम

 - 1 शैफाली सिंह, बी.एससी. - प्रथम स्थान
 - 2 मेधा बुड़ाकोटी, बी.ए. तृतीय सेमेस्टर द्वितीय स्थान
 - 3 गुरजीत कौर, बी.एड. प्रथम सेमेस्टर तृतीय स्थान

11.11.2016 - काव्य-पाठ प्रतियोगिता का परिणाम

 - 1 शुभम चामोला, एम.एससी. भौतिकी तृतीय सेमेस्टर प्रथम स्थान
 - 2 तनुज प्रताप सिंह, एम.एस.डब्ल्यू. प्रथम सेमेस्टर द्वितीय स्थान
 - 3 उज्जमा अंसारी, बी.ए. तृतीय वर्ष - द्वितीय स्थान
 - 4 अंकित लखेड़ा, बी.एससी. तृतीय वर्ष - तृतीय स्थान

12.11.2016 - गायन प्रतियोगिता का परिणाम

 - 1 ध्रुव लाल, बी.ए. तृतीय सेमेस्टर प्रथम स्थान
 - 2 दिनेश चन्द्र भट्ट, एम.एससी. बायोटेक - प्रथम स्थान

- | | |
|-------------------------------------|---------------|
| 3 सुष्मिता, एम.एससी. तृतीय सेमेस्टर | द्वितीय स्थान |
| 4 दिपाणा, बी.एससी. तृतीय सेमेस्टर | तृतीय स्थान |

15.11.2016 – वाद विवाद प्रतियोगिता का परिणाम

शीर्षक: चीनी समाज का बहिष्कार उचित या अनुचित

- | | |
|---|---------------|
| 1 रागिनी बिन्जौला, बी.ए. तृतीय सेमेस्टर | प्रथम स्थान |
| 2 तनुज प्रताप सिंह, एम.एस.डब्ल्यू. प्रथम सेमेस्टर | द्वितीय स्थान |
| 3 दिपाणा प्रधान, बी.एससी. एग्री. तृतीय सेमेस्टर | तृतीय स्थान |

16.11.2016 – भाषण प्रतियोगिता का परिणाम

शीर्षक: डिजिटल इंडिया

- | | |
|---|---------------|
| 1 शुभम चमोला, एम.एससी. (भौतिकी) | प्रथम स्थान |
| 2 तनुज प्रताप सिंह, एम.एस.डब्ल्यू. (कृषि) | द्वितीय स्थान |
| 3 आकांक्षा बिष्ट, बी.एससी. (कृषि) | तृतीय स्थान |
| 4 आशुतोष जोशी, बी.एससी. प्रथम सेमेस्टर | तृतीय स्थान |

- 6) दिनांक 9, 10 फरवरी 2017 को सरदार भगवान सिंह (पी.जी.) इन्स्टीट्यूट बालावाला देहरादून में आयोजित राष्ट्रीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में एम.एस.डब्ल्यू. द्वितीय सेमेस्टर के छात्र तनुज प्रताप सिंह ने प्रथम व बी.एस.सी. – द्वितीय सेमेस्टर के छात्र आशुतोष जोशी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।
- 7) दिनांक 26 मार्च 2017 को महाराज सिंह कालेज सहारनपुर में आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता में महाविद्यालय के एम.एस.डब्ल्यू. – द्वितीय सेमेस्टर के छात्र तनुज प्रताप सिंह ने प्रथम व बी.एस.सी. द्वितीय सेमेस्टर के छात्र आशुतोष जोशी ने चतुर्थ स्थान (सान्त्वना पुरस्कार) प्राप्त किया।
- 8) एच.एन.वी. गढ़वाल विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अन्तर महाविद्यालय सांस्कृतिक शैक्षणिक प्रतियोगिता (दिनांक 28-02-17 से 03-02-17) में महाविद्यालय की टीम का विगत वर्षों के समान उत्कृष्ट प्रदर्शन रहा। महाविद्यालय की टीम ने समूह गान (दिनेश, आकाश, मोहित, सुष्मिता, वैशाली, आयशा, शौरिक, अर्चना) में द्वितीय स्थान व एंकाकी नाटक (शुभम, धीरज, दीपक, वैशाली, अर्चना, शालिनी, हिमानी, उजमा, मोहित) में तृतीय स्थान प्राप्त किया।
- एकल प्रतियोगिता में महाविद्यालय के छात्र शुभम चमोला (एम.एससी. भौतिकी) भाषण प्रतियोगिता में तथा तनुज प्रताप सिंह (एम.एस.डब्ल्यू. द्वितीय सेमेस्टर) ने वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया।
- दिनेश चन्द भट्ट प्रथम एम.एससी. (बायोटेक) ने सुगम संगीत में व मोहित बिष्ट (बी.एससी. तृतीय) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।
- शास्त्रीय संगीत में दिनेश चन्द भट्ट एम.एससी. (बायोटेक) के छात्र ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।
- 9) महाविद्यालय की वाद-विवाद टीम (तनुज प्रताप सिंह व आशुतोष जोशी) ने 24 मार्च 2017 को नेता जी सुभाष चन्द्र बोस इन्स्टीट्यूट आफ टेक्नोलोजी नई दिल्ली में प्रथम स्थान प्राप्त किया।
- 10) महाविद्यालय की छात्रा श्वेता सिंह (एस.एस.डब्ल्यू.) ने जाकिर हुसैन कालेज नई दिल्ली में आयोजित पेपर बैक डिजाइन प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।
- 11) महाविद्यालय के छात्र आशुतोष जोशी (बी.एससी. द्वितीय सेम.) ने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में आयोजित ऑल इण्डिया सर सैय्यद मैमोरियल त्रिभाषीय राष्ट्रीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में हिन्दी भाषा में सर्वश्रेष्ठ वक्ता का पुरस्कार प्राप्त किया।

डॉ० सुमंगल सिंह

प्रभारी

सांस्कृतिक-शैक्षणिक समिति

Union Week



Union Week



Games & Sports



Games & Sports



Games & Sports



Editorial Board



Various Activities



Bhoomi Pujan of New Building



Union Election



Botany Excursion



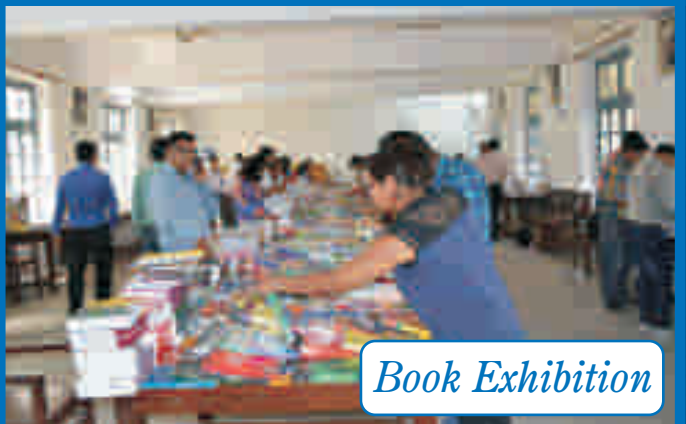
English Literary Society



Jaipur Literature Festival



Poster Exhibition



Book Exhibition

Various Activities



Campaigning



Counting of Student Election



Voting



Blood Donation



Blood Donation



Farewell Party



Sports Activity

Various Activities



Cultural Programme of HNB Garhwal University



Cultural Programme of HNB Garhwal University



Cultural Programme of SGR College



Job Fair



International Yoga Day



SGRR in NEWS



Student Union 2015-16



Vipin Ballabh Bhatt
President



Arnav Painuly
Vice President



Suryakant Sati
General Secretary



Sonali Goyal
Joint Secretary



Viashali Bhatt
Treasurer



Niharikha Dobhal
University Representative

Student Union 2016-17



Kuldeep Pant
President



Karan Singh Bisht
Vice President



Vipin Bhatt
General Secretary



Girish Bhatt
University Representative
President of Apex Body of
HNB Garhwal University



Deepali Gusain
Treasurer



Simran Tomar
UTR

श्रद्धांजलि



डॉ० सीमा सक्सेना

डॉ० सीमा सक्सेना (अध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग) के आकस्मिक निधन से न केवल हमारे महाविद्यालय की अपितु पूरे शिक्षा जगत की अपूरणीय क्षति हुई है। डॉ० सीमा सक्सेना ने अपनी विद्वता, कर्तव्यनिष्ठा के कारण अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। उनके आकस्मिक निधन पर श्री गुरु राम राय महाविद्यालय परिवार उन्हें भावभीनी श्रद्धा-सुमन अर्पित करता है।

-प्राचार्य

डॉ० सीमा सक्सेना (विभागाध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग, श्री गुरु राम राय महाविद्यालय) के आकस्मिक निधन से हमारे महाविद्यालय को अपूरणीय क्षति पहुँची है। डॉ० सक्सेना विषयमर्मज्ञ, कर्तव्यनिष्ठ एवं अनुशासित महिला थीं। बहुमुखी प्रतिभा की धनी इस व्यक्तित्व के असमय देहावसान से शिक्षा जगत को अपूरणीय क्षति हुई है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें एवं वनस्पति विभाग से सभी सदस्यों की तरफ से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ।

डॉ. पूनम शर्मा
वनस्पति विभाग

The sudden and untimely death of Dr Seema Saxena has left all of us shell shocked. Such is the tragic irony of life that when we were praying for her early recovery from cancer and were looking forward to seeing her amidst us once again, there came the shattering news that she was no more. Her death has really left a huge void in the college which probably can never be filled because she was one of the pillars of strength of the college. We would always remember her many sterling qualities : her wholehearted dedication to duty, her professional competence, her research acumen, her high standard of work ethics and her cheerful demeanour. Undoubtedly she was one of the finest teachers of the college and a role model for us all. Though the cruel hands of Death have snatched her from us, she would remain alive in our memories.

Dr Madhu D Singh
Associate Professor and Head, Dept of English



ब्रह्मलीन श्री महन्त
इन्दिरेशचरणदास जी महाराज
संस्थापक
(14न वम्बरा 919-10ज नू2 000)



पूज्य श्री महन्त
देवेन्द्रदास जी महाराज
संरक्षक एवं सचिव

Darbar

Shri Guru Ram Rai Sahib





SHRI GURU RAM RAI UNIVERSITY (S G R R U)

Patel Nagar, Dehradun, Uttarakhand

(Established under Shri Guru Ram Rai University Act No. 03 of 2017)

*Quest for
Excellence*

SGRRITS

B.B.A.	3 Yrs	B.Com (Hons.)	3 Yrs	M.Pharm.	2 Yrs
B.C.A.	3 Yrs	M.B.A.	2 Yrs	(Pharmaceutics, Pharmacology, Pharmacy Practice, Pharmaceutical Quality Assurance)	
B.Pharm.	4 Yrs	M.C.A.	3 Yrs	M.H.A. (Master in Hospital Admn.)	2 Yrs
B.Pharm. (Lateral Entry)	3 Yrs	M.C.A. (Lateral Entry)	2 Yrs	M.Sc. (Pharmaceutical Chemistry)	2 Yrs
B.Sc. (Biotechnology)	3 Yrs	Pharm.D. (Doctor of Pharmacy)	6 Yrs	M.Sc. (Biotechnology)	2 Yrs
B.Sc. (Agriculture)	4 Yrs	Pharm.D. (PB)	3 Yrs	M.Sc. (Microbiology)	2 Yrs
B.Sc. (Information Technology)	3 Yrs	(Doctor of Pharmacy - Post Baccalaureate)		M.Sc. (Botany)	2 Yrs

Prospectus available for sale at
SGRRITS, Patel Nagar, Dehradun.

Call for details: (0135) 2721763, 2726435, 2726457
Admissions Helpline: (0)7248889111, (0)7248889222,
Visit: www.sgrrits.org, Mail: info@sgrrits.org

SGRRIM&HS

MBBS (Including 1 yr internship)	5½ Yrs
MD/MS	3 Yrs
M.Sc. Medical Courses	3 Yrs
(Anatomy, Physiology, Microbiology, Biochemistry)	
M.Sc. Medical Courses (Lateral Entry)	2 Yrs
(Anatomy, Physiology, Microbiology, Biochemistry)	

MBBS & MD/MS entrance through NEET.
Prospectus for M.Sc. Courses available for
sale at SGRRIM&HS, Patel Nagar, Dehradun.

Call for details: (0135) 2522110, 2522307

Admissions Helpline (for M.Sc. Courses):

(0)8954890670, (0)9758580250, Visit: www.sgrrmc.com

SGRRIM&HS College of Nursing

B.Sc. (Nursing)	4 Yrs
Post Basic B.Sc. (Nursing)	2 Yrs
M.Sc. (Nursing)	2 Yrs
GNM (General Nursing & Midwifery)	3 Yrs
ANM (Auxiliary Nurse & Midwifery)	2 Yrs

Note: Eligibility Criteria
may change as per INC
norms. Admissions will
be on the basis of
Entrance Exam.

Prospectus available for sale at
SGRRIM&HS, Patel Nagar, Dehradun.

Call for details: (0135) 2522112, 2522313, 2522110

Admissions Helpline: (0)8899609054

Visit: www.sgrrnc.com, Mail: con@sgrrmc.com

SGRRIM&HS College of Paramedical Sciences

B.P.T. Physiotherapy	4½ Yrs	B.Sc. (Optometry)	3½ Yrs
B.M.R.I.T.	3½ Yrs	B.Sc. M.M. (Medical Microbiology)	3½ Yrs
(Medical Radiology and Imaging Technology)		M.Sc. M.L.T.	2 Yrs
B.M.L.T. (Medical Lab Technology)	3½ Yrs	M.P.T. (Sports, Neuro., Ortho., Paedia., Gynae., Cardio.)	2 Yrs

Prospectus available for sale at
SGRRIM&HS, Patel Nagar, Dehradun.

Call for details: (0135) 2522307

Admissions Helpline: (0)9758580250

Visit: www.sgrrpmc.com, Mail: sgrrpmahs@gmail.com

SGRR College of Humanities & Sciences

B.Sc. (PCM, CBZ)	3 Yrs.	Master of Social Work	2 Yrs.
B.Sc. (Agriculture)	4 Yrs.	(M.S.W.)	
B.Sc. (Horticulture)	4 Yrs.	M.Sc.	2 Yrs.
B.A. Hons.	3 Yrs.	(Microbiology, Biotechnology, Agronomy)	
(Mass Communication)		B.Ed.	2 Yrs.
B.A.	3 Yrs.	M.Ed.	2 Yrs.
B.Com.	3 Yrs.		

Prospectus available for sale at
SGRR College of Humanities &
Sciences, Pathri Bagh, Dehradun.

Call for details: (0135) 2624881

Admissions Helpline: (0)7830500089

(0)9411528492, Visit: www.sgrru.in

Visit us at: www.sgrru.in, Phone: (0135) 2726698, Mobile: (0)7248889111/222

श्री गुरु राम राय (पी.जी.) कॉलेज

पथरीबाग, देहरादून-248001, उत्तराखण्ड

फोन/फैक्स: 0135-2624881

वेबसाइट: www.sgrrcollege.com